

अंतरराष्ट्रीय
हिंदी पाठ्यक्रम

पाठ्य सामग्री
CONTENT BOOK

स्तर 03

हिंदी साहित्य एवं संस्कृति

Level 03 - Exploring Hindi Literature and Culture

सांपादक - संतोष चौधे

हिंदी सीखना और सिखाना है, विश्व में हिंदी की पहचान बनाना है।

Hindi Seekhna Aur Sikhana Hai, Vishwa Main Hindi ki Pehchan Banana Hai

विश्वरंग फाउंडेशन भारत एवं अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र, रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल (म.प्र.) भारत

पाठ्य सामग्री

स्तर – ३ : हिंदी साहित्य एवं संस्कृति

Exploring Hindi Literature and Culture



संपादक : संतोष चौबे



ISBN : 978-93-88846-26-4

स्तर – 3 : हिंदी साहित्य एवं संरक्षिति

संपादक : संतोष चौबे

लेखक : डॉ. गायत्री राजपूत एवं डॉ. मधुप्रिया

मार्गदर्शन : डॉ. अदिति चतुर्वेदी वत्स

समन्वय : डॉ. पुष्पा असिवाल, डॉ. जवाहर कर्नावट, संजय सिंह राठौर, दिनेश लोहानी एवं आशीष नेमा

अकादमिक सहयोग : डॉ. अरुण कुमार पाण्डेय

चित्र, तकनीकी सहयोग एवं कंपोसिंग : कार्तिक सराठे

आवरण : कमलेश ठाकुर एवं कार्तिक सराठे

संयोजन :

अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र, विश्वरंग फाउंडेशन

रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल

मूल्य : ₹ 895

प्रथम संस्करण 2025

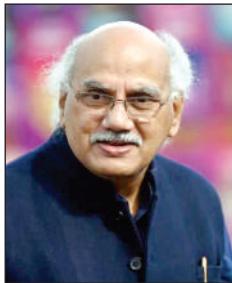
© आईसेक्ट पब्लिकेशन्स

प्रकाशक : आईसेक्ट पब्लिकेशन
ई-7/22, एस.बी.आई., अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016
ईमेल : aisectpublications@aisect-org
दूरभाष : 0755-4851056
मोबाईल : 8818883165

मुद्रक : आईसेक्ट पब्लिकेशन
प्लॉट नंबर-10, सेक्टर-सी, औद्योगिक क्षेत्र,
बगरोदा, भोपाल, मध्यप्रदेश - 462026

इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। प्रकाशक/लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनरुत्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

भूमिका



भाषा मात्र संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि साहित्य, संस्कृति और चिंतन की धरोहर को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाने वाली शक्ति है। इसी शक्ति का विस्तार है।

जहाँ विद्यार्थी अब केवल वाक्यों और दैनिक संवादों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि हिंदी भाषा की साहित्यिक गहराइयों और सांस्कृतिक विविधताओं से परिचित होता है।

यह पुस्तक 'स्तर- 3 हिंदी साहित्य एवं संस्कृति' 'पुस्तक-शृंखला' की चौथी पुस्तक है। इस पुस्तक में हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध रचनाकारों की कृतियाँ, व्याकरणिक तत्व जैसे- शब्दभेद, कारक, वचन, लिंग, विराम चिह्नों का प्रयोग, उपर्युक्त और प्रत्यय, संधि और समास एवं हिंदी में औपचारिक पत्र लेखन आदि सम्मिलित हैं। प्रत्येक अध्याय विद्यार्थी को हिंदी भाषा की बारीकियों से जोड़ता है, जहाँ वे साहित्यिक पाठों को पढ़ते, समझते और उनका मूल्यांकन करते हैं। साथ ही, भारतीय संस्कृति की परंपराएँ, जीवन-दृष्टि और सामाजिक मूल्यों का परिचय भी प्राप्त करते हैं।

यह स्तर विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से सोचने, विश्लेषण करने और साहित्य संस्कृति के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण विकसित करने में सक्षम बनाता है। हमें विश्वास है कि 'स्तर-3 रू हिंदी साहित्य एवं संस्कृति' का अध्ययन करते हुए विद्यार्थी न केवल हिंदी को गहराई से जानेंगे, बल्कि उसके सौंदर्य, परंपरा और व्यापकता को भी आत्मसात करेंगे।

संतोष चौबे

कुलाधिपति, रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय (भोपाल, मध्य प्रदेश)
निदेशक, 'विश्व रंग फाउंडेशन' (भारत)

अंतरराष्ट्रीय हिंदी पाठ्यक्रम पुस्तक शृंखला



प्रारंभिक – बुनियादी हिंदी

स्तर – 1 हिंदी में अभिव्यक्ति

स्तर – 2 हिंदी से संवाद

स्तर – 3 हिंदी साहित्य एवं संस्कृति

स्तर – 4 हिंदी का पल्लवन



अनुक्रम

क्रम	हिंदी	English	पृष्ठ क्र.
1	हम पंछी उन्मुक्त गगन के ‘सुमन’ – शिवमंगल सिंह	कविता	1-4
2	नादान दोस्त	कहानी	5-10
3	कबीर की साखियाँ		11-14
4	रहीम के दोहे		15-17
5	बस की यात्रा परसाई	व्यंग	18-19
6	क्या निराश हुआ जाए द्विवेदी	निबंध	22-21
7	तीन बुद्धिमान	लोक कथा	27-26
8	कुंभ मेला		33-32
9	अहिल्याबाई होलकर	जीवनी	38-37
10	संसार पुस्तक है	पत्र	42-15
11	गोल ध्यानचंद	संस्मरण	46-48
12	बिरजू महाराज से साक्षात्कार	साक्षात्कार	49-53
13	शब्द-भेद		54-58
14	कारक		59-61
15	हिंदी में काल		62-63
16	विराम चिह्न		64-66
17	हिंदी वाक्य		67-69
18	‘र’ के विभिन्न रूप		70-71
19	शब्द-विचार		72-76
20	उपसर्ग और प्रत्यय		77-78
21	संधि		79-82
22	समास		83-85
23	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द		86-88
24	मुहावरे और लोकोक्तियाँ		89-91
25	हिंदी में पत्र लेखन (आवेदन पत्र)		92-93

1

हम पंछी उन्मुक्त गगन के

- शिवमंगल सिंह 'सुमन' कविता

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे ।

अर्थ : इस कविता में कवि ने स्वतंत्रता का महत्व एक पंछी के माध्यम से बताने की कोशिश की है। वे कहते हैं कि पंछी का सामान्य गुण पंख फैलाकर खुले आसमान में उड़ने का है वे पिंजरे में बंद होकर प्रसन्न नहीं हो सकते। चाहे वह पिंजरा सोने का ही क्यों न हो अर्थात् वहाँ चाहे कितनी भी सुख-सुविधाएँ हों। पिंजरे की तीलियों से टकराकर उसके पंख टूट जाएँगे।

हम बहता जल पीने वाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबोरी
कनक-कटोरी की मैदा से,

अर्थ : पंछी के माध्यम से कवि कहते हैं कि हम तो नदी का बहता जल पीने वाले हैं। पिंजरे में आसानी से उपलब्ध दाना-पानी से ज्यादा नीम की कड़वी निबौरियाँ (नीम के फल) पसंद हैं। अर्थात् पंछी को आजाद रहकर भूखा-प्यासा रहना अधिक पसंद है न कि पिंजरे में रहकर किसी की गुलामी करना।

स्वर्ण-श्रृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले ।
ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नील गगन की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चाँच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने ।

अर्थ : कविता में पंछी कहता है कि सोने के पिंजरे में कैद होने पर हम अपनी स्वच्छंदता, उड़ान सब भूल गए हैं। अब तो पेड़ की ऊँची डालियों में मस्त होकर झूलने का सपना ही मात्र रह गया है। हमारी चाह थी कि हम उड़ते

हुए इस आसमान की सीमा नाप लेंगे और आसमान में बिखरे अनार के दाने रूपी तारों सूरज के समान अपनी चोंच से चुग लेंगे । अर्थात् उन तक पहुँच जाएँगे परंतु अब तो पिंजरे में कैद होकर यह तो मात्र कल्पना ही है ।

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी ।
नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं, तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो ।

अर्थ : पंछी कहता है कि आज्ञाद होकर हम उड़ते-उड़ते क्षितिज (जहाँ धरती और आसमान मिलते हुए प्रतीत होते हैं ।) से होड़ लगाना चाहते थे । इस दौड़ में या प्रतिस्पर्धा में या तो हम क्षितिज को पा लेते या हम थक कर चूर हो जाते या मर जाते ।

वे सभी से निवेदन करते हैं कि चाहे हमारे घोंसलों को तोड़ दो, कोई अन्य सुविधा भी मत दो पर यदि पंख दिए हैं तो हमें स्वतंत्र होकर उड़ने दो उसमें कोई बाधा न डालो ।

जिस प्रकार पंछी सभी सुखों को त्याग कर स्वतंत्र होकर उड़ना चाहता है उसी प्रकार हम सभी किसी तरह की गुलामी और कैद नहीं चाहते हम आज्ञाद होकर आगे बढ़ना चाहते हैं ।

शब्दार्थ:

शब्द	अर्थ
उन्मुक्त	खुला हुआ, स्वतंत्र
पिंजरबद्ध	पिंजरे में बंद
कनक-तीलियाँ	सोने की सलाखें
निबोरी	एक कड़वा फल
फुनगी	पेड़ की सबसे ऊँची टहनी
स्वर्ण-श्रृंखला	सोने की जंजीर
क्षितिज	आकाश और पृथ्वी का मिलन बिंदु
आकुल	बैचैन, व्याकुल

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए —

(क) कवि ने "कनक-कटोरी की मैदा" की तुलना "कटुक निबोरी" से क्यों की है?

(ख) 'नीड़ न दो' पंक्ति में कवि क्या कहना चाहता है?

(ग) इस कविता में पंछियों को प्रतीक बनाकर क्या संदेश दिया गया है?

सही विकल्प चुनिए —

- 'पिंजरबद्ध न गा पाएँगे' का सही अर्थ क्या है?
अ) पिंजरे में खाना नहीं खा पाएँगे
ब) पिंजरे में स्वतंत्रता का अनुभव नहीं होगा
स) पिंजरे में रहकर गा सकेंगे
द) पिंजरे में उड़ सकेंगे
- 'र्खण-शृंखला' किसका प्रतीक है?
अ) शृंगार का
ब) सत्ता का
स) बंधन का
द) साधन का
- 'कटुक निबोरी' किसकी प्रतीक है?
अ) मिठास की
ब) कृत्रिमता की
- 'नीड़ न दो' का सही अर्थ क्या है?
अ) पंख
ब) घोंसला
स) झूला
द) सपना
- 'हम बहता जल पीनेवाले' से तात्पर्य है
अ) पक्षी झरने का पानी पीते हैं
ब) स्वतंत्र जीव अपनी इच्छा से जीते हैं
स) पालतू जानवर भूखे रहते हैं
द) पिंजरे में पानी नहीं होता
स) कठिन परिस्थितियों की
द) सुंदरता की

नीचे दिए गए शब्दों के अर्थ लिखिए:

1. उन्मुक्त
2. पिंजरबद्ध
3. कनक
4. फुन्गी
5. आकुल
6. क्षितिज
7. शृंखला
8. विघ्न

रिक्त स्थान भरिए –

1. हम पंछी _____ गगन के।
2. _____ -श्रृंखला के बंधन में अपनी गति, उड़ान सब भूले।
3. लाल किरण-सी चोंच खोल, _____ चुगते तारक-अनार के दाने।
4. नीड़ न दो, चाहे _____ का आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

- (1) कवि को 'स्वर्ण-श्रृंखला' क्यों पसंद नहीं है?
- (2) कवि पक्षी बनकर कौन-कौन से स्वप्न देखता है?
- (3) 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' — इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
- (4) कविता में कवि ने कौन-कौन से प्रतीकों का प्रयोग किया है?

2

नादान दोस्त

-प्रेमचंद



केशव के घर में कार्निस के ऊपर एक चिड़िया ने अंडे दिए थे । केशव और उसकी बहन श्यामा दोनों बड़े ध्यान से चिड़ियों को वहाँ आते-जाते देखा करते । सबेरे दोनों आँखें मलते कार्निस के सामने पहुँच जाते और चिड़ा या चिड़िया दोनों को वहाँ बैठा पाते । उनको देखने में दोनों बच्चों को न मालूम क्या मजा मिलता, दूध और जलेबी की भी सुध न रहती थी । दोनों के दिल में तरह-तरह के सवाल उठते । अंडे कितने बड़े होंगे ? किस रंग के होंगे ? कितने होंगे ? क्या खाते होंगे ? उनमें बच्चे किस तरह निकल आएंगे ? बच्चों के पर कैसे निकलेंगे ? घोंसला कैसा है ? लेकिन इन बातों का जवाब देने वाला कोई नहीं । न अम्मा को घर के काम-धंधों से फुर्सत थी न बाबूजी को पढ़ने-लिखने से । दोनों बच्चे आपस ही में सवाल-जवाब करके अपने दिल को तसल्ली दे लिया करते थे ।

श्यामा कहती - क्यों भइया, बच्चे निकलकर फुर से उड़ जाएंगे ?

केशव विद्वानों जैसे गर्व से कहता नहीं री पगली, पहले पर निकलेंगे । बगैर परों के बेचारे कैसे उड़ेंगे ?

श्यामा - बच्चों को क्या खिलायेगी बेचारी ?

केशव इस पेचीदा सवाल का जवाब कुछ न दे सकता था ।

इस तरह तीन-चान दिन गुजर गए । दोनों बच्चों की जिज्ञासा दिन-दिन बढ़ती जाती थी । अंडों को देखने के लिए वह अधीर हो उठते थे । उन्होंने अनुमान लगाया कि अब बच्चे जरूर निकल आये होंगे । बच्चों के चारों का सवाल अब उनके सामने आ खड़ा हुआ । चिड़ियां बेचारी इतना दाना कहाँ पाएंगी कि सारे बच्चों का पेट भरे । गरीब बच्चे भूख के मारे चूं-चूं करके मर जाएंगे ।

इस मुसीबत का अंदाजा करके दोनों घबरा उठे । दोनों ने फैसला किया कि कार्निस पर थोड़ा-सा दाना रख दिया जाये ।

श्यामा खुश होकर बोली तब तो छिड़ियों को चारे के लिए कहीं उड़कर न जाना पड़ेगा न ?

केशव नहीं, तब क्यों जायेंगी ?

श्यामा - क्यों भझ्या, बच्चों को धूप न लगती होगी?

केशव का ध्यान इस तकलीफ की तरफ न गया था । बोला जरूर तकलीफ हो रही होगी । बेचारे प्यास के मारे तड़पते रहे होंगे । ऊपर छाया भी तो कोई नहीं ।

आखिर यही फैसला हुआ कि घोंसले के ऊपर कपड़े की छत बना देनी चाहिए । पानी की प्याली और थोड़े-से चावल रख देने का प्रस्ताव भी स्वीकृत हो गया ।

दोनों बच्चे बड़े चाव से काम करने लगे । श्यामा माँ की आँख बचाकर मटके से चावल निकाल लायी । केशव ने पत्थर की प्याली का तेल चुपके से जमीन पर गिरा दिया और खूब साफ करके उसमें पानी भरा ।

अब चाँदनी के लिए कपड़ा कहाँ से लाए? फिर ऊपर बगैर छिड़ियों के कपड़ा ठहरेगा कैसे और छिड़ियां खड़ी होंगी कैसे ?

केशव बड़ी देर तक इसी उधेड़-बुन में रहा । आखिरकार उसने यह मुश्किल भी हल कर दी ।

श्यामा से बोला- जाकर कूड़ा फेंकने वाली टोकरी उठा लाओ । अम्मांजी को मत दिखाना ।

श्यामा- वह तो बीच में फटी हुई है । उसमें से धूप न जाएगी?

केशव ने झुँझलाकर कहा तू टोकरी तो ला, मैं उसका सुराख बंद करने की कोई हिक्मत निकालूँगा ।

श्यामा दौड़कर टोकरी उठा लायी । केशव ने उसके सुराख में थोड़ा-सा कागज ठूंस दिया और तब टोकरी को एक टहनी से टिकाकर बोला देख ऐसे ही घोंसले पर उसकी आड़ दूँगा । तब कैसे धूप जाएगी? श्यामा ने दिल में सोचा, भझ्या कितने चालाक हैं ।

गर्मी के दिन थे । बाबूजी दफ्तर गए हुए थे । अम्मां दोनों बच्चों को कमरे में सुलाकर खुद सो गयी थीं । लेकिन बच्चों की आँखों में आज नींद कहाँ? अम्मांजी को बहकाने के लिए दोनों दम रोके आँखें बंद किए मौके का इंतजार कर रहे थे । ज्यों ही मालूम हुआ कि अम्मां जी अच्छी तरह सो गयीं, दोनों

उठे और बहुत धीरे से दरवाजे की सिटकनी खोलकर बाहर

आये । अंडों की हिफाजत करने की

लगीं । केशव कमरे में से एक स्टूल लेकिन जब उससे काम न चला, की चौकी लाकर स्टूल के नीचे डरते-डरते स्टूल पर चढ़ा । श्यामा से स्टूल पकड़े हुए थी । स्टूल को

बराबर न होने के कारण जिस तरफ ज्यादा दबाव पाता था, जरा-सा हिल जाता था । उस वक्त केशव को कितनी तकलीफ उठानी पड़ती थी, यह उसी का दिल जानता था । दोनों हाथों से कार्निस पकड़ लेता और श्यामा को दबी आवाज से डांटता - अच्छी तरह पकड़, वर्ना उतरकर बहुत मारँगा । मगर बेचारी श्यामा का दिल तो ऊपर कार्निस पर था । बार-बार उसका ध्यान उधर चला जाता और हाथ ढीले पड़ जाते ।



चुपके से निकल तैयारियां होने उठा लाया, तो नहाने रखी और दोनों हाथों चारों टांगें

केशव ने ज्यों ही कार्निस पर हाथ रक्खा, दोनों चिड़ियां उड़ गयीं। केशव ने देखा, कार्निस पर थोड़े-से तिनके बिछे हुए हैं, और उस पर तीन अंडे पड़े हैं। जैसे घोंसले उसने पेड़ों पर देखे थे, वैसा कोई घोंसला नहीं है। श्यामा ने नीचे से पूछा- कै बच्चे हैं भइया ?

केशव तीन अंडे हैं, अभी बच्चे नहीं निकले ।

श्यामा - जरा हमें दिखा दो भइया, कितने बड़े हैं?

केशव - दिखा दूँगा, पहले जरा चिथड़े ले आ, नीचे बिछा दूँ। बेचारे अंडे तिनकों पर पड़े हैं।

श्यामा दौड़कर अपनी पुरानी धोती फाड़कर एक टुकड़ा लायी। केशव ने झुककर कपड़ा ले लिया, उसके कई तह करके उसने एक गद्दी बनायी और उसे तिनकों पर बिछाकर तीनों अंडे उस पर धीरे से रख दिए।

श्यामा ने फिर कहा हमको भी दिखा दो भइया ।

केशव - दिखा दूँगा, पहले जरा वह टोकरी दे दो, ऊपर छाया कर दूँ।

श्यामा ने टोकरी नीचे से थमा दी और बोली अब तुम उत्तर आओ, मैं भी तो देखूँ।

केशव ने टोकरी को एक टहनी से टिकाकर कहा जा, दाना और पानी की प्याली ले आ, मैं उत्तर आऊँ तो दिखा दूँगा। श्यामा प्याली और चावल भी लायी। केशव ने टोकरी के नीचे दोनों चीजें रख दीं और आहिस्ता से उत्तर आया। श्यामा ने गिड़गिड़ा कर कहा अब हमको भी चढ़ा दो भइया !

केशव - तू गिर पड़ेगी ।

श्यामा - न गिरूंगी भइया, तुम नीचे से पकड़े रहना ।

केशव न भइया, कहीं तू गिर-गिरा पड़ी तो अम्मां जी मेरी चटनी ही कर डालेंगी। कहेंगी कि तूने ही चढ़ाया था। क्या करेगी देखकर। अब अंडे बड़े आराम से हैं। जब बच्चे निकलेंगे, तो उनको पालेंगे।

दोनों चिड़ियां बार-बार कार्निस पर आती थीं और बगैर बैठे ही उड़ जाती थीं। केशव ने सोचा, हम लोगों के डर के मारे नहीं बैठतीं। स्टूल उठाकर कमरे में रख आया, चौकी जहां की थी, वहाँ रख दी।

श्यामा ने आँखों में आंसू भरकर कहा तुमने मुझे नहीं दिखाया, मैं अम्मां जी से कह दूँगी।

केशव - अम्मां जी से कहेगी तो बहुत मारूँगा, कहे देता हूँ।

श्यामा - तो तुमने मुझे दिखाया क्यों नहीं ?

केशव और गिर पड़ती तो चार सर न हो जाते।

श्यामा - हो जाते, हो जाते। देख लेना मैं कह दूँगी।

इतने में कोठरी का दरवाजा खुला और माँ ने धूप से आँखों को बचाते हुए कहा तुम दोनों बाहर कब निकल आए ? मैंने कहा था न कि दोपहर को न निकलना? किसने किवाड़ खोला?

किवाड़ केशव ने खोला था, लेकिन श्यामा न माँ से यह बात नहीं कही। उसे डर लगा कि ऐया पिट जाएंगे। केशव दिल में कांप रहा था कि कहीं श्यामा कह न दे। अंडे न दिखाए थे, इससे अब उसको श्यामा पर विश्वास न था। श्यामा सिर्फ मुहब्बत के मारे चुप थी या इस कसूर में हिस्सेदार होने की वजह से, इसका फैसला नहीं किया जा सकता। शायद दोनों ही बातें थीं।



माँ ने दोनों को डांट-डपटकर फिर कमरे में बंद कर दिया और आप धीरे-धीरे उन्हें पंखा झलने लगी। अभी सिर्फ दो बजे थे। बाहर तेज लू चल रही थी। अब दोनों बच्चों को नींद आ गयी थी।

चार बजे यकायक श्यामा की नींद खुली। किवाड़ खुले हुए थे। वह दौड़ी हुई कार्निस के पास आयी और ऊपर की तरफ ताकने लगी। टोकरी का पता न था। संयोग से उसकी नजर नीचे गयी और वह उलटे पांव दौड़ती हुई कमरे में जाकर जोर से बोली भइया, अंडे तो नीचे पड़े हैं, बच्चे उड़ गए!

केशव घबराकर उठा और दौड़ा हुआ बाहर आया तो क्या देखता है कि तीनों अंडे नीचे टूटे पड़े हैं और उनसे कोई छूने की-सी चीज बाहर निकल आयी है। पानी की प्याली भी एक तरफ टूटी पड़ी है।

उसके चेहरे का रंग उड़ गया। सहमी हुई आँखों से जमीन की तरफ देखने लगा।

श्यामा ने पूछा- बच्चे कहाँ उड़ गए भइया ?

केशव ने करुण स्वर में कहा अंडे तो फूट गए।

'और बच्चे कहाँ गये?'

केशव तेरे सर में। देखती नहीं है अंडों से उजला-उजला पानी निकल आया है। वही दो-चार दिन में बच्चे बन जाते। माँ ने सोटी हाथ में लिए हुए पूछा तुम दोनों वहाँ धूप में क्या कर रहे हो ?

श्यामा ने कहा- अम्मा जी, चिड़िया के अंडे टूटे पड़े हैं।

माँ ने आकर टूटे हुए अंडों को देखा और गुरसे से बोलीं तुम लोगों ने अंडों को छुआ होगा ?

अब तो श्यामा को भइया पर जरा भी तरस न आया। उसी ने शायद अंडों को इस तरह रख दिया कि वह नीचे गिर पड़े। इसकी उसे सजा मिलनी चाहिए। बोली इन्होंने अंडों को छेड़ा था अम्मा जी।

माँ ने केशव से पूछा- क्यों रे?

केशव भीगी बिल्ली बना खड़ा रहा।

माँ - तू वहाँ पहुँचा कैसे ?

श्यामा - चौके पर स्टूल रखकर चढ़े अम्मांजी।

केशव - तू स्टूल थामे नहीं खड़ी थी?

श्यामा - तुम्हीं ने तो कहा था!

माँ - तू इतना बड़ा हुआ, तुझे अभी इतना भी नहीं मालूम कि छूने से चिड़ियों के अंडे गंदे हो जाते हैं। चिड़िया फिर इन्हें नहीं सेती।

श्यामा ने डरते-डरते पूछा तो क्या चिड़िया ने अंडे गिरा दिए हैं, अम्मा जी ?

माँ - और क्या करती। केशव के सिर इसका पाप पड़ेगा। हाय, हाय, जानें ले लीं दुष्ट ने!

केशव रोनी सूरत बनाकर बोला- मैंने तो सिर्फ अंडों को गद्दी पर रख दिया था, अम्मा जी!

माँ को हँसी आ गयी। मगर केशव को कई दिनों तक अपनी गलती पर अफसोस होता रहा। अंडों की हिफाजत करने के जोश में उसने उनका सत्यानाश कर डाला। इसे याद करके वह कभी-कभी रो पड़ता था। दोनों चिड़ियां वहाँ फिर न दिखाई दीं।

अभ्यास

1. रिक्त स्थान भरें

- केशव और श्यामा चिड़ियों को _____ पर आते-जाते देखा करते थे।
- बच्चों ने कार्निस पर चिड़ियों के लिए _____ और _____ रखा।
- केशव ने अंडों के नीचे _____ की गद्दी बनाई।
- चिड़ियों के घोंसले पर _____ से छाया की गई।
- चिड़िया ने अंडे गिरा दिए क्योंकि बच्चों ने उन्हें _____ था।

2. सही / गलत लिखो

- केशव ने चिड़ियों के लिए छत बनाने की योजना बनाई। ()
- श्यामा ने अंडों को टोकरी में रखा। ()
- बच्चों की मदद से चिड़िया खुश हुई और अंडों पर बैठ गई। ()
- चिड़ियों के अंडे टूटकर नीचे गिर गए। ()
- माँ ने केशव को डाँटा और बाद में हँसी भी। ()

3. बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1 चिड़िया ने अंडे कहाँ दिए थे?

- अ. पेड़ पर
ब. अलमारी में
स. कार्निस पर
द. घोंसले में

प्र.3 पानी रखने के लिए केशव ने क्या प्रयोग किया?

- अ. प्लास्टिक की बोतल
ब. स्टील का कटोरा
स. पत्थर की प्याली
द. मिट्टी का कुल्हड़

प्र.2 केशव ने अंडों के नीचे किस वस्त्र का ढुकड़ा रखा?

- अ. अपनी शर्ट
ब. पुरानी धोती
स. तकिया
द. तौलिया

प्र.4 अंडे क्यों टूट गए?

- अ. चिड़िया ने गिरा दिए
ब. श्यामा ने गिरा दिए
स. पानी गिर गया
द. अंडों को छूने से चिड़िया ने गिरा दिए

4. लघु उत्तर प्रश्न

1. केशव और श्यामा को चिड़िया और अंडों को देखकर कैसा लगता था?
2. बच्चों ने चिड़िया के अंडों की देखभाल के लिए क्या-क्या उपाय किए?

3. अंडे टूटने के बाद केशव की क्या प्रतिक्रिया थी?

4. माँ ने बच्चों को क्या समझाया?

5. दीर्घ उत्तर प्रश्न

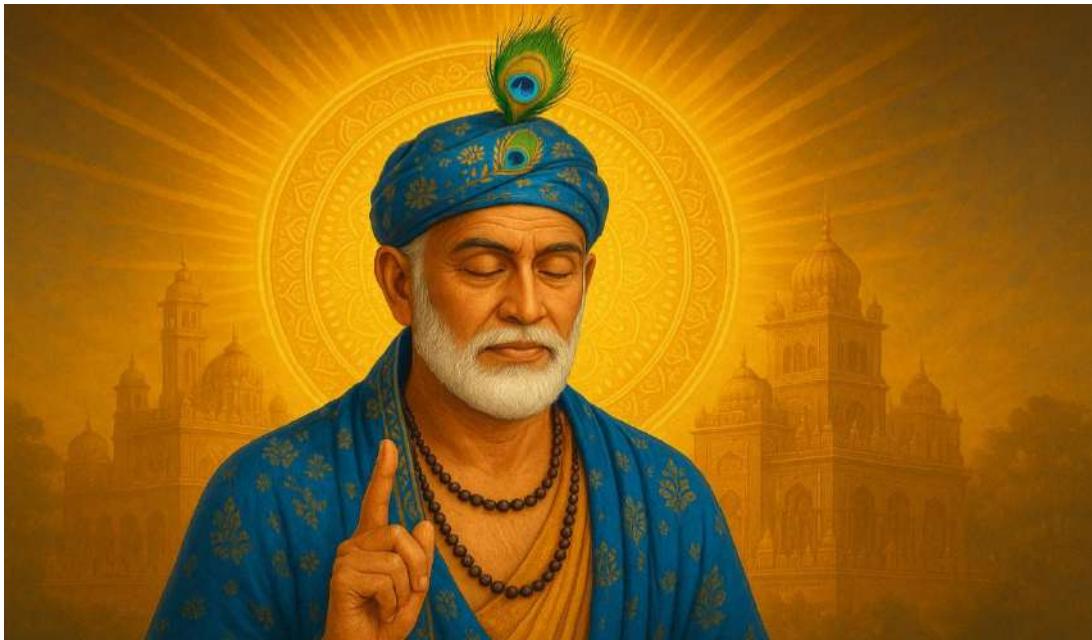
1. केशव और श्यामा की चिड़ियों के प्रति भावना को अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

2. इस कहानी से हमें क्या सीख मिलती है?

3. क्या बच्चों का प्रयास सही था? उन्होंने गलती क्यों की और उसका परिणाम क्या हुआ?

3

कबीर की साखियाँ



कबीर का जन्म 1398 में काशी हुआ माना जाता है। गुरु रामानंद के शिष्य कबीर ने 120 वर्ष की आयु पाई। अंतिम कुछ वर्ष मगहर में ही बिताए। कबीर का आविर्भाव ऐसे समय में हुआ था जब राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक क्रांतियाँ अपने चरम पर थीं। कबीर क्रांतदर्शी कवि थे। उनकी कविता में गहरी सामाजिक चेतना प्रकट होती है। उनकी कविता सहज ही मर्म को छू लेती है। एक ओर धर्म के बाह्याभंबरों पर उन्होंने गहरी और तीखी चोट की है तो दूसरी ओर आत्मा-परमात्मा के विरह-मिलन के भावपूर्ण गीत गाए हैं। कबीर शास्त्रीय ज्ञान की अपेक्षा अनुभव ज्ञान को अधिक महत्व देते थे। उनका विश्वास सत्संग में था और वे मानते थे कि ईश्वर एक है, वह निर्विकार है, अरूप है। कबीर की भाषा पूर्वी जनपद की भाषा थी। उन्होंने जनचेतना और जनभावनाओं को अपने सबद और साखियों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया।

कस्तूरी कुँडल बसै, मृग ढूँढे बन माहिँ
ऐसे घटि घटि राम हैं, दुनिया देखे नाहिँ॥

अर्थ: कबीरदास जी कहते हैं कि जैसे हिरण कस्तूरी की सुगंध को जंगल में खोजता फिरता है जबकि वह सुगंध उसी की नाभि में रहती है परंतु वह इस बात से बेखबर होता है, उसी प्रकार संसार के कण-कण में ईश्वर है लेकिन मनुष्य ईश्वर को बाहर देवालयों और तीर्थों में ढूँढ़ता है जबकि वह उसी के हृदय में रहता है। कबीर जी कहते हैं कि अगर ईश्वर को खोजना ही है तो अपने मन में खोजिए।

प्रेम ना बाड़ी उपजे, प्रेम ना हाट बिकाया।
राजा प्रजा जेहि रुचे, सीस देई लै जाय॥

अर्थ : प्रेम न तो बागों में उगता है और न बाजारों में बिकता है, राजा या प्रजा जिसे वह अच्छा लगे वह अपने आप को न्योछावर कर के प्राप्त कर लेता है।

माला फेरत जुग गया, मिटा ना मन का फेरा।
कर का मन का छाड़ि, के मन का मनका फेर॥

अर्थ : कबीरदास जी कहते हैं कि माला फेरते-फेरते युग बीत गया तब भी मन का कपट दूर नहीं हुआ है। हे मनुष्य ! हाथ का मनका छोड़ दे और अपने मन रूपी मनके को फेर, अर्थात् मन का सुधार कर ।

माया मुई न मन मुआ, मरि मरि गया शरीर।
आशा तृष्णा ना मुई, यों कह गये कबीर॥

अर्थ : कबीरदास जी कहते हैं कि मनुष्य का मन तथा उसमें घुसी हुई माया का नाश नहीं होता और उसकी आशा तथा इच्छाओं का भी अंत नहीं होता केवल दिखने वाला शरीर ही मरता है। यही कारण है कि मनुष्य दुःख रूपी समुद्र में सदा गोते खाता रहता है।

तिनका कबहुँ ना निंदिए, जो पायन तले होय।
कबहुँ उड़न आखन परै, पीर घनेरी होय॥

अर्थ : तिनका को भी छोटा नहीं समझना चाहिए चाहे वो आपके पाँव तले हीं क्यूँ न हो क्यूंकि यदि वह उड़कर आपकी आँखों में चला जाए तो बहुत तकलीफ देता है।

बोली एक अमोल है, जो कोइ बोलै जानि ।
हिये तराजू तौल के, तब मुख बाहर आनि ॥

अर्थ : जो व्यक्ति अच्छी वाणी बोलता है वही जानता है कि वाणी अनमोल रत्न है। इसके लिए हृदय रूपी तराजू में शब्दों को तोलकर ही मुख से बाहर आने दें।

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करे, आपहुँ शीतल होय ॥

अर्थ : कबीर कहते हैं कि हमें अपने मन का अहंकार छोड़कर ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाकहए जिससे हमारा अपना तन- मन भी शीति रहे और दसूरों को भी सुख प्राप्त हो।

निंदक नियरे राखिये, आँगन कुठी छवाय ।
बिन साबुन पानी बिना, निर्मल करे सुभाय ॥

इसमें कबीरदास जी कहते हैं कि जो हमारी निंदा करे, हमारे दोष बताए, उसे अपने पास रखना चाहिए। क्योंकि वह हमारे दोषों को बताकर बिना पानी और साबुन के ही हमारे हृदय को साफ कर देता है।

अध्यास

मिलान कीजिएः

साखी के अंश	सही अर्थ से मिलाइए
कस्तूरी कुँडल बसै	● सांसारिक सुख असली नहीं
प्रेम न बाड़ी उपजै	● महान लोग दूसरों के लिए जीते हैं
झूठे सुख को सुख कहे	● वाणी का मूल्य अनमोल है
वृक्ष कबहुँ न फल भखे	● प्रेम त्याग और समर्पण से प्राप्त होता है
बोली एक अमोल है	● आत्मा में ईश्वर का वास

शब्दावली

शब्द	अर्थ
कस्तूरी	एक सुगंधित पदार्थ, हिरण की नाभि में पाया जाता है
घटि-घटि	प्रत्येक शरीर, हर हृदय में
बाड़ी	बगीचा, खेत
हाट	बाज़ार
माया	भ्रम, सांसारिक मोह
आशा तृष्णा	झूँझाएँ और लालसाएँ
खलक	जीव-जंतु, प्राणी
परमारथ	परोपकार, दूसरों का भला
पारस	वह पत्थर जो लोहा छूते ही सोना बना दे
साधु	संत, तपस्वी, नेक इंसान
कुंभ	मिट्टी का घड़
मरघट	शमशान, जहाँ मृत्यु के बाद दाह-संस्कार होता है
तिनका	छोटा-सा सूखा घास का टुकड़ा
हिये	हृदय
चिट्ठी	चींटी
सक्कर	चीनी
निंदक	आलोचक
मुक्ताहल	मुक्त रहने वाले हंस

सही विकल्प चुनिएः

कबीर के अनुसार प्रेम कहाँ नहीं मिलता?

- अ) राजमहल में
- ब) बाजार में
- स) मंदिर में
- द) पुस्तक में

कबीर किसे घर मरघट जैसा कहते हैं?

- अ) साधु का घर
- ब) निर्धन का घर
- स) वह घर जहाँ साधना और हरि सेवा न हो
- द) राजा का महल

कबीर ने किसे 'पारस' के समान बताया है?

- अ) शत्रु
- ब) साधु
- स) राजा
- द) बालक

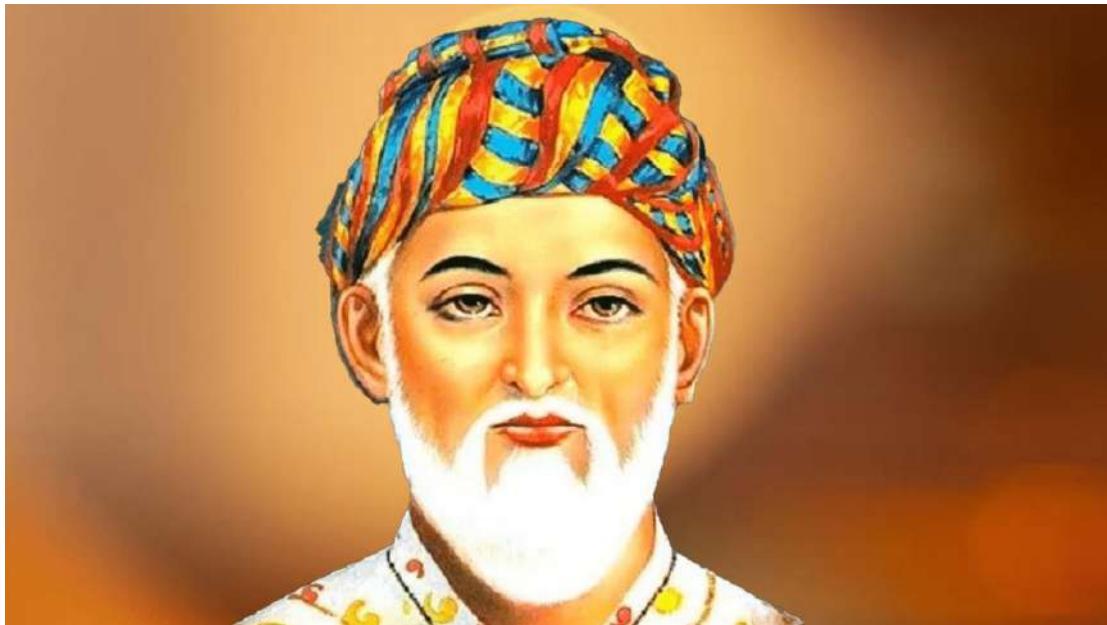
3. "ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय" — इस पंक्ति में 'आपा' खोने का क्या अर्थ है?

4. लघु उत्तर लिखिए (2-3 वाक्यों में):

- (क) कबीरदास जी ने प्रेम को इतना मूल्यवान क्यों बताया है?
- (ख) कबीर झूठे सुख को सुख क्यों नहीं मानते?

4

रहीम के दोहे



कहि 'रहीम ' संपति सगे , बनत बहुत बहु रीति ।
बिपति- कसौटी जे कसे , सोई सांचे मीत ॥

अर्थ : रहीम कहते हैं कि जैसे संपत्ति को प्राप्त करने के लिए बहुत प्रयत्न और रीति-रिवाजों का पालन करना पड़ता है, वैसे ही सगे-संबंधी भी बहुत कोशिशों से बनते हैं। परंतु कोई व्यक्ति तभी सच्चा मित्र कहलाता है जब वह मुसीबत के समय आपकी सहायता करे।

जाल परे जल जात बहि , तजि मीनन को मोह ।
'रहिमन ' मछरी नीर को तज न छाँड़ति छोह॥

अर्थ : जब मछलियों को पकड़ने के लिए जाल नदी में डाला जाता है, तब पानी मछलियों को छोड़कर बह जाता है। परंतु मछली पानी को नहीं भूलती और उसके बिना जीवित नहीं रह पाती। यह सच्चे प्रेम का प्रतीक है। सच्चा प्रेम कभी साथ नहीं छोड़ता, चाहे हालात जैसे भी हों।

तरुवर फल नहिं खात है , सरवर पियहि न पान ।
कहि रहीम पर काज हित , संपति सँचहि सुजान॥

अर्थ : जैसे पेड़ अपने फल स्वयं नहीं खाते और तालाब अपना पानी नहीं पीते, वैसे ही सज्जन व्यक्ति अपनी संपत्ति का उपयोग दूसरों की भलाई के लिए करते हैं। धन-संपत्ति का उपयोग परोपकार में होना चाहिए, तभी उसका मूल्य है।

थोथे बादर क्वार के , ज्यों 'रहीम' घहरात ।
धनी पुरुष निर्धन भये , करैं पाछिली बात ॥

अर्थ : अश्विन महीने के बादल गरजते हैं पर वर्षा नहीं करते। उसी प्रकार कुछ लोग धन जाने के बाद केवल पिछली बातें करते हैं, जिनका कोई लाभ नहीं होता। सही समय पर काम करना जरूरी है, वरना बाद में बातें व्यर्थ होती हैं।

धरती की सी रीत है , सीत घाम औं मेह ।
जैसी परे सो सहि रहै , त्यों रहीम यह देह॥

अर्थ : रहीम कहते हैं कि जैसे धरती सर्दी, गर्मी और वर्षा सभी कुछ सहती है, वैसे ही मानव शरीर भी हर सुख-दुख को सहने की शक्ति रखता है। हमें धैर्य और सहनशीलता रखनी चाहिए।

अर्थ : जीवन में आने वाली विपत्तियों को सहन करना ही मानव धर्म है।

शब्दावली

शब्द	अर्थ
सगे	रिश्तेदार
बिपति	मुसीबत
कसौटी	परख की घड़ी
मोह	प्रेम
छोह	ममता
सरवर	तालाब
सुजान	सज्जन
क्वार	अश्विन महीना
घहरात	गरजते हैं
देह	शरीर

अभ्यास प्रश्न

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः

- (क) रहीम के अनुसार सच्चा मित्र कौन होता है?
- (ख) मछली और पानी के प्रेम से रहीम जी क्या समझाना चाहते हैं?
- (ग) सज्जन व्यक्ति संपत्ति का उपयोग किस प्रकार करते हैं?
- (घ) 'थोथे बादर क्वार के' का तात्पर्य क्या है?
- (ङ) रहीम जी ने मनुष्य की सहनशीलता की तुलना किससे की है?

2. रिक्त स्थान भरें :

1. मुसीबत की _____ में जो साथ दे वही सच्चा मित्र होता है।
2. मछली _____ के बिना जीवित नहीं रह सकती।
3. सज्जन व्यक्ति अपनी _____ का प्रयोग परोपकार में करते हैं।
4. क्वार के महीने में _____ गरजते हैं, पर वर्षा नहीं करते।
5. मनुष्य की देह धरती की तरह _____ सहन कर सकती है।

3. सही विकल्प चुनिए :

'सांचे मीत' का अर्थ है –

- अ) झूठा मित्र
- ब) सच्चा मित्र
- स) नया मित्र
- द) पुराना मित्र

रहीम जी के अनुसार सच्चा प्रेम कौन करता है?

- अ) जल
- ब) मछली
- स) पक्षी
- द) बादल

'सुजान' शब्द का अर्थ क्या है?

- अ) धनी
- ब) मूर्ख
- स) सज्जन
- द) निर्धन

'घहरात' शब्द का अर्थ है –

- अ) गरजना
- ब) बरसना
- स) चमकना
- द) उड़ना

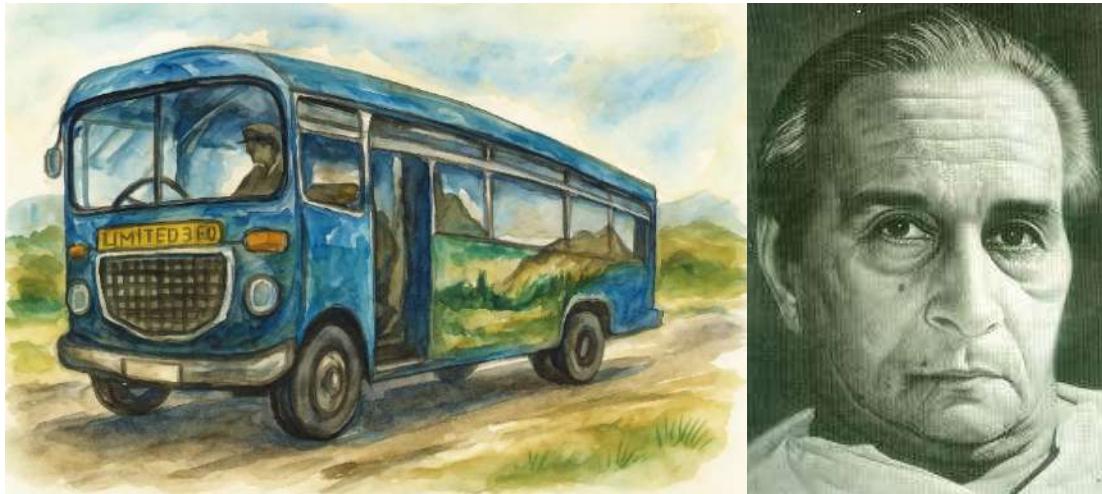
'सीत घाम औ मेह' का तात्पर्य है –

- अ) सुख-दुख के रंग
- ब) ऋतुओं की तुलना
- स) प्रकृति के दृश्य
- द) सर्दी, गर्मी और वर्षा

5

बस की यात्रा

-हरिशंकर परसाई



हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें। पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है जो जबलपुर की ट्रेन मिला देती है। सुबह घर पहुँच जाएँगे। हम में से दो को सुबह काम पर हाजिर होना था इसीलिए वापसी का यही रास्ता अपनाना ज़रूरी था। लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफ़र नहीं करते। क्या रास्ते में डाकू मिलते हैं? नहीं, बस डाकिन है।

बस को देखा तो श्रद्धा उमड़ पड़ी। खूब वयोवृद्ध थी। सदियों के अनुभव के निशान लिए हुए थी। लोग इसलिए इससे सफ़र नहीं करना चाहते कि वृद्धावस्था में इसे कष्ट होगा। यह बस पूजा के योग्य थी। उस पर सवार कैसे हुआ जा सकता है!

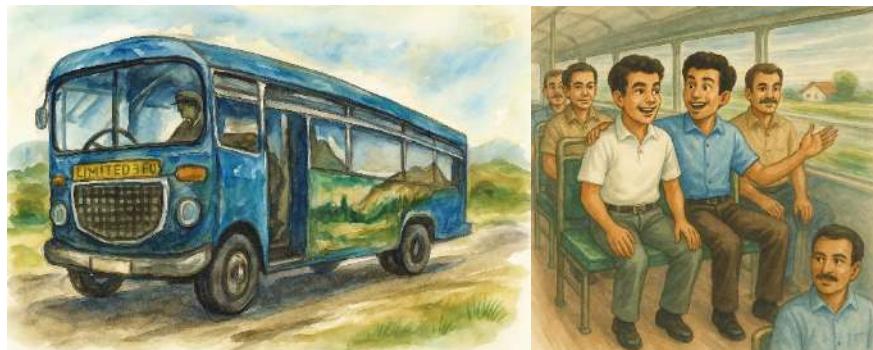
बस-कंपनी के एक हिस्सेदार भी उसी बस से जा रहे थे। हमने उनसे पूछा—"यह बस चलती भी है?" वह बोले—"चलती क्यों नहीं है जी! अभी चलेगी।" हमने कहा—"वही तो हम देखना चाहते हैं। अपने आप चलती है यह? हाँ जी, और कैसे चलेगी?"

गज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है।

हम आगा-पीछा करने लगे। डॉक्टर मित्र ने कहा—"डरो मत, चलो! बस अनुभवी है। नयी-नवेली बसों से ज्यादा विश्वसनीय है। हमें बेटों की तरह प्यार से गोद में लेकर चलेगी।"

हम बैठ गए। जो छोड़ने आए थे, वे इस तरह देख रहे थे जैसे अंतिम विदा दे रहे हैं। उनकी आँखें कह रही थीं—"आना-जाना तो लगा ही रहता है। आया है, सो जाएगा—राजा, रंक, फकीर। आदमी को कूच करने के लिए एक निमित्त चाहिए।"

इंजन सचमुच स्टार्ट हो गया । ऐसा, जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं । काँच बहुत कम बचे थे । जो बचे थे, उनसे हमें बचना था । हम फौरन खिड़की से दूर सरक गए । इंजन चल रहा था । हमें लग रहा था कि हमारी सीट के नीचे इंजन है ।



बस सचमुच चल पड़ी और हमें लगा कि यह गांधीजी के असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों के वक्त अवश्य जवान रही होगी । उसे ट्रेनिंग मिल चुकी थी । हर हिस्सा दूसरे से असहयोग कर रहा था । पूरी बस सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौर से गुजर रही थी । सीट का बॉडी से असहयोग चल रहा था । कभी लगता सीट बॉडी को छोड़कर आगे निकल गई है । कभी लगता कि सीट को छोड़कर बॉडी आगे भागी जा रही है । आठ-दस मील चलने पर सारे भेदभाव मिट गए । यह समझ में नहीं आता था कि सीट पर हम बैठे हैं या सीट हम पर बैठी है ।

एकाएक बस रुक गई । मालूम हुआ कि पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया है । ड्राइवर ने बाल्टी में पेट्रोल निकालकर उसे बगल में रखा और नली डालकर इंजन में भेजने लगा । अब मैं उम्मीद कर रहा था कि थोड़ी देर बाद बस-कंपनी के हिस्सेदार इंजन को निकालकर गोद में रख लेंगे और उसे नली से पेट्रोल पिलाएँगे, जैसे माँ बच्चे के मुँह में दूध की शीशी लगाती है ।

बस की रफ्तार अब पंद्रह-बीस मील हो गई थी । मुझे उसके किसी हिस्से पर भरोसा नहीं था । ब्रेक फेल हो सकता है, स्टीयरिंग टूट सकता है । प्रकृति के दृश्य बहुत लुभावने थे । दोनों तरफ हरे-भरे पेड़ थे जिन पर पक्षी बैठे थे । मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था । जो भी पेड़ आता, डर लगता कि इससे बस टकराएगी । वह निकल जाता तो दूसरे पेड़ का इंतजार करता । झील दिखती तो सोचता कि इसमें बस गोता लगा जाएगी ।

एकाएक फिर बस रुकी । ड्राइवर ने तरह-तरह की तरकीबें कीं पर वह चली नहीं । सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हो गया था, कंपनी के हिस्सेदार कह रहे थे—"बस तो फर्स्ट क्लास है जी! यह तो इत्तफाक की बात है ।"

क्षीण चाँदनी में वृक्षों की छाया के नीचे वह बस बड़ी दयनीय लग रही थी । लगता, जैसे कोई वृद्धा थककर बैठ गई हो । हमें ग्लानि हो रही थी कि बेचारी पर लदकर हम चले आ रहे हैं । अगर इसका प्राणांत हो गया तो इस बियाबान में हमें इसकी अंत्येष्टि करनी पड़ेगी ।

हिस्सेदार साहब ने इंजन खोला और कुछ सुधारा । बस आगे चली । उसकी चाल और कम हो गई थी ।

धीरे-धीरे वृद्धा की आँखों की ज्योति जाने लगी । चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी । आगे या पीछे से कोई गड़ी आती दिखती तो वह एकदम किनारे खड़ी हो जाती और कहती—"निकल जाओ, बेटी! अपनी तो वह उम्र ही नहीं रही ।"

एक पुलिया के ऊपर पहुँचे ही थे कि एक टायर फिस्स करके बैठ गया । वह बहुत जोर से हिलकर थम गई । अगर स्पीड में होती तो उछलकर नाले में गिर जाती । मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा । वह टायरों की हालत जानते हैं फिर भी जान हथेली पर लेकर इसी बस से सफ़र कर रहे हैं । उत्सर्ग की ऐसी भावना दुर्लभ है । सोचा, इस आदमी के साहस और बलिदान भावना का सही उपयोग नहीं हो रहा है । इसे तो किसी क्रांतिकारी आंदोलन का नेता होना चाहिए । अगर बस नाले में गिर पड़ती और हम सब मर जाते तो देवता बाँहें पसारे उसका इंतजार करते । कहते—"वह महान आदमी आ रहा है जिसने एक टायर के लिए प्राण दे दिए । मर गया, पर टायर नहीं बदला ।"

दूसरा घिसा टायर लगाकर बस फिर चली । अब हमने वक्त पर पन्ना पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी । पन्ना कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी । पन्ना क्या, कहीं भी, कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी । लगता था, जिंदगी इसी बस में गुजारनी है और इससे सीधे उस लोक को प्रयाण कर जाना है । इस पृथ्वी पर उसकी कोई मंजिल नहीं है । हमारी बेताबी, तनाव खत्म हो गए । हम बड़े इत्मीनान से घर की तरह बैठ गए । चिंता जाती रही । हँसी-मँज़ाक चालू हो गया ।

शब्दावली

शब्द	अर्थ
वयोवृद्ध	बहुत वृद्ध, बूढ़ा
श्रद्धा	आस्था, विश्वास
निमित्त	कारण, बहाना
इंजन स्टार्ट होना	इंजन का चल पड़ना
असहयोग आंदोलन	गाँधी जी का चलाया गया एक प्रसिद्ध आंदोलन
सविनय अवज्ञा आंदोलन	कानून को शांतिपूर्वक न मानने वाला आंदोलन
बॉडी	यहाँ: बस की मुख्य ढाँचा
त्रुटि	कमी, दोष
तरकीब	उपाय, युक्ति
ग्लानि	पछतावा, लज्जा
अंत्येष्टि	अंतिम संस्कार
उत्सर्ग	त्याग, बलिदान
मंजिल	गंतव्य स्थान, पहुँचने की जगह
प्रयाण	प्रस्थान, चल देना

अभ्यास प्रश्न

सही विकल्प चुनिए

1. लेखक और उनके मित्र किस समय की बस से यात्रा कर रहे थे?
 - अ) सुबह 8 बजे
 - ब) दोपहर 12 बजे
 - स) शाम 4 बजे
 - द) रात 10 बजे
2. बस को लेखक ने किस रूप में देखा?
 - अ) नई और चमचमाती
 - ब) शक्तिशाली और भरोसेमंद
 - स) वयोवृद्ध और अनुभव वाली
 - द) लक्जरी बस
3. इंजन के साथ क्या समस्या आई?
 - अ) इंजन फट गया
 - ब) इंजन बंद हो गया
 - स) पेट्रोल टंकी में छेद हो गया
 - द) इंजन चोरी हो गया
4. लेखक ने किस दृश्य को दुश्मन के रूप में देखा?
 - अ) नाले
 - ब) पेड़
 - स) झील
 - द) चाँद

रिक्त स्थान भरें

1. लेखक ने बस को ____ के योग्य समझा।
2. सफर के दौरान लेखक को ____ में विश्वास नहीं था।
3. एक टायर ____ कर बैठ गया।
4. बस से उतरने की आशा छोड़ लेखक ने उसे ही ____ मान लिया।

सत्य / असत्य लिखिए

1. बस में एयर कंडीशनर और नए टायर लगे थे।
2. बस में बैठते समय लेखक और उनके मित्र घबरा रहे थे।
3. बस के मालिक ने इंजन गोद में लेकर उसे नली से पेट्रोल पिलाया।

6

क्या निराश हुआ जाए

-हजारीप्रसाद द्विवेदी (निबंध)

मेरा मन कभी-कभी बैठ जाता है । समाचार पत्रों में ठगी, डैकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं । आरोप-प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है, देश में कोई ईमानदार आदमी ही नहीं रह गया है । हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है । जो जितने ही ऊँचे पद पर हैं उनमें उतने ही अधिक दोष दिखाए जाते हैं ।

एक बहुत बड़े आदमी ने मुझसे एक बार कहा था कि इस समय सुखी वही है जो कुछ नहीं करता । जो कुछ भी करेगा उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे । उसके सारे गुण भुला दिए जाएँगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाने लगेगा । दोष किसमें नहीं होते? यही कारण है कि हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम या बिलकुल ही नहीं । स्थिति अगर ऐसी है तो निश्चय ही चिंता का विषय है ।

क्या यही भारतवर्ष है जिसका सपना तिलक और गाँधी ने देखा था? रवींद्रनाथ ठाकुर और मदनमोहन मालवीय का महान संस्कृति-सभ्य भारतवर्ष किस अतीत के गहर में डूब गया? आर्य और द्रविड़, हिंदू और मुसलमान, यूरोपीय और भारतीय आदर्शों की मिलन-भूमि 'मानव महा-समुद्र' क्या सूख ही गया? मेरा मन कहता है ऐसा हो नहीं सकता । हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा ।

यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोज़गार करने वाले फल-फूल रहे हैं । ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सचाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है । ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है ।

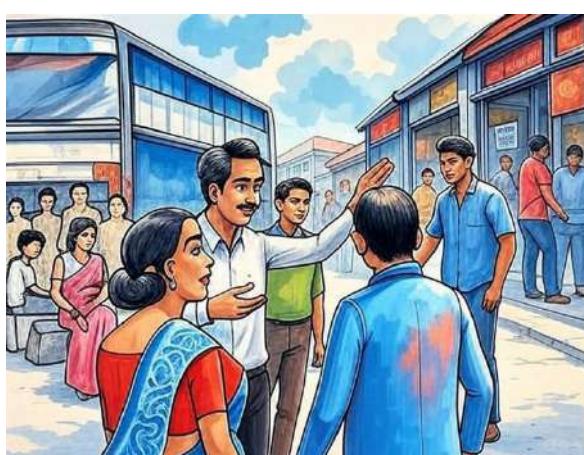


भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया है, उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक गुण स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विचार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत बुरा आचरण है। भारतवर्ष ने कभी भी उन्हें उचित नहीं माना, उन्हें सदा संयम के बंधन से बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है। परंतु भूख की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बीमार के लिए दवा की उपेक्षा नहीं की जा सकती, गुमराह को ठीक रास्ते पर ले जाने के उपायों की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

हुआ यह है कि इस देश के कोटि-कोटि दरिद्रजनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए ऐसे अनेक कायदे-कानून बनाए गए हैं जो कृषि, उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति को अधिक उन्नत और सुचारू बनाने के लक्ष्य से प्रेरित हैं, परंतु जिन लोगों को इन कार्यों में लगाना है, उनका मन सब समय पवित्र नहीं होता। प्रायः वे ही लक्ष्य को भूल जाते हैं और अपनी ही सुख-सुविधा की ओर ज्यादा ध्यान देने लगते हैं।

भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि जो लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

इस बात के पर्याप्त प्रमाण खोजे जा सकते हैं कि समाज के ऊपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा हो, भीतर-भीतर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज़ है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सचाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं लेकिन नष्ट नहीं हुए हैं। आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को ग़लत समझता है, दूसरे को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। हर आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में इस बात का अनुभव करता है। समाचार पत्रों में जो भ्रष्टाचार के प्रति इतना आक्रोश है, वह यही साबित करता है कि हम ऐसी चीज़ों को ग़लत समझते हैं, और समाज में उन तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं जो ग़लत तरीके से धन या मान संग्रह करते हैं।



दोषों का पर्दाफ़ाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई यह मालूम होती है कि किसी के आचरण के ग़लत पक्ष को उद्घाटित करके उसमें रस लिया जाता है और दोषोद्घाटन को एकमात्र कर्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई में उतना ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है। सैकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं जिन्हें उजागर करने से लोक-चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है।

एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए ग़लती से मैंने दस के बजाए सौ रुपए का नोट दिया और मैं जल्दी-जल्दी ग़ाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेकंड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपए रख दिए और बोला, यह बहुत ग़लती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा। उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया।

कैसे कहूँ कि दुनिया से सचाई और ईमानदारी लुप्त हो गई है, वैसी अनेक अवांछित घटनाएँ भी हुई हैं, परंतु यह एक घटना ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है।

एक बार मैं बस में यात्रा कर रहा था। मेरे साथ मेरी पत्नी और तीन बच्चे भी थे। बस में कुछ खराबी थी, रुक-रुककर चलती थी। गंतव्य से कोई आठ किलोमीटर पहले ही एक निर्जन सुनसान स्थान में बस ने जवाब दे दिया। रात के कोई दस बजे होंगे। बस में यात्री घबरा गए। कंडक्टर उत्तर गया और एक साइकिल लेकर चलता बना। लोगों को संदेह हो गया कि हमें धोखा दिया जा रहा है।

बस में बैठे लोगों ने तरह-तरह की बातें शुरू कर दीं। किसी ने कहा, यहाँ डकेती होती है, दो दिन पहले इसी तरह एक बस को लूटा गया था। परिवार सहित अकेला मैं ही था। बच्चे पानी-पानी चिल्ला रहे थे। पानी का कहीं ठिकाना न था। ऊपर से आदमियों का उर समा गया था।

कुछ नौजवानों ने ड्राइवर को पकड़कर मारने-पीटने का हिसाब बनाया। ड्राइवर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। लोगों ने उसे पकड़ लिया। वह बड़े कातर ढंग से मेरी ओर देखने लगा और बोला, हम लोग बस का कोई उपाय कर रहे हैं, बचाइए, ये लोग मारेंगे। उर तो मेरे मन में था पर उसकी कातर मुद्रा देखकर मैंने यात्रियों को समझाया कि मारना ठीक नहीं है। परंतु यात्री इतने घबरा गए कि मेरी बात सुनने को तैयार नहीं हुए। कहने लगे, इसकी बातों में मत आइए, धोखा दे रहा है। कंडक्टर को पहले ही डाकुओं के यहाँ भेज दिया है।

मैं भी बहुत भयभीत था पर ड्राइवर को किसी तरह मार-पीट से बचाया। डेढ़-दो घंटे बीत गए। मेरे बच्चे भोजन और पानी के लिए व्याकुल थे। मेरी और पत्नी की हालत बुरी थी। लोगों ने ड्राइवर को मारा तो नहीं पर उसे बस से उतारकर एक जगह धेरकर रखा। कोई भी दुर्घटना होती है तो पहले ड्राइवर को समाप्त कर देना उन्हें उचित जान पड़ा। मेरे गिड़गिड़ाने का कोई विशेष असर नहीं पड़ा। इसी समय क्या देखता हूँ कि एक खाली बस चली आ रही है और उस पर हमारा बस कंडक्टर भी बैठा हुआ है। उसने आते ही कहा, अड़डे से नई बस लाया हूँ, इस बस पर बैठिए। वह बस चलाने लायक नहीं है। फिर मेरे पास एक लोटा में पानी और थोड़ा दूध लेकर आया और बोला, पंडित जी! बच्चों का रोना मुझसे देखा नहीं गया। वहीं दूध मिल गया, थोड़ा लेता आया। यात्रियों में फिर जान आई। सबने उसे धन्यवाद दिया। ड्राइवर से माफ़ी माँगी और बारह बजे से पहले ही सब लोग बस अड़डे पहुँच गए।

कैसे कहूँ कि मनुष्यता एकदम समाप्त हो गई! कैसे कहूँ कि लोगों में दया-माया रह ही नहीं गई! जीवन में जाने कितनी ऐसी घटनाएँ हुई हैं जिन्हें मैं भूल नहीं सकता।

ठगा भी गया हूँ, धोखा भी खाया है, परंतु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज़ मिलती है। केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखो, जिनमें धोखा खाया है तो जीवन कष्टकर हो जाएगा, परंतु ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण सहायता की है, निराश मन को ढाढ़स दिया है और हिम्मत बँधाई है। कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना गीत में भगवान से प्रार्थना की थी कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ।



मनुष्य की बनाई विधियाँ गलत नतीजे तक पहुँच रही हैं तो इन्हें बदलना होगा । वस्तुतः आए दिन इन्हें बदला ही जा रहा है, लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है । महान भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहगी। मेरे मन! निराश होने की ज़रूरत नहीं है ।

स्रोत :

पुस्तक : वसंत (भाग-3) (पृष्ठ 25) **रचनाकार :** हजारी प्रसाद **द्विवेदी प्रकाशन :** एन.सी. ई.आर.टी **संस्करण :** 2022

शब्दावली

शब्द	अर्थ
ठगी	धोखा देकर धन या वस्तु हड्प लेना
आरोप-प्रत्यारोप	एक-दूसरे पर दोष मढ़ना
संदेह	शक, विश्वास की कमी
निरीह	असहाय, कमज़ोर
फरेब	छल-कपट
आस्था	विश्वास, श्रद्धा
संयम	नियंत्रण, अनुशासन
गहर	अंधकारमय स्थान
त्रुटि	गलती, कमी
धर्मभीरु	धर्म से डरने वाला
प्रतिष्ठा	सम्मान, सामाजिक स्थान
दोषोद्धाटन	किसी की गलती या कमी को उजागर करना
गरिमा	गंभीरता, आत्मसम्मान
हवाइयाँ उड़ना	चेहरा डर या घबराहट से पीला पड़ जाना
कातर	दयनीय, दया उत्पन्न करने वाला
गिड़गिड़ाना	करुणा पूर्वक प्रार्थना करना
ढाढ़स देना	हिम्मत बँधाना
निराशा	उम्मीद खो देना
भीरु	डरा हुआ ।

अभ्यास प्रश्न

1. रिक्त स्थान भरें :

1. समाचार पत्रों में ठगी, डैक्टी, चोरी _____ और भ्रष्टाचार की खबरें रहती हैं।
2. लेखक का मन कहता है कि मनुष्यता एकदम _____ नहीं हो सकती।
3. भारतवर्ष ने भौतिक वस्तुओं से अधिक _____ गुणों को महत्व दिया है।
4. मनुष्य की बनाई विधियाँ अगर गलत नतीजों तक पहुँच रही हैं तो उन्हें _____ होगा।

2. सही विकल्प चुनिएः

लेखक किस बात से चिंतित हैं?

- अ) देश में अधिक शिक्षा हो रही है
ब) सभी लोग खुश हैं
स) ईमानदारी और नैतिकता की कमी दिखाई दे रही है
द) भारतवर्ष बहुत अमीर हो गया है

लेखक के अनुसार धर्म और कानून में क्या अंतर है?

- अ) दोनों एक जैसे हैं
ब) कानून को धोखा दिया जा सकता है, धर्म को नहीं
स) धर्म कमजोर है
द) कानून सबसे बड़ा है

लेखक के अनुसार भारतवर्ष ने किसे चरम और परम माना है?

- अ) धन-संपत्ति
ब) विज्ञान
स) मनुष्य के भीतर के महान गुण
द) पश्चिमी सभ्यता

7

तीन बुद्धिमान

-लोक कथा

एक समय की बात है कि एक निर्धन व्यक्ति के तीन बेटे थे। वह प्रायः अपने बेटों से कहता- "मेरे बेटो ! हमारे पास न तो रुपया-पैसा है और न ही सोना-चाँदी। इसलिए तुम्हें एक दूसरे प्रकार का धन संचित करना चाहिए- हर वस्तु और स्थिति को पूर्णतः समझने और जानने का प्रयास करो। कुछ भी तुम्हारी दृष्टि से न बच पाए। रुपये-पैसे के स्थान पर तुम्हारे पास पैनी दृष्टि होगी और सोने-चाँदी के स्थान पर तीव्र बुद्धि होगी। ऐसा धन संचित कर लेने पर तुम्हें कभी किसी प्रकार की कमी न रहेगी और तुम दूसरों की तुलना में उन्नीस नहीं रहोगे।"

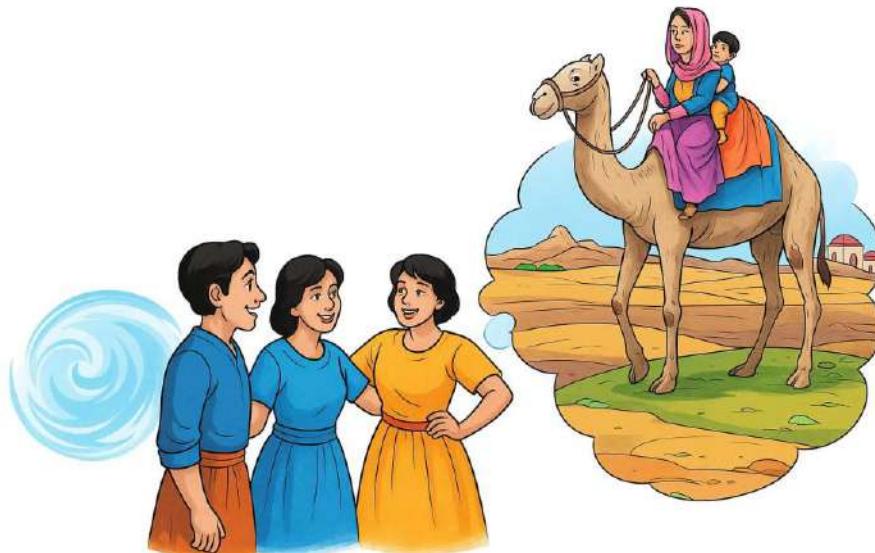


समय बीता और कुछ समय पश्चात् पिता चल बसे। बेटे मिलकर बैठे, उन्होंने सारी स्थिति पर विचार किया और फिर बोले- "हमारे लिए यहाँ कुछ भी तो करने को नहीं। आओ, फिरकर जगत देखें। आवश्यकता होने पर हम चरवाहों या खेत में श्रमिकों का काम कर लेंगे। हम कहीं भी क्यों न हों, भूखे नहीं मरेंगे।"

अंततः वे तैयार होकर यात्रा पर चल दिए।

उन्होंने सुनसान-वीरान घाटियाँ पार की और ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों को पार किया। इस तरह वे लगातार चालीस दिनों तक चलते रहे। उनके पास जितना खाने-पीने का सामान था, अब तक समाप्त हो गया था। वे थककर चूर हो गए थे और उनके पैरों में छाले पड़ गए थे किंतु सड़क थी कि समाप्त होने को नहीं आ रही थी। वे आराम करने के लिए रुके और पुनः आगे चल दिए। अंत में उन्हें अपने सामने वृक्ष और मकान दिखाई दिए- वे एक बड़े नगर के पास पहुँच गए थे। तीनों भाई बहुत प्रसन्न हुए और शीघ्रता से पग बढ़ाने लगे।

जब वे नगर के बिलकुल निकट पहुँच गए तो सबसे बड़ा भाई अचानक रुका, उसने धरती पर दृष्टि डाली और बोला- "थोड़ी ही देर पहले यहाँ से एक बहुत बड़ा ऊँट गया है।"



वे थोड़ा और आगे गए तो मझला भाई रुका और सड़क के दोनों ओर देखकर बोला-

"संभवतः वह ऊँट एक आँख से नहीं देख पाता हो।"

वे कुछ और आगे गए तो सबसे छोटे भाई ने कहा-

"ऊँट पर एक महिला और एक बच्चा सवार थे।"

"बिलकुल सही!" दोनों बड़े भाइयों ने कहा और वे तीनों फिर आगे बढ़ चले। कुछ समय पश्चात् एक घुड़सवार उनके पास से निकला। सबसे बड़े भाई ने उसकी ओर देखकर पूछा-

"घुड़सवार, तुम किसी खोई हुई वस्तु को ढूँढ़ रहे इ रहे हो न?" घुड़सवार ने घोड़ा रोककर उत्तर दिया-

"हाँ।"

"तुम्हारा ऊँट खो गया है न?" सबसे बड़े भाई ने पूछा।

"हाँ।"

"बहुत बड़ा-सा?"

"हाँ।"

"वह एक आँख से नहीं देख पाता है न?" मझले भाई ने पूछा।

"हाँ।"

"एक छोटे-से बच्चे के साथ उस पर महिला सवार थी न?" सबसे छोटे भाई ने सवाल किया।

घुड़सवार ने तीनों भाइयों को शंका की दृष्टि से देखा और बोला-

"आह तो तुम्हारे पास है मेरा ऊँट! तुरंत बताओ, तुमने उसका क्या किया?

"हमने तुम्हारे ऊँट का मुँह तक नहीं देखा, भाइयों ने उत्तर दिया।

"तो तुम्हें उसके बारे में सभी बातें कैसे पता चलीं?"

"क्योंकि हम अपनी आँखों और बुद्धि से काम लेना जानते हैं", भाइयों ने उत्तर दिया। "शीघ्रता से उस दिशा में अपना घोड़ा दौड़ाओ। वहाँ तुम्हें तुम्हारा ऊँट मिल जाएगा।"

"नहीं", ऊँट के स्वामी ने उत्तर दिया, "मैं उस दिशा में नहीं जाऊँगा। मेरा ऊँट तुम्हारे पास है और तुम्हें ही उसे मुझे लौटाना पड़ेगा।"

"हमने तो तुम्हारे ऊँट को देखा तक नहीं", भाइयों ने चिंतित होते हुए कहा।

लेकिन घुड़सवार उनकी एक भी सुनने को तैयार नहीं था। उसने अपनी तलवार निकाल ली और उसे ज़ोर से घुमाते हुए तीनों भाइयों को अपने आगे-आगे चलने का आदेश दिया। इस प्रकार वह उन्हें सीधे अपने देश के राजा के भवन में ले गया। इन तीनों भाइयों को सुरक्षा कर्मियों को सौंपकर वह स्वयं राजा के पास गया।

"मैं अपने रेवड़ों को पहाड़ों पर लिए जा रहा था", उसने कहा, "और मेरी पत्नी मेरे छोटे-से बेटे के साथ एक बड़े-से ऊँट पर मेरे पीछे-पीछे आ रही थी। किसी कारण उनका ऊँट पीछे रह गया और वे रास्ते से भटक गए। मैं उन्हें ढूँढ़ने गया तो मुझे रास्ते में तीन व्यक्ति मिले जो पैदल चले जा रहे थे। मुझे पूरा विश्वास है कि उन्होंने मेरा ऊँट चुराया है और मेरी पत्नी तथा बेटे को मार डाला है।"

"तुम ऐसा क्यों समझते हो?" जब वह व्यक्ति अपनी बात कह चुका तो राजा ने पूछा।

"इसलिए कि मैंने उन लोगों से इस संबंध में एक भी शब्द नहीं कहा था फिर भी उन्होंने मुझे यह बताया कि ऊँट बहुत बड़ा था और एक आँख से नहीं देख पाता था तथा उस पर एक महिला बच्चे के साथ सवार थी।"

राजा ने थोड़ी देर सोच-विचार किया और फिर बोला-

"जैसा कि तुम कहते हो तुम्हारे बताए बिना ही तुम्हारे ऊँट के विषय में उन्होंने सभी कुछ इतनी अच्छी तरह से बताया है तो अवश्य उन्होंने उसे चुराया होगा। जाओ, उन चोरों को यहाँ लाओ।"

ऊँट का स्वामी बाहर गया और तीनों भाइयों को साथ लेकर झटपट अंदर आया।

"चोरों, तुरंत बताओ!" राजा उन्हें धमकाते हुए बोला। "तुरंत उत्तर दो, तुमने इस आदमी का ऊँट कहाँ छिपाया है?"

"हम चोर नहीं हैं, हमने इसका ऊँट कभी नहीं देखा", भाइयों ने उत्तर दिया।

तब राजा बोला- "इस व्यक्ति के कुछ भी बताए बिना तुमने ऊँट के विषय में सब कुछ बिलकुल सही बता दिया। अब तुम यह कहने का कैसे साहस करते हो कि तुमने उसे नहीं चुराया?"

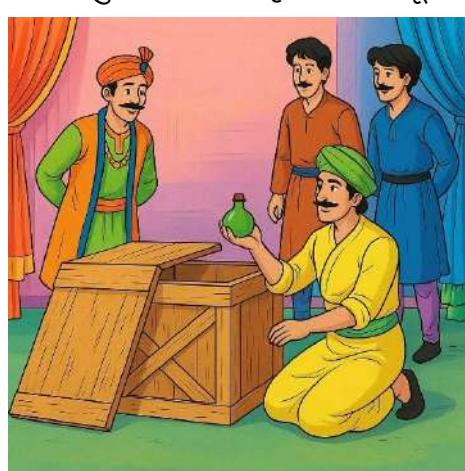
"महाराज, इसमें तो आश्वर्य की कोई बात नहीं है।" भाइयों ने उत्तर दिया। "बचपन से ही हमें ऐसी आदत पड़ गई है कि हम कुछ भी अपनी दृष्टि से नहीं चूकने देते। हमने अपने परिवेश को पैनी दृष्टि से देखने और बुद्धि से सोचने के प्रयास में बहुत समय लगाया है। इसीलिए ऊँट को देखे बिना ही हमने बता दिया कि वह कैसा है।"

राजा हँस दिया।

"किसी को भी देखे बिना ही उसके विषय में क्या इतना कुछ जानना संभव हो सकता है?" उसने पूछा।

"हाँ, संभव है", भाइयों ने उत्तर दिया।

"तो ठीक है, हम अभी तुम्हारी सच्चाई की जाँच कर लेंगे।"



राजा ने उसी समय अपने मंत्री को बुलाया और उसके कान में कुछ फुसफुसाया। मंत्री तुरंत महल के बाहर चला गया। लेकिन शीघ्र ही वह दो सेवकों के साथ लौटा जो एक बहुत बड़ी-सी पेटी लाए थे। दोनों ने पेटी को बहुत सावधानी से द्वार के पास ऐसे रख दिया कि वह राजा को दिखाई दे सके और स्वयं एक ओर हट गए। तीनों भाई दूर से खड़े उन्हें देखते रहे। उन्होंने इस बात को ध्यान से देखा कि पेटी कहाँ से और कैसे लाई गई थी और किस ढंग से रखी गई थी।

"हाँ, तो चौरों, हमें बताओ कि उस पेटी में क्या है?" राजा ने कहा।

"महाराज, हम तो पहले ही यह विनती कर चुके हैं कि हम चोर नहीं हैं, सबसे बड़े भाई ने कहा। "पर यदि आप चाहते हैं तो मैं आपको यह बता सकता हूँ कि उस पेटी में क्या है। उसमें कोई छोटी-सी गोल वस्तु है।"

"उसमें अनार है", मझला भाई बोला।

"हाँ, और वह अभी कच्चा है", सबसे छोटे भाई ने कहा।

यह सुनकर राजा ने पेटी को पास लाने का आदेश दिया। सेवकों ने तुरंत आदेश पूरा किया। राजा ने सेवकों से पेटी खोलने के लिए कहा। पेटी खुल जाने पर उसने उसमें झाँका। जब उसे उसमें कच्चा अनार दिखाई दिया तो उसके आश्र्य की कोई सीमा न रही।

आश्वर्यचकित राजा ने अनार निकालकर वहाँ उपस्थित सभी लोगों को दिखाया। तब उसने ऊँट के मालिक से कहा-

"इन लोगों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि ये चोर नहीं हैं। वास्तव में ये बहुत ही बुद्धिमान लोग हैं। तुम इनके बताए रास्ते पर जाकर अपने ऊँट को खोजो।"

राजा के महल में उस समय उपस्थित सभी लोगों के आश्र्य का कोई ठिकाना न था। किंतु सबसे बढ़कर तो स्वयं राजा चकित था। उसने सभी तरह के अच्छे और स्वादिष्ट भोजन मँगवाए और लगा इन भाइयों की आवभगत करने।

"तुम लोग बिलकुल निर्दोष हो और जहाँ भी जाना चाहो जा सकते हो। किंतु जाने से पहले तुम मुझे सारी बात विस्तार के साथ बताओ। तुम्हें यह यह कैसे पता चला कि उस व्यक्ति का ऊँट खो गया है और तुमने यह कैसे जाना कि ऊँट कैसा था?"

सबसे बड़े भाई ने कहा-

"धूल पर उसके पैरों के चिह्नों से मुझे पता चला कि कोई बहुत बड़ा ऊँट वहाँ से गया है। जब मैंने अपने पास से जानेवाले घुड़सवार को अपने चारों ओर नजर दौड़ाते देखा तो उसी समय मेरी समझ में यह बात आ गई कि वह क्या खोज रहा है।"

"बहुत अच्छा!" राजा ने कहा। "अच्छा, अब यह बताओ कि तुम में से किसने इस घुड़सवार को यह बताया था कि उसका ऊँट एक ही आँख से देख पाता है? उसका तो सड़क पर चिह्न नहीं रहा होगा।"

"मैंने इस बात का अनुमान ऐसे लगाया कि सड़क के दायीं ओर की घास तो ऊँट ने चरी थी, मगर बायीं ओर की घास ज्यों की त्यों थी", मझले भाई ने उत्तर दिया।

"बहुत उत्तम!" राजा ने कहा, "तुम में से यह अनुमान किसने लगाया था कि उस पर बच्चे के साथ एक महिला सवार थी?"

"मैंने", सबसे छोटे भाई ने उत्तर दिया, "मैंने देखा कि एक स्थान पर ऊँट के घुटने टेककर बैठने के चिह्न बने हुए थे। उनके पास ही रेत पर एक महिला के जूतों के चिह्न दिखाई दिए। साथ ही छोटे-छोटे पैरों के चिह्न थे, जिससे मुझे पता चला कि महिला के साथ एक बच्चा भी था।"

"बहुत अच्छा! तुमने बिलकुल सही कहा है", राजा बोला- "लेकिन तुम लोगों को यह कैसे पता चला कि पेटी में एक कच्चा अनार है? यह बात तो मेरी समझ में बिलकुल नहीं आ रही।"

सबसे बड़े भाई ने कहा-

"जिस तरह दोनों व्यक्ति उसे उठाकर लाए थे, उससे उससे बिलकुल स्पष्ट स्पष्ट था कि वह थोड़ी भी भारी नहीं है। जब वे पेटी को रख रहे थे तो मुझे उसके अंदर किसी छोटी-सी गोल वस्तु के लुढ़कने की ध्वनि सुनाई दी।"

मझला भाई बोला-

"मैंने ऐसा अनुमान लगाया कि चूँकि पेटी उद्यान की ओर से लाई गई है और उसमें कोई छोटी-सी गोल वस्तु है तो वह अवश्य अनार अनार ही होगा। कारण कि आपके महल के आसपास अनार के बहुत-से पेड़ लगे हुए हैं।"

"बहुत अच्छा!" राजा ने कहा और उसने सबसे छोटे भाई से पूछा-

"लेकिन तुम्हें यह कैसे पता चला कि अनार कच्चा है?"

"इस समय तक उद्यान में सभी अनार कच्चे हैं। यह तो आप स्वयं ही देख सकते हैं", उसने उत्तर दिया और खुली हुई खिड़की की ओर संकेत किया।

राजा ने बाहर देखा तो पाया कि उद्यान में लगे अनार के सभी वृक्षों पर कच्चे अनार लटक रहे थे।

राजा इन भाईयों की असाधारण पैनी दृष्टि और तीक्ष्ण बुद्धि से चकित रह गया।

"धन-संपत्ति या सांसारिक वस्तुओं की दृष्टि से तो तुम धनवान नहीं हो लेकिन तुम्हारे पास बुद्धि का बहुत बड़ा कोष है", उसने प्रशंसा करते हुए कहा और उन्हें अपने दरबार में रख लिया।

अभ्यास प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न :

निर्धन पिता अपने बेटों से किस प्रकार का धन

संचित करने की सलाह देता था?

अ. रुपया-पैसा

ब. ज़मीन-जायदाद

स. पैनी दृष्टि और तीव्र बुद्धि

द. व्यापार करना

मझले भाई को कैसे पता चला कि ऊँट एक आँख से नहीं देख सकता?

अ. ऊँट से पूछा

ब. ऊँट के पैर के निशान देखे

स. घास की अवस्था देखकर

द. किसी और से सुना

अंत में राजा ने तीनों भाइयों के साथ क्या किया?

अ. उन्हें दंडित किया

ब. उन्हें नगर से बाहर निकाल दिया

स. उन्हें अपने दरबार में रख लिया

द. उन्हें धन देकर विदा कर दिया

भाइयों ने यात्रा के दौरान कितने दिनों तक लगातार सफर किया?

अ. तीस दिन

ब. चालीस दिन

स. बीस दिन

द. पचास दिन

राजा ने भाइयों की परीक्षा के लिए क्या मँगवाया?

अ. अनार

ब. पेटी

स. ऊँट

द. तलवार

2. सही-गलत :

भाइयों ने ऊँट को अपनी आँखों से देखा था।

राजा ने भाइयों की बुद्धिमत्ता पर विश्वास कर लिया था।

ऊँट पर दो आदमी सवार थे।

भाइयों को देखकर राजा ने उन्हें तुरंत सम्मान दिया।

सबसे छोटे भाई ने महिला और बच्चे के बारे में अनुमान लगाया था।

3. रिक्त स्थान भरें

निर्धन पिता ने अपने बेटों को _____ और _____ का धन संचित करने को कहा।

ऊँट के रास्ते से जाने का पता सबसे _____ भाई ने लगाया।

राजा ने भाइयों की परीक्षा के लिए एक _____ मँगवाई।

पेटी में एक _____ अनार था।

4. वर्णनात्मक प्रश्न:

तीनों भाइयों ने कैसे यह अनुमान लगाया कि ऊँट कैसा था और उस पर कौन सवार था?

इस कहानी से हमें क्या सीख मिलती है?



कुंभ मेला न केवल भारत का, बल्कि पूरे विश्व का सबसे विशाल, भव्य और अद्वितीय धार्मिक आयोजन है। यह ऐसा आयोजन है, जिसकी तुलना किसी अन्य देश या संस्कृति में नहीं की जा सकती। यह मेला श्रद्धा, आस्था, एकता, अध्यात्म और भारतीय सांस्कृतिक विरासत का जीवंत प्रतीक है।

प्रत्येक 12 वर्षों में प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक इन चार पवित्र स्थानों पर बारी-बारी से कुंभ मेले का आयोजन होता है। प्रयागराज में प्रत्येक 6 वर्ष पर अर्धकुंभ और प्रत्येक 12 वर्ष पर पूर्णकुंभ का आयोजन होता है। इसी प्रकार हर 144 वर्षों में प्रयाग में महाकुंभ का आयोजन होता है, जिसे धरती का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन माना जाता है।

कुंभ मेला का समय ग्रह-नक्षत्रों की विशेष स्थिति पर आधारित होता है। जब बृहस्पति कुंभ राशि में और सूर्य मेष राशि में होते हैं, तब यह योग 'कुंभ स्नान-योग' कहलाता है। इसी योग में पवित्र नदियों में स्नान करने से आत्मा की शुद्धि और मोक्ष की प्राप्ति मानी जाती है। ऐसी मान्यता है कि कुंभ मेले में गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती का संगम होने वाला त्रिवेणी संगम विशेष आध्यात्मिक ऊर्जा से युक्त होता है।

2013 में प्रयागराज कुंभ में लगभग 12 करोड़ श्रद्धालुओं ने भाग लिया। 2025 में पुनः प्रयागराज में यह मेला आयोजित हुआ, जिसमें 66 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालुओं ने भाग लिया। देश के कोने-कोने से लोग, भाषा, जाति, क्षेत्र और वर्ग भेद को भुलाकर, केवल श्रद्धा और आस्था के आधार पर एकत्र होते हैं। यह आयोजन भारत की सांस्कृतिक अखंडता और एकता का सशक्त उदाहरण है। यहाँ उपस्थित जनसमूह यह संदेश देता है कि भारत विविधताओं में एकता वाला देश है।



कुंभ मेला न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक आयोजन है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, विज्ञान, परंपरा, लोक जीवन और राष्ट्रीय एकता का सबसे जीवंत उदाहरण है। ऐसे आयोजन विश्व में अन्यत्र कहीं नहीं होते।

कुंभ मेले का ज्योतिषीय आधार: चार स्थलों पर ग्रहों की स्थिति अनुसार आयोजन

कुंभ मेला विश्व का सबसे बड़ा आध्यात्मिक मेला है, जो चार पवित्र स्थानों- प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में बारी-बारी से प्रत्येक 12 वर्षों में आयोजित होता है। इन मेलों का समय ज्योतिषीय गणनाओं के आधार पर ग्रह-नक्षत्रों की विशेष स्थिति से निर्धारित होता है।

1. प्रयागराज कुंभ मेला

ग्रह-नक्षत्र स्थिति: जब बृहस्पति (गुरु) मेष राशि में होता है, सूर्य वृश्चिक राशि में होता है, और चंद्रमा अन्य शुभ स्थिति में होता है, तब प्रयागराज में कुंभ मेला आयोजित होता है। यहाँ गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती का त्रिवेणी संगम है। यह स्थान आत्मा की मुक्ति, पूर्व जन्मों के पापों के प्रक्षालन और मोक्ष प्राप्ति के लिए अत्यंत पुण्यकारी माना जाता है। प्रत्येक 12 वर्षों में महाकुंभ और 6 वर्षों में अर्धकुंभ होता है।

2. हरिद्वार कुंभ मेला (हरिद्वार)

ग्रह-नक्षत्र स्थिति: जब बृहस्पति कुंभ राशि में होता है, और सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है, तब हरिद्वार में कुंभ मेला मनाया जाता है। गंगा नदी का तट, विशेषकर हर की पौड़ी, इस समय अत्यंत पवित्र माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि ग्रहों की यह स्थिति गंगा के जल को अमृतमय बना देती है।

3. उज्जैन सिंहस्थ कुंभ मेला

ग्रह-नक्षत्र स्थिति: जब बृहस्पति (गुरु) सिंह राशि में होता है, और सूर्य-चंद्रमा भी इसी राशि या संबंधित शुभ स्थिति में होते हैं, तब उज्जैन में सिंहस्थ कुंभ मेला आयोजित होता है। यह मेला शिंग्रा नदी के तट पर होता है। उज्जैन को भगवान महाकालेश्वर की नगरी माना जाता है। ध्यान, योग और साधना के लिए यह काल अत्यंत फलदायक होता है।

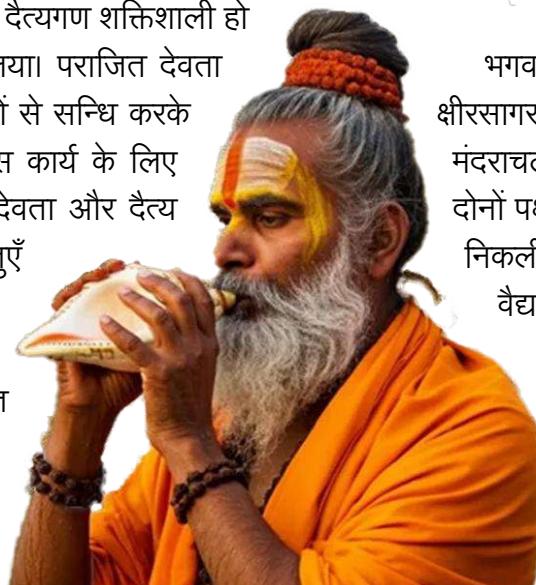
4. नासिक कुंभ मेला (नासिक/त्र्यंबकेश्वर)

ग्रह-नक्षत्र स्थिति: जब बृहस्पति सिंह राशि में होता है, और सूर्य भी सिंह राशि में प्रवेश करता है, तब नासिक (त्र्यंबकेश्वर) में कुंभ मेला आयोजित होता है। यह मेला गोदावरी नदी के तट पर होता है, जिसे दक्षिण की गंगा भी कहा जाता है। यहाँ भगवान शिव का त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग भी स्थित है। कभी कभी उज्जैन और नासिक का-कुंभ समान काल में भी होता है, क्योंकि दोनों की ग्रहस्थिति समान होती है। गोदावरी नदी, जिसे 'दक्षिण की गंगा' कहा जाता है, उसमें स्नान को उत्तम फलदायक माना गया है।

चारों कुंभ मेले ग्रहों की विशेष स्थितियों पर आधारित होते हैं, जिनमें बृहस्पति का राशियों में प्रवेश प्रमुख भूमिका निभाता है। इन मेलों का समय और स्थान केवल परंपरा नहीं, बल्कि गहन ज्योतिषीय विज्ञान और आध्यात्मिक साधना से जुड़ा है। कुंभ मेला न केवल श्रद्धा और आस्था का पर्व है, बल्कि यह भारत की ज्ञान परंपरा, खगोलीय विज्ञान, और सांस्कृतिक एकता का अनुपम उदाहरण है। यह कुंभ पर्व न केवल धर्म और आस्था से जुड़ा है, बल्कि यह पौराणिक, खगोलीय और आध्यात्मिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

इस पर्व के आयोजन को लेकर कई कथाएँ प्रचलित हैं, लेकिन इनमें से सबसे प्रसिद्ध और सर्वमान्य कथा है- समुद्र मंथन और अमृत कलश की कथा।

पौराणिक ग्रंथों के अनुसार, एक बार महर्षि दुर्वासा ने इंद्र को एक दिव्य माला भेंट की, जिसे इंद्र ने अपमानवश अपने हाथी ऐरावत के मस्तक पर फेंक दिया। यह अपमान देखकर दुर्वासा ने इंद्र को श्राप दिया कि देवताओं की शक्ति क्षीण हो जाएगी। इसके परिणामस्वरूप, दैत्यगण शक्तिशाली हो को पराजित कर स्वर्ग पर अधिकार कर लिया। पराजित देवता गए। भगवान विष्णु ने सुझाव दिया कि दैत्यों से सन्धि करके जाए, जिससे अमृत की प्राप्ति हो सके। इस कार्य के लिए और वासुकी नाग को रस्सी बनाया गया। देवता और दैत्य आरंभ किया। मंथन से कई दिव्य वस्तुएँ उच्चैःश्रवा, कामधेनु आदि। अंत में धन्वंतरि लेकर प्रकट हुए। जैसे ही अमृत प्राप्त हुआ, करने के लिए उतावले हो उठे। इंद्र पुत्र जयंत कहने पर वह अमृत कलश लेकर आकाश में दैत्यों ने उसका पीछा किया और 12 दिनों के समय अनुसार आकाश में देव-दानवों में



इस संघर्ष के दौरान अमृत कलश से चार स्थानों पर अमृत की बूँदें पृथ्वी पर गिरीं —

क्रम	स्थान	नदी	विशेषता
1	प्रयागराज	गंगा, यमुना, सरस्वती	त्रिवेणी संगम
2	हरिद्वार	गंगा	हर की पौड़ी पर अमृत बूँद
3	उज्जैन	शिंप्रा	महाकाल नगरी में अमृत बूँद
4	नासिक	गोदावरी	त्र्यंबकेश्वर में अमृत बूँद

अभ्यास प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

कुंभ मेला कितने वर्षों में एक बार आयोजित होता है?

- अ. 6 वर्ष
- ब. 12 वर्ष
- स. 144 वर्ष
- द. हर साल

महाकुंभ का आयोजन कितने वर्षों में होता है?

- अ. 12 वर्ष
- ब. 100 वर्ष
- स. 144 वर्ष
- द. 72 वर्ष

कुंभ मेला किस आधार पर आयोजित किया जाता है?

- अ. ऋतुओं के आधार पर
- ब. ज्योतिषीय गणना के आधार पर
- स. चंद्रग्रहण के समय
- द. पर्व-त्योहारों के अनुसार

कुंभ मेला किन नदियों के संगम पर होता है?

- अ. गंगा, गोदावरी, यमुना
- ब. गंगा, यमुना, सरस्वती
- स. ब्रह्मपुत्र, सरस्वती, गोदावरी
- द. नर्मदा, गंगा, यमुना

उज्जैन में कुंभ मेला किस नदी के तट पर होता है?

- अ. गोदावरी
- ब. गंगा
- स. यमुना
- द. शिंप्रा

सही/गलत

1. प्रयागराज में हर 6 वर्ष पर अर्धकुंभ और हर 12 वर्ष पर पूर्णकुंभ होता है। ()
2. नासिक कुंभ मेले में त्रिवेणी संगम होता है। ()
3. हरिद्वार का कुंभ मेला 'हर की पौड़ी' पर आयोजित होता है। ()

4. कुंभ मेला केवल धार्मिक आयोजन है, इसका विज्ञान से कोई संबंध नहीं है। ()
5. कुंभ मेला के आयोजन की कथा समुद्र मंथन से जुड़ी है। ()

रिक्त स्थान भरें

1. कुंभ मेला भारत के साथ-साथ _____ का भी सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन है।
2. प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और _____ में बारी-बारी से कुंभ मेला होता है।
3. उज्जैन को _____ की नगरी कहा जाता है।
4. अमृत मंथन की कथा के अनुसार, अमृत की बूँदें कुल _____ स्थानों पर गिरी थीं।
5. नासिक में कुंभ मेला _____ नदी के तट पर आयोजित होता है।

मिलान करें

प्रयागराज	●	गंगा
यमुना	●	सरस्वती
हरिद्वार	●	गंगा
उज्जैन	●	शिंप्रा
नासिक	●	गोदावरी

निम्नलिखित प्रश्नों के 5-10 वाक्यों में उत्तर दें :

1. कुंभ मेला को विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन क्यों कहा जाता है?
2. कुंभ मेला के आयोजन का ज्योतिषीय आधार क्या है?
3. अमृत मंथन से जुड़ी कुंभ की कथा को संक्षेप में लिखिए।
4. कुंभ मेला भारत की एकता का प्रतीक कैसे है?



बहुत समय पहले की बात है। भारत में एक ऐसी रानी हुईं, जिनका नाम आज भी आदर से लिया जाता है। उनका नाम था- अहिल्याबाई होलकर। वे मराठा साम्राज्य की प्रसिद्ध रानी थीं। उनका जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के चौंडी गाँव में हुआ था। उनका विवाह प्रसिद्ध मराठा सरदार मल्हारराव होलकर के बेटे खंडेराव होलकर से हुआ। मात्र 29 वर्ष की आयु में वे विधवा हो गईं, और बाद में बेटे मालेराव तथा बेटी के बेटे नत्थु की मृत्यु का दुःख भी उन्हें सहना पड़ा। जीवन भर उन्हें कई व्यक्तिगत दुखों का सामना करना पड़ा, परंतु उन्होंने हर परिस्थिति में संयम और विवेक का परिचय दिया।

अहिल्याबाई बचपन से ही बहुत समझदार और दयालु थीं। जब वे छोटी थीं, तब गाँव के लोग कहते थे "यह लड़की बड़ी होकर ज़रूर कुछ बड़ा काम करेगी!" और सचमुच, वे एक दिन महेश्वर की रानी बन गईं। उन्होंने हमेशा गरीबों, किसानों, विधवाओं और महिलाओं की मदद की। वे कहती थीं- "राजा का धर्म है- प्रजा की सेवा करना।" उन्होंने अपने राज्य में स्कूल बनवाए, प्याऊ (पानी पीने की जगह), कुरँ और बावड़ियाँ बनवाईं। उन्होंने काशी, सोमनाथ, द्वारका जैसे दूर-दराज के मंदिरों का निर्माण करवाया। अहिल्याबाई ने महिलाओं की पढ़ाई-लिखाई के लिए विद्यालय खुलवाए। उस समय लड़कियों को पढ़ने नहीं दिया जाता था, लेकिन उन्होंने कहा- "बेटियाँ भी पढ़ेंगी और आगे बढ़ेंगी।" उन्होंने यह भी कहा कि विधवा और अकेली स्त्रियाँ भी इज्जत से जी सकती हैं।

उनके दरबार में कोई भी जाकर अपनी बात कह सकता था। चाहे अमीर हो या गरीब। वे सबके साथ एक जैसा व्यवहार करती थीं। उनका न्याय इतना प्रसिद्ध था कि लोग उन्हें "देवी" कहने लगे। अहिल्याबाई एक रानी थीं,

लेकिन वे सादे कपड़े पहनती थीं, रोज पूजा करती थीं और रोज अपने राज्य के काम खुद देखती थीं। वे कहती थीं- "राजा को पहले खुद अनुशासन में रहना चाहिए, तभी प्रजा उसका आदर करेगी।"

अहिल्याबाई होलकर का जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची शक्ति दूसरों की सेवा, शिक्षा और न्याय में है। उन्होंने हमें दिखाया कि एक महिला भी शासक, शिक्षिका और समाजसेविका बन सकती है।

अहिल्याबाई स्वयं एक विधवा थीं, लेकिन उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता, साहस और नीति-कौशल से यह सिद्ध कर दिया कि एक स्त्री बिना पुरुष आश्रय के भी शासन और समाज को सुचारू रूप से चला सकती है। उन्होंने विधवाओं और परित्यक्त महिलाओं के लिए सहानुभूति, सम्मान और सहायता का वातावरण बनाया। उनके शासन में महिलाओं के



उन्हें 'खंडोजी सुत तुकोजी होलकर' कहा गया है।

अहिल्याबाई अपने जीवन में हमेशा न्याय की पक्षधर रहीं। उन्होंने अपने कार्यों से यह सिद्ध किया कि एक स्त्री भी शासन और न्याय व्यवस्था को उत्कृष्ट रूप से चला सकती है। जनता उन्हें देवी के रूप में पूजने लगी थी क्योंकि उनके जैसे निष्ठावान और करुणामयी शासक उस समय दुर्लभ थे। 13 अगस्त 1795 को, 70 वर्ष की आयु में अहिल्याबाई होलकर का निधन हुआ। उनके निधन के बाद तुकोजीराव होलकर ने शासन का कार्यभार संभाला। अहिल्याबाई के योगदान को आज भी स्मरण किया जाता है। उनके नाम पर भारत के विभिन्न राज्यों में मूर्तियाँ, स्मारक और शिक्षण संस्थान स्थापित किए गए हैं। इंदौर में प्रति वर्ष भाद्रपद कृष्ण चतुर्दशी को 'अहिल्योत्सव' मनाया जाता है। यह उत्सव उनकी स्मृति में आयोजित होता है और उनके महान कार्यों का स्मरण करता है। अहिल्याबाई होलकर न केवल एक कुशल प्रशासक थीं, बल्कि धर्म, समाजसेवा, न्याय और नारी सशक्तिकरण की प्रतीक भी थीं। उन्होंने अपने कार्यों से यह प्रमाणित किया कि शासन केवल तलवार से नहीं, बल्कि सेवा, करुणा और न्याय से भी किया जा सकता है। आज भी उनका जीवन एक प्रेरणा का स्रोत है।

साथ अन्याय या अत्याचार की घटनाओं पर कठोर कार्रवाई होती थी। उन्होंने स्त्रियों की सुरक्षा को प्राथमिकता दी और समाज में यह संदेश दिया कि राज्य की स्त्रियाँ सुरक्षित हैं और उन्हें न्याय अवश्य मिलेगा। राजकार्य में उन्होंने अपने पति के विश्वासपात्र तुकोजीराव होलकर को सेनापति नियुक्त किया। तुकोजीराव ने राज्य संचालन में सक्रिय भूमिका निभाई और अहिल्याबाई उन्हें बेटे की तरह मानती थीं। प्रशासनिक दस्तावेजों और मुहरों में

अभ्यास प्रश्न

अहिल्याबाई होलकर का जन्म किस स्थान पर

हुआ था?

अ. इंदौर

ब. नासिक

स. चौंडी

द. महेश्वर

अहिल्याबाई के पति का नाम क्या था?

अ. मल्हारराव होलकर

ब. खंडेराव होलकर

स. तुकोजीराव होलकर

द. नत्थू

अहिल्याबाई के शासनकाल में कौन सेनापति थे?

अ. नाना फड़नवीस

ब. जयपा शिंदे

स. रघुनाथराव

द. तुकोजीराव होलकर

अ. दुर्ग

ब. शस्त्रगृह

स. मंदिर, स्कूल, प्याऊ

द. किले

अहिल्याबाई ने निम्न में से क्या बनवाया था?

अहिल्याबाई के निधन के बाद शासन किसने संभाला?

अ. मल्हारराव

ब. नत्थू

स. तुकोजीराव होलकर

द. बाजीराव

रिक्त स्थान भरें

1. अहिल्याबाई का जन्म _____ को हुआ था।
2. वे _____ साम्राज्य की प्रसिद्ध रानी थीं।
3. उनके दरबार में अमीर-गरीब _____ जाकर अपनी बात कह सकते थे।
4. इंदौर में उनके सम्मान में प्रतिवर्ष _____ उत्सव मनाया जाता है।
5. वे कहती थीं, "राजा को पहले खुद _____ में रहना चाहिए।"

सही / गलत

1. अहिल्याबाई ने कभी कोई मंदिर नहीं बनवाया।
2. वे विधवा महिलाओं के सम्मान और शिक्षा की समर्थक थीं।
3. तुकोजीराव को अहिल्याबाई ने बेटा माना।
4. अहिल्याबाई ने केवल युद्धों पर ध्यान दिया।
5. वे रोज़ पूजा करती थीं और राज्य के काम भी खुद देखती थीं।

मिलान करें

- | | |
|-------------------------------|-----------------------|
| 1. जन्म स्थान | चौंडी, महाराष्ट्र |
| 2. पति का नाम | खंडेराव होलकर |
| 3. सेनापति एवं पुत्रवत सहयोगी | तुकोजीराव होलकर |
| 4. प्रमुख उत्सव | अहिल्योत्सव |
| 5. मंदिर निर्माण | काशी, सोमनाथ, द्वारका |

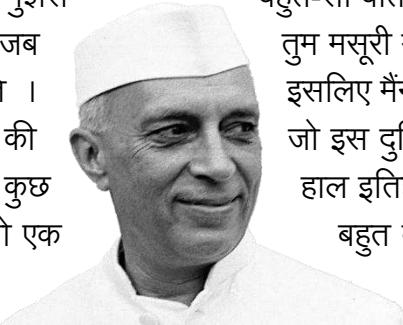
1. अहिल्याबाई होलकर ने महिलाओं के लिए क्या योगदान दिए?
2. अहिल्याबाई को 'देवी' क्यों कहा जाता था?
3. अहिल्याबाई होलकर का जीवन आज की पीढ़ी को क्या सिखाता है?

10

संसार पुस्तक है

- जवाहरलाल नेहरू

जब तुम मेरे साथ रहती हो तो अक्सर मुझसे देने की कोशिश करता हूँ। लेकिन अब, जब उस तरह बातचीत नहीं कर सकते। इस दुनिया की और उन छोटे-बड़े देशों की कर्त्ता। तुमने हिंदुस्तान और इंग्लैंड का कुछ एक छोटा-सा टापू है और हिंदुस्तान, जो एक छोटा-सा हिस्सा है। अगर तुम्हें इस शौक है, तो तुम्हें सब देशों का और बसी हुई हैं, ध्यान रखना पड़ेगा, केवल उस एक छोटे-से देश का नहीं जिसमें तुम पैदा हुई हो।



बहुत-सी बातें पूछा करती हो और मैं उनका जवाब तुम मसूरी में हो और मैं इलाहाबाद में, हम दोनों इसलिए मैंने इरादा किया है कि कभी-कभी तुम्हें जो इस दुनिया में हैं, छोटी-छोटी कथाएँ लिखा हाल इतिहास में पढ़ा है। लेकिन इंग्लैंड केवल बहुत बड़ा देश है, फिर भी दुनिया का एक दुनिया का कुछ हाल जानने का उन सब जातियों का जो इसमें

मुझे मालूम है कि इन छोटे-छोटे खतों में बहुत थोड़ी-सी बातें ही बतला सकता हूँ। लेकिन मुझे आशा है कि इन थोड़ी-सी बातों को भी तुम शौक से पढ़ोगी और समझोगी कि दुनिया एक है और दूसरे लोग जो इसमें आबाद हैं हमारे भाई-बहन हैं। जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम दुनिया और उसके आदमियों का हाल मोटी-मोटी किताबों में पढ़ोगी। उसमें तुम्हें जितना आनंद मिलेगा, उतना किसी कहानी या उपन्यास में भी न मिला होगा।

यह तो तुम जानती ही हो कि यह धरती लाखों-करोड़ों वर्ष पुरानी है और बहुत दिनों तक इसमें कोई आदमी न था। आदमियों से पहले सिर्फ़ जानवर थे और जानवरों से पहले एक ऐसा समय था जब इस धरती पर कोई जानदार चीज़ न थी। आज जब यह दुनिया हर तरह के जानवरों और आदमियों से भरी हुई है, उस जमाने का खयाल करना भी मुश्किल है, जब यहाँ कुछ न था। लेकिन विज्ञान जाननेवालों और विद्वानों ने, जिन्होंने इस विषय को खूब सोचा और पढ़ा है, लिखा है कि एक समय ऐसा था जब यह धरती बेहद गरम थी और इस पर कोई जानदार चीज़ नहीं रह सकती थी। और अगर हम उनकी किताबें पढ़ें और पहाड़ों और जानवरों की पुरानी हड्डियों को गौर से देखें तो हमें खुद मालूम होगा कि ऐसा समय ज़रूर रहा होगा।

तुम इतिहास की किताबों में ही पढ़ सकती हो। लेकिन पुराने जमाने में तो आदमी पैदा ही न हुआ था, किताबें कौन लिखता? तब हमें उस जमाने की बातें कैसे मालूम हों? यह तो नहीं हो सकता कि हम बैठे-बैठे हर एक बात सोच निकालें। यह बड़े मज़े की बात होती, क्योंकि हम जो चीज़ चाहते सोच लेते और सुंदर परियों की कहानियाँ गढ़ लेते। लेकिन जो कहानी किसी बात को देखे बिना ही गढ़ ली जाए वह ठीक कैसे हो सकती है? लेकिन खुशी की बात है कि उस पुराने जमाने की लिखी हुई किताबें न होने पर भी कुछ ऐसी चीजें हैं, जिनसे हमें उतनी ही बातें मालूम होती हैं जितनी किसी किताब से होतीं। ये पहाड़, समुद्र, सितारे, नदियाँ, जंगल, जानवरों की पुरानी हड्डियाँ और इसी तरह की और भी कितनी ही चीजें हैं, जिनसे हमें दुनिया का पुराना हाल मालूम हो सकता है। मगर हाल जानने का

असली तरीका यह नहीं है कि हम केवल दूसरों की लिखी हुई किताबें पढ़ लें, बल्कि खुद संसार-रूपी पुस्तक को पढ़ें। मुझे आशा है कि पत्थरों और पहाड़ों को पढ़कर तुम थोड़े ही दिनों में उनका हाल जानना सीख जाओगी। सोचो, कितनी मजे की बात है। एक छोटा-सा रोड़ा जिसे तुम सड़क पर या पहाड़ के नीचे पड़ा हुआ देखती हो, शायद संसार की पुस्तक का छोटा-सा पृष्ठ हो, शायद उससे तुम्हें कोई नयी बात मालूम हो जाए। शर्त यही है कि तुम्हें उसे पढ़ना आता हो।

कोई जबान, उर्दू, हिंदी या अंग्रेजी, सीखने के लिए तुम्हें उसके अक्षर सीखने होते हैं। इसी तरह पहले तुम्हें प्रकृति के अक्षर पढ़ने पड़ेंगे, तभी तुम उसकी कहानी उसके पत्थरों और चट्टानों की किताब से पढ़ सकोगी। शायद अब भी तुम उसे थोड़ा-थोड़ा पढ़ना जानती हो।

जब तुम कोई छोटा-सा गोल चमकीला रोड़ा देखती हो, तो क्या वह तुम्हें कुछ नहीं बतलाता? यह कैसे गोल, चिकना और चमकीला हो गया और उसके खुरदरे किनारे या कोने क्या हुए? अगर तुम किसी बड़ी चट्टान को

तोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर डालो तो हर एक टुकड़ा खुरदरा और नोकीला होगा। यह गोल चिकने रोड़े की तरह बिलकुल नहीं होता। फिर यह रोड़ा कैसे इतना चमकीला, चिकना और गोल हो गया? अगर तुम्हारी आँखें देखें और कान सुनें तो तुम उसी के मुँह से

उसकी कहानी सुन सकती हो। वह तुमसे कहेगा कि एक समय, जिसे शायद बहुत दिन गुजरे हों, वह भी एक चट्टान का टुकड़ा था। ठीक उसी टुकड़े की तरह, उसमें किनारे और कोने थे, जिसे तुम बड़ी चट्टान से तोड़ती हो। शायद वह किसी पहाड़ के दामन में पड़ा रहा। तब पानी आया और उसे बहाकर छोटी घाटी तक ले गया। वहाँ से एक पहाड़ी नाले ने ढकेलकर उसे एक छोटे-से दरिया में पहुँचा दिया। इस छोटे-से दरिया से वह बड़े दरिया में पहुँचा। इस बीच वह दरिया के पेंदे में लुढ़कता रहा, उसके किनारे घिस गए और वह चिकना और चमकदार हो तरह वह कंकड़ बना जो तुम्हारे सामने है।

गया। इस



किसी वजह से दरिया उसे छोड़ गया और तुम उसे पा गईं। अगर दरिया उसे और आगे ले जाता तो वह छोटा होते-होते अंत में बालू का एक ज़रा हो जाता और समुद्र के किनारे अपने भाइयों से जा मिलता, जहाँ एक सुंदर बालू का किनारा बन जाता, जिस पर छोटे-छोटे बच्चे खेलते और बालू के घराँदे बनाते। अगर एक छोटा-सा रोड़ा तुम्हें इतनी बातें बता सकता है, तो पहाड़ों और दूसरी चीजों से, जो हमारे चारों तरफ हैं, हमें और कितनी बातें मालूम हो सकती हैं!

अभ्यास प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. यह पत्र नेहरूजी ने किसको लिखा था?

- अ. इंदिरा गांधी को
- ब. पंडिता रामबाई को
- स. कमला नेहरू को
- द. सरोजिनी नायडू को

3. नेहरूजी के अनुसार एक चमकीला रोड़ा पहले क्या था?

- अ. पेड़ की छाल
- ब. मिट्टी का ढेला
- स. चट्टान का टुकड़ा
- द. तारे का टुकड़ा

5. नेहरूजी ने प्रकृति की भाषा सीखने की तुलना किससे की?

- अ. गिनती सीखने से
- ब. चित्र बनाने से
- स. कहानी पढ़ने से
- द. किसी ज्ञान के अक्षर सीखने से

2. नेहरूजी इस पत्र में दुनिया को किससे तुलना करते हैं?

- अ. चित्र से
- ब. पुस्तक से
- स. नदी से
- द. कविता से

4. नेहरूजी के अनुसार सबसे पहले धरती पर क्या था?

- अ. इंसान
- ब. जानवर
- स. केवल गरमी
- द. किताबें

रिक्त स्थान भरें

1. नेहरूजी ने यह पत्र _____ में रहते हुए लिखा था।
2. पत्र में दुनिया को उन्होंने _____ की तरह पढ़ने की बात कही।
3. नेहरूजी के अनुसार, धरती पर सबसे पहले _____ थे, फिर जानवर और फिर इंसान।
4. नेहरूजी ने कहा, हमें केवल अपने देश नहीं बल्कि _____ का भी ज्ञान रखना चाहिए।
5. एक रोड़ा भी हमें _____ सुना सकता है।

सही या गलत

1. नेहरूजी ने यह पत्र विज्ञान की खोजों पर आधारित नहीं लिखा।
2. नेहरूजी का मानना था कि दूसरों की किताबें पढ़ना ही पर्याप्त है।
3. नेहरूजी ने कहा कि पहाड़, नदी, रोड़े आदि से भी जानकारी मिल सकती है।
4. पत्र में रोड़े को चट्टान से निकली कहानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
5. यह पत्र एक उपन्यास का अंश है।

मिलान करें

पत्र लेखक	● इंदिरा गांधी
पत्र किसे लिखा गया	● जवाहरलाल नेहरू
दुनिया की तुलना	● चट्टान से घिसकर बना
रोड़ा	● पुस्तक
ज्ञान पाने का तरीका	● प्रकृति की भाषा को पढ़ना

उत्तर संक्षेप में दें

1. नेहरूजी ने दुनिया को 'पुस्तक' क्यों कहा है?
2. पत्र के अनुसार, एक छोटा-सा रोड़ा हमें क्या सिखाता है?
3. नेहरूजी ने इतिहास जानने के लिए किन चीज़ों को 'किताब' जैसा कहा?
4. नेहरूजी बच्चों को क्या सीखने की प्रेरणा देते हैं?
5. प्रकृति की भाषा कैसे सीखी जा सकती है, नेहरूजी के अनुसार?

11

गोल

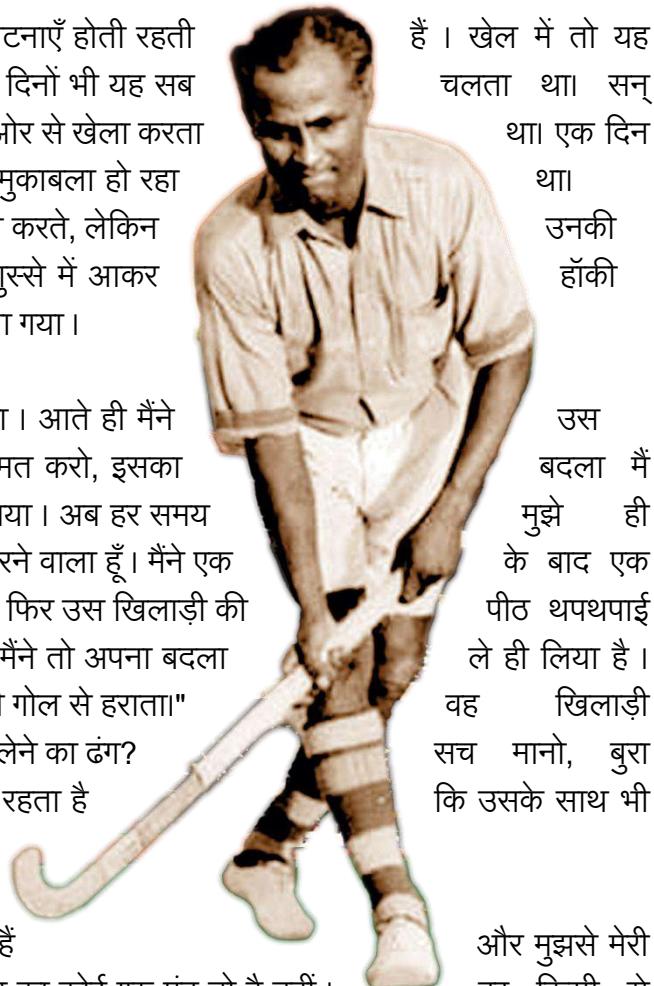
- मेजर ध्यानचंद

इस पाठ का नाम पढ़कर आपके मन में कुछ गोल वस्तुओं के नाम या चित्र उभरे होंगे, गोल गेंद, गोल रोटी, गोल चंद्रमा आदि । लेकिन यह पाठ एक विशेष प्रकार के गोल और उसे करने वाले के बारे में है । यह पाठ एक प्रसिद्ध खिलाड़ी के संस्मरण का एक अंश है । आइए, इसे पढ़ते हैं और जानते हैं कि कौन थे वे प्रसिद्ध खिलाड़ी !

खेल के मैदान में धक्का-मुक्की और नोंक-झोंक की घटनाएँ होती रहती सब चलता ही है । जिन दिनों हम खेला करते थे, उन दिनों भी यह सब 1933 की बात है । उन दिनों में, मैं पंजाब रेजिमेंट की ओर से खेला करता 'पंजाब रेजिमेंट' और 'सैपर्स एंड माइनर्स टीम' के बीच मुकाबला हो रहा 'माइनर्स टीम' के खिलाड़ी मुझसे गेंद छीनने की कोशिश करते, लेकिन हर कोशिश बेकार जाती । इतने में एक खिलाड़ी ने गुर्से में आकर स्टिक मेरे सिर पर दे मारी । मुझे मैदान से बाहर ले जाया गया ।

थोड़ी देर बाद मैं पट्टी बाँधकर फिर मैदान में आ पहुँचा । आते ही मैंने खिलाड़ी की पीठ पर हाथ रखकर कहा, "तुम चिंता मत करो, इसका जरूर लूँगा ।" मेरे इतना कहते ही वह खिलाड़ी घबरा गया । अब हर समय देखता रहता कि मैं कब उसके सिर पर हॉकी स्टिक मारने वाला हूँ । मैंने एक झटपट छह गोल कर दिए । खेल खत्म होने के बाद मैंने फिर उस खिलाड़ी की ओर कहा, "दोस्त, खेल में इतना गुरसा अच्छा नहीं । मैंने तो अपना बदला अगर तुम मुझे हॉकी नहीं मारते तो शायद मैं तुम्हें दो ही गोल से हराता ।" सचमुच बड़ा शर्मिंदा हुआ । तो देखा आपने मेरा बदला लेने का ढांग? काम करने वाला आदमी हर समय इस बात से डरता रहता है बुराई की जाएगी ।

आज मैं जहाँ भी जाता हूँ बच्चे व बूढ़े मुझे घेर लेते हैं सफलता का राज जानना चाहते हैं । मेरे पास सफलता का कोई गुरु-मंत्र तो है नहीं । यही कहता कि लगन, साधना और खेल भावना ही सफलता के सबसे बड़े मंत्र हैं ।



हैं । खेल में तो यह चलता था । सन् था एक दिन था । उनकी हॉकी

उस बदला मैं मुझे ही के बाद एक पीठ थपथपाई ले ही लिया है । वह खिलाड़ी सच मानो, बुरा कि उसके साथ भी

और मुझसे मेरी हर किसी से

मेरा जन्म सन् 1904 में प्रयाग में एक साधारण परिवार में हुआ । बाद में हम झाँसी आकर बस गए । 16 साल की उम्र में मैं 'फर्स्ट ब्राह्मण रेजिमेंट' में एक साधारण सिपाही के रूप में भर्ती हो गया । मेरी रेजिमेंट का हॉकी खेल में

काफी नाम था। पर खेल में मेरी कोई के सूबेदार मेजर तिवारी थे। वे बार-बार मुझे हॉकी खेलने का कोई निश्चित समय नहीं था। अभ्यास शुरू कर देतो। उस समय तक मैं एक जैसे-जैसे मेरे खेल में निखार आता गया, वैसे-में बर्लिन ओलंपिक में मुझे कसान बनाया बर्लिन ओलंपिक में लोग मेरे हॉकी मुझे 'हॉकी का जादूगर' कहना शुरू गोल मैं ही करता था। मेरी तो हमेशा पास ले जाकर अपने किसी साथी श्रेय मिल जाए। अपनी इसी खेल भावना के कारण मैंने दुनिया के खेल प्रेमियों का दिल जीत लिया। बर्लिन ओलंपिक में हमें स्वर्ण पदक मिला। खेलते समय मैं हमेशा इस बात का ध्यान रखता था कि हार या जीत मेरी नहीं, बल्कि बल्कि पूरे देश की है।



दिलचस्पी नहीं थी। उस समय हमारी रेजिमेंट हॉकी खेलने के लिए कहते। हमारी छावनी में सैनिक जब चाहे मैदान में पहुँच जाते और नौसिखिया खिलाड़ी था।

वैसे मुझे तरक्की भी मिलती गई। सन् 1936 गया। उस समय मैं सेना में लांस नायक था। खेलने के ढंग से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने

कर दिया। इसका यह मतलब नहीं कि सारे यह कोशिश रहती कि मैं गेंद को गोल के खिलाड़ी को दे दूँ ताकि उसे गोल करने का

कर दिया। इसका यह मतलब नहीं कि सारे

यह कोशिश रहती कि मैं गेंद को गोल के खिलाड़ी को दे दूँ ताकि उसे गोल करने का

अभ्यास प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

मेजर ध्यानचंद किस खेल के खिलाड़ी थे?

- अ. क्रिकेट
- ब. फुटबॉल
- स. हॉकी
- द. कबड्डी

बर्लिन ओलंपिक किस वर्ष हुआ था जिसमें ध्यानचंद कसान थे?

- अ. 1928
- ब. 1932
- स. 1936
- द. 1940

ध्यानचंद के अनुसार सफलता का सबसे बड़ा मंत्र क्या है?

- अ. ताकत
- ब. गुरु
- स. सौभाग्य
- द. लगन, साधना और खेल भावना

'हॉकी का जादूगर' किसे कहा गया?

- अ. मेजर ध्यानचंद
- ब. मिल्खा सिंह
- स. कपिल देव
- द. सुशील कुमार

मैदान में ध्यानचंद को हॉकी स्टिक से किसने मारा?

- अ. दर्शक
- ब. उनके साथी खिलाड़ी
- स. माइनर्स टीम के खिलाड़ी ने
- द. अंपायर ने

रिक्त स्थान भरें

1. मेजर ध्यानचंद का जन्म _____ में हुआ था।
2. ध्यानचंद को बर्लिन ओलंपिक में _____ बनाया गया था।
3. ध्यानचंद का चयन पहले _____ ब्राह्मण रेजिमेंट में हुआ था।
4. बच्चों और बूढ़ों से वे अपनी सफलता का कोई _____ नहीं बताते थे।
5. ध्यानचंद की कोशिश रहती थी कि गोल करने का श्रेय उनके _____ को मिले।

सही / गलत

1. मेजर ध्यानचंद का जन्म प्रयाग में हुआ था।
2. वे अपने विरोधियों से मैदान में हिंसा से बदला लेते थे।
3. ध्यानचंद सेना में एक अधिकारी के रूप में भर्ती हुए थे।
4. मेजर ध्यानचंद स्वर्ण पदक जीतने वाले क्रिकेट खिलाड़ी थे।
5. ध्यानचंद की खेल भावना ने लोगों का दिल जीत लिया।

लघु उत्तर वाले प्रश्न

1. ध्यानचंद ने अपना बदला कैसे लिया?
2. बर्लिन ओलंपिक में ध्यानचंद ने क्या प्राप्त किया?
3. मेजर ध्यानचंद को 'हॉकी का जादूगर' क्यों कहा गया?
4. उन्होंने खेल को देश से कैसे जोड़ा?

कथक की जब भी बात होती है तो हमारे मस्तिष्क में एक नाम अवश्य आता है- बिरजू महाराज। कथक की कला उन्हें विरासत में मिली थी, भारत ही नहीं बल्कि मनमोहक प्रस्तुतियों के लिए किया जाता है। बिरजू रागों के समान ही उतार-चढ़ाव भरा था। अपने लिए उन्होंने कठिन साधना की थी। आइए, आज महाराज से मिलों। इनसे हमारा परिचय करवा श्रेया : सुना है कि आपका बचपन बचपन पन के बारे में कुछ

बिरजू महाराज़ : एक जमाना था हवेली के दरवाजे पर आठ-आठ सिपाहियों देहांत के बाद आर्थिक परेशानियाँ बढ़ने लगीं। की कीमत के हार हुआ करते थे वे अब खाली होता ही है। सब समय का चक्र है। संघर्षों के माँ थीं। कभी कर्ज लेते थे तो कभी पुरानी सोने-चाँदी के तार बेचते थे और गुजारा भी कभी-कभी पैसा आ जाता था। दिन में बार नहीं भी खाते थे। अम्मा बार-बार यही मिले या कुछ भी न मिले पर अभ्यास जरूर तनुश्री : आपने कथक किससे सीखा?

बिरजू महाराज़ : मेरे गुरु थे मेरे पिता अच्छन महाराज। घर में चूँकि कथक का माहौल था, अतः देख-देखकर कथक सीख गया था और नवाब के दरबार में करते समय गुरु शिष्यों को गंडा (ताबीज़) बाँधते हैं और शिष्य गुरु को भेंट देता है। जब मेरी तालीम शुरू होने की बात आई तो बाबूजी ने कहा, "भेंट मिलने पर ही गंडा बाँधूँगा।" इस पर अम्मा ने मेरे दो कार्यक्रमों की कमाई बाबूजी को भेंट के रूप में दे दी। 'गंडा' गुरु और शिष्य के बीच पवित्र रिश्ता होता है। मैंने अब इस रस्म को उल्टा कर दिया है। कई वर्षों तक नृत्य सिखाने के बाद जब देखता हूँ कि शिष्य में सच्ची लगन है तभी गंडा बाँधता हूँ।

तनुश्री : क्या पढ़ाई या दूसरे कामों के साथ-साथ संगीत और नृत्य जारी रखना संभव है?

बिरजू महाराज़ : यह तो अपने सामर्थ्य पर निर्भर करता है। मेरी शिष्या शोभना नारायण आई.ए.एस. अफसर हैं और अच्छी नर्तकी भी। मैं नृत्य के साथ-साथ बजाता और गाता भी हूँ। इसके अतिरिक्त नृत्य नाटिकाएँ और उनके



विदेशों में भी बिरजू महाराज का स्मरण उनकी महाराज का जीवन शास्त्रीय संगीत के जीवन में प्राप्त सफलताओं के हम पद्मविभूषण श्री बिरजू रहे हैं आपके जैसे ही कुछ बच्चे। संघर्षों से भरा हुआ था। अपने बताएँगे?

था जब हमलोग छोटे नवाब कहलाते का पहरा होता था। मेरे बाबूजी के जिन डिब्बों में कभी तीन-चार लाख पड़े थे। जीवन में उतार-चढ़ाव तो दौर में मेरी सबसे बड़ी सहयोगी मेरी ज़री की साड़ियाँ जलाकर उनके करते थे। नृत्य के कार्यक्रमों से खाना खाते थे तो रात को कई कहा करती थीं, "खाने को भले ही चना करो।"

महाराज और चाचा शंभू महाराज और लच्छू औपचारिक प्रशिक्षण शुरू होने से पहले ही मैं नाचने भी लगा था। कथक की तालीम शुरू करते समय गुरु शिष्यों को गंडा (ताबीज़) बाँधते हैं और शिष्य गुरु को भेंट देता है। जब मेरी तालीम शुरू होने की बात आई तो बाबूजी ने कहा, "भेंट मिलने पर ही गंडा बाँधूँगा।" इस पर अम्मा ने मेरे दो कार्यक्रमों की कमाई बाबूजी को भेंट के रूप में दे दी। 'गंडा' गुरु और शिष्य के बीच पवित्र रिश्ता होता है। मैंने अब इस रस्म को उल्टा कर दिया हूँ।

लिए संगीत भी तैयार करता हूँ। मैंने जब नौकरी शुरू की तो मेरे चाचा ने कहा, "तुम नौकरी में बँट जाओगे। तुम्हारे अंदर का नर्तक पूरी तरह पनप नहीं पाएगा।" पर मैंने दृढ़ निश्चय किया था कि 'महाराज' बनना है तो उसके लिए मेहनत भी करनी होगी।

माणिक : कथक की शुरुआत कब हुई?

बिरजू महाराज : कथक की परंपरा बहुत पुरानी है। 'महाभारत' के आदिपर्व और 'रामायण' में इसकी चर्चा मिलती है। पहले कथक रोचक और अनौपचारिक रूप से कथा कहने का ढंग होता था। तब यह मंदिरों तक ही सीमित था। हमारे लखनऊ घराने के लोग मूलतः बनारस-इलाहाबाद के बीच हरिया गाँव के रहने वाले थे। वहाँ 989 कथिकों के घर हुआ करते थे। कथिकों का एक तालाब अभी भी है। गाँव में एक बैरगिया नाला है, जिसके साथ यह कहानी जुड़ी हुई है-एक बार नौ कथिक नाले के पास से गुजर रहे थे कि तीन डाकू वहाँ आ पहुँचे। कुछ कथिक डर गए, किंतु उन कथिकों की कला में इतना दम था कि डाकू सब कुछ भूलकर उन कथिकों के कथक में मग्न हो गए। तब से यह पद लोगों में प्रचलित हो हो गया।

बैरगिया नाला जुलुम जोर, नौ कथिक नचावें तीन चोर।

जब तबला बोले धीन-धीन, तब एक-एक पर तीन-तीन।

लखनऊ रायगढ़ के महाराज चक्रधर की भी अपनी अलग शैली थी।

श्रेया : क्या नृत्य सीखने के लिए संगीत जानना जरूरी होता है?

बिरजू महाराज : गाना, बजाना और नाचना- ये तीनों संगीत का हिस्सा हैं। संगीत में लय होती है।

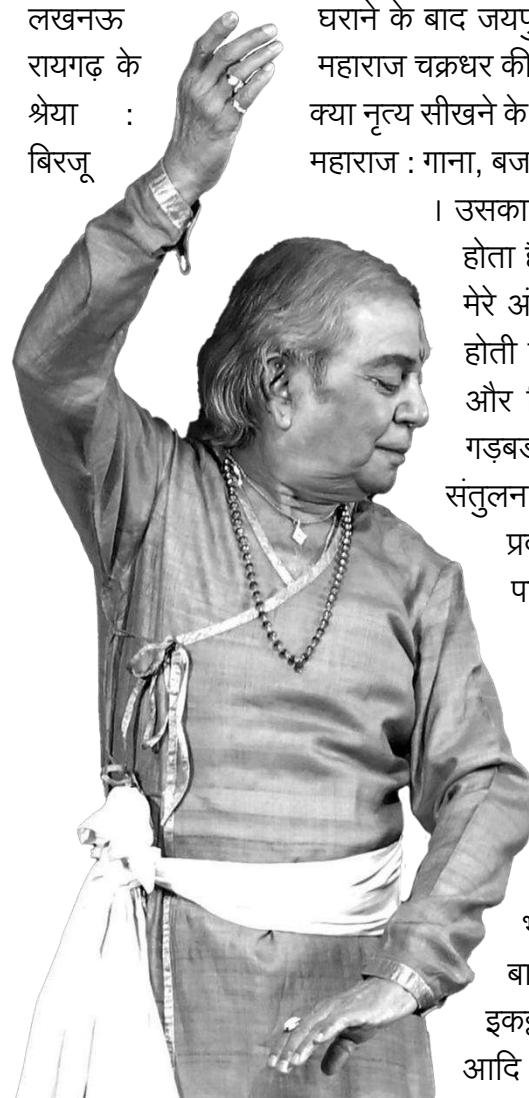
उसका ज्ञान आवश्यक है। नृत्य में शरीर, ध्यान और तपस्या का साधन होता है।

मेरे अंदर समाओ और नाचो। नृत्य ही नहीं, हमारी हर गतिविधि में लय होती है। घसियारा घास को हाथ से पकड़ कर उस पर हँसिया मारता है और फिर घास हटाता है। मारने और हटाने की इस लय में जरा भी गड़बड़ी हुई नहीं कि उसका हाथ गया। लय हर काम में, नृत्य में, जीवन में संतुलन बनाए रखती है। लय एक तरह का आवरण है, जो नृत्य को सुंदरता

प्रदान करती है। अगर नर्तक को सुर-ताल की समझ है तो वह जान पाएगा कि यह लहरा ठीक नहीं है। इसके माध्यम से नृत्य अंगों में प्रवेश नहीं करेगा।

तनुश्री : आपने कथक में कई नई चीजें भी जोड़ी हैं न?

बिरजू महाराज : कथक की पुरानी परंपरा को तो कायम रखा है। हाँ, उसके प्रस्तुतीकरण में बदलाव किए हैं। हमने गौर किया कि हमारे चाचा लोग और बाबूजी नाचते तो खूबसूरत थे ही, उनके खड़े होने का अंदाज भी निराला होता था। हमने उन भाव-भंगिमाओं को भी कथक में शामिल कर लिया। चाचा लोग और बाबूजी हमारे लिए ब्रह्मा, विष्णु, महेश थे। हमने तीनों की शिक्षा को इकट्ठा करके एक नया रूप तैयार किया। इसी प्रकार टैगोर, त्यागराज आदि कई आधुनिक कवियों की रचनाओं को लेकर भी कथक रचनाएँ



तैयार करें।

तनुश्री : पर ये लोग तो अलग-अलग भाषाओं के कवि थे।

बिरजू महाराज : भाषाएँ अलग-अलग होती हैं पर इंसान तो सब जगह एक-से होते हैं। फ्रांस में एक दर्शक ने कहा, "मैं नहीं जानता कि यशोदा कौन है?" मैंने उन्हें बताया कि इस धरती पर सब माँएँ यशोदा हैं और सब नन्हें बच्चे कृष्ण। बच्चे की जिद, रोना, उठना, बैठना, सब जगह एक जैसा होता है। धीरे-धीरे हमें अलग-अलग भाषा, संस्कार और तौर-तरीके मिलते हैं। चाहे नृत्य हो या कुछ और, परंपरा एक वृक्ष के समान होती है, जो सबको एक जैसी छाया और आश्रय देती है। उसके नीचे बैठने वाले अलग-अलग स्वभाव के होते हैं। वृक्ष से लिए बीज को बोएँ तो समय आने पर ही एक और वृक्ष फलेगा। वह नया वृक्ष कैसा होगा, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि उसे कैसी हवा, पानी और खाद मिला है।

माणिक : आपने जब सीखना शुरू किया था, तब से अब तक कथक की दुनिया में क्या-क्या बदलाव आए हैं?

बिरजू महाराज : पहले मच नहीं होते थे। फर्श पर चाँदनी (बिछाने की बड़ी सफेद चादर) बिछी होती थी जिस पर कथक होता था और दर्शक चारों ओर बैठते थे। शृंगार के लिए चंदनलेप और होंठ रंगने के लिए पान होता था। पहले नर्तक कथा के दृश्यों का ऐसा विस्तृत वर्णन करते थे कि दर्शक के सामने पूरा दृश्य खिंच जाता था कि कैसे गोपियों ने घड़ा उठाया, धीमी चाल से पनघट की ओर चलीं, पीछे से कृष्ण चुपचाप आए, कंकड़ उठाया और दे मारा। अब सिर्फ 'पनघट की गत देखो' कहकर बाकी दर्शक की कल्पना पर छोड़ दिया जाता है।

श्रेया : आपने गाना, बजाना और नाचना कब शुरू किया?

बिरजू महाराज : चाचा ने कहा, "लड़के बहुत छुटपन से ही तबला पीटना शुरू कर दिया था। चाचा के हाथ में लय है।" पाँच साल का होते-होते हारमोनियम पर लहरा बजाने लगा। सबको खुश करने के लिए फिल्मी गाने भी खूब गाता था। एक बार सबकी फरमाइश पर सुरेया के एक गाने पर देर तक नाचा। बहनों ने बड़े शौक से बिंदी-चुन्नी से सजा दिया था। तब तक चाचा आ गए। बस डर के मारे तुरंत सब कुछ उतार फेंका और छिप गया।

माणिक : शास्त्रीय नृत्य और लोक नृत्य में क्या अंतर है?

बिरजू महाराज : लोक नृत्य सामूहिक होता है। दिनभर की मेहनत के बाद लोग थकान दूर करने और मनोरंजन के लिए इकट्ठा मिलकर नाचते हैं। दूसरी ओर शास्त्रीय नृत्य में एक नर्तक अकेला ही काफी होता है। लोक नृत्य नाचने वालों के अपने मन बहलाव और संतुष्टि के लिए होता है जबकि शास्त्रीय नृत्य दर्शकों के लिए होता है। शुरू में कथावाचक भी लोक नर्तक हुआ करता था। धीरे-धीरे जब

शैली व रूप निश्चित होता गया तो वह शास्त्रीय नृत्य हो

श्रेया : इस समय भारत में शास्त्रीय नृत्य की क्या स्थिति

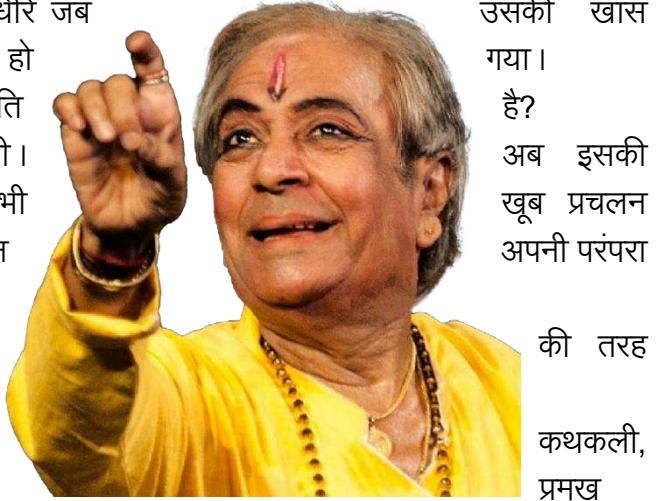
बिरजू महाराज : कुछ वर्ष पहले तक स्थिति दयनीय थी।

लोकप्रियता बढ़ रही है पर शोर वाले संगीत-नृत्य का भी है। मैं सबसे यही कहता हूँ, वह संगीत सुनो-देखो, लेकिन की गहराई को भी समझो, अनुभव करो।

तनुश्री : कर्नाटक और हिन्दुस्तानी शैली के संगीत क्या दक्षिण और उत्तर के नृत्य में भी अंतर है?

बिरजू महाराज : कथक, भरतनाट्यम, कुचिपुड़ी, मोहिनीअद्वम, ओडिसी, मणिपुरी - ये शास्त्रीय नृत्य की

शैलियाँ हैं। संगीत और गाने के ढंग का अंतर तो है ही, इसके अतिरिक्त भी हर नृत्य की अपनी लय और



उसकी खास
गया।
है?
अब इसकी
खूब प्रचलन
अपनी परंपरा

की तरह
कथकली,
प्रमुख

भाव-भंगिमा है। कथक की भाव-भंगिमा दैनिक जीवन से ली गई होती है और भरतनाट्यम में मूर्तिकला से। भरतनाट्यम में दोनों भावों का इकट्ठा प्रयोग होता है और कथक में बारी-बारी से। ओडिसी और मणिपुरी में कोमलता है, कथकली में ओज है। कथक में दोनों हैं। कथक में गर्दन को हल्के से हिलाया जाता है, चिराग की लौ के समान। इसी प्रकार उँगलियाँ भी बहुत धीरे-से हिलाई जाती हैं, जैसे धूँधट पकड़ने में या धूँधट उठाने में। उँगलियाँ ज़रा जोर से हिलीं नहीं कि चाचा जी तुरंत टोकते थे। "धूँधट या तंबू?"

माणिक : खाली समय में आप क्या करते हैं?

बिरजू महाराज़ : खाली तो होता ही नहीं हूँ। नींद में भी हाथ चलता रहता चलता रहता है। मशीनों में मन खूब लगता है। अगर मैं नर्तक न होता तो शायद इंजीनियर होता। कोई भी मशीन या यंत्र खोलकर उसके कल-पुर्जे देखने की जिज्ञासा होती है। तुम्हें जानकर हैरानी होगी कि मैं अपने ब्रीफकेस में हरदम पेचकस और दूसरे छोटे-मोटे औजार रखता हूँ। कभी अपना पंखा-फ्रिज ठीक किया तो कभी और मशीनें। बेटी-दामाद चित्रकार हैं उन्हें देख-देखकर पेंटिंग बनाने का भी शौक हो गया है। प्रायः रात बारह बजे के बाद चित्र बनाने बैठता हूँ। जब नींद से आँखें बंद होने लगती हैं तो ब्रश एक तरफ रख देता हूँ और सो जाता हूँ। पिछले दो वर्षों में लगभग सत्तर चित्र बनाए हैं।

श्रेया : अगर कोई बच्चा गाना, बजाना या नृत्य सीखना चाहे पर घर के लोग न चाहते हों तो ऐसे में क्या करना चाहिए?

बिरजू महाराज़ : आजकल के माँ-बाप से मेरी विनती है कि यदि बच्चे की रुचि है तो उसे आजकल लय के साथ खेलने दें। जैसे अन्य खेल हैं वैसे ही यह भी एक खेल है, जिसमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। इस खेल की दुनिया में संतुलन, समय का अंदाजा व सदुपयोग बच्चे के बौद्धिक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

तनुश्री : क्या आपके परिवार में लड़कियों ने कथक नहीं सीखा?

बिरजू महाराज़ : मेरी बहनों को कथक नहीं सिखाया गया पर मैंने अपनी बेटियों को खूब सिखाया। लड़कियों के पास शिक्षा या कोई-न-कोई हुनर अवश्य होना चाहिए ताकि वे आत्मनिर्भर हो सकें। हुनर ऐसा खजाना है, जिसे कोई नहीं छीन सकता और वक्त पड़ने पर काम आता है। बच्चों, तुम लोग संगीत सीखते हो? यदि नहीं तो ज़रूर सीखो। मन की शांति के लिए यह बहुत ज़रूरी है। लय हमें अनुशासन सिखाती है, संतुलन सिखाती है। नाचने, गाने और बजाने वाले एक-दूसरे के साथ तालमेल बैठाकर एक नई रचना करते हैं। सुर और लय से हमें एक-दूसरे का सहयोगी बनकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा मिलती है।

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. बिरजू महाराज को कथक की कला कैसे प्राप्त हुई?
2. उनके बचपन में कौन-सी आर्थिक कठिनाइयाँ आईं?
3. 'गड़ा बाँधना' किस बात का प्रतीक है?
4. बिरजू महाराज के अनुसार लय का जीवन में क्या महत्व है?
5. लोक नृत्य और शास्त्रीय नृत्य में क्या अंतर है?
6. बिरजू महाराज ने कथक में कौन-कौन से नए प्रयोग किए?
7. बिरजू महाराज खाली समय में क्या करना पसंद करते हैं?
8. उनके अनुसार माता-पिता को बच्चों की रुचियों के प्रति कैसा व्यवहार रखना चाहिए?

सही विकल्प चुनिए

बिरजू महाराज के पहले गुरु कौन थे?

- अ) लच्छू महाराज
- ब) शंभू महाराज
- स) अच्छन महाराज
- द) चक्रधर सिंह

कथक की शुरुआत कहाँ से मानी जाती है?

- अ) लखनऊ से
- ब) महाभारत-रामायण काल से
- स) बनारस से
- द) जयपुर से

कथक में लय का प्रयोग कैसे बताया गया है?

- अ) केवल पैरों की गति में
- ब) भाव-भंगिमा में
- स) जीवन की हर गतिविधि में
- द) मंच सजाने में

कथक के अतिरिक्त बिरजू महाराज को किसमें रुचि है?

- अ) संगीत और पेंटिंग
- ब) क्रिकेट और फुटबॉल
- स) कविता और अभिनय
- द) खाना पकाने और सिलाई में

मुहावरे अर्थ सहित वाक्य में प्रयोग कीजिए—

समय का चक्र
आँखें बंद होना
डर के मारे
मेहनत करनी

13

शब्द-भेद

हिंदी भाषा में प्रयुक्त हर शब्द का कोई-न-कोई कार्य होता है। शब्दों को उनके कार्य के आधार पर अलग-अलग वर्गों में बाँटा जाता है। इन्हीं वर्गों को **शब्द-भेद** कहा जाता है।

हिंदी में मुख्यतः 8 प्रकार के शब्द-भेद होते हैं।

क्र.	शब्द-भेद
1	संज्ञा
2	सर्वनाम
3	विशेषण
4	क्रिया
5	क्रिया-विशेषण
6	संयोजक
7	विस्मयादिबोधक
8	अव्यय

1. संज्ञा

किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

- राम एक ईमानदार लड़का है। (व्यक्तिवाचक संज्ञा - व्यक्ति का नाम)
- दिल्ली भारत की राजधानी है। (व्यक्तिवाचक संज्ञा - स्थान का नाम)
- कुत्ता भौंक रहा है।
(जातिवाचक संज्ञा - प्राणी)
- पुस्तक मेज पर रखी है।
(जातिवाचक संज्ञा - वस्तु)
- दूध सेहत के लिए अच्छा है। (द्रव्यवाचक संज्ञा)
- लड़कियाँ बगीचे में खेल रही हैं।
(समूहवाचक संज्ञा)
- ईमानदारी सबसे बड़ा गुण है। (भाववाचक संज्ञा)
- पर्वत की चोटी पर बर्फ जमी है।
(जातिवाचक संज्ञा - स्थान)

2. सर्वनाम

जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर होता है उसे सर्वनाम कहते हैं।

- मैं सुबह जल्दी उठता हूँ।
(पुरुषवाचक सर्वनाम)
- तू कहाँ जा रहा है?
(पुरुषवाचक सर्वनाम)
- वह किताब पढ़ रही है।
(पुरुषवाचक सर्वनाम)
- हम पार्क में खेलने जाएँगे। (पुरुषवाचक सर्वनाम)
- यह मेरा पसंदीदा रंग है।
(निश्चयवाचक सर्वनाम)
- कौन दरवाजे पर है?
(प्रश्नवाचक सर्वनाम)
- कोई मेरी मदद कर सकता है।
(अनिश्चयवाचक सर्वनाम)
- स्वयं ने यह काम पूरा किया। (निजवाचक सर्वनाम)
- जो मेहनत करता है, वह सफल होता है।
(संबंधवाचक सर्वनाम)
- वे कल स्कूल नहीं गए।
(पुरुषवाचक सर्वनाम)

3. विशेषण

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

उदाहरण: सुंदर, बड़ा, लाल

- यह सुंदर फूल बगीचे में है।
(गुणवाचक विशेषण)
- मेरे पास पाँच किताबें हैं। (संख्यावाचक विशेषण)
- वह लंबा लड़का मेरा भाई है। (गुणवाचक विशेषण)
- कुछ लोग बहुत मेहनती होते हैं।
(अनिश्चयवाचक विशेषण)
- यह मेरा पसंदीदा गाना है। (सार्वनामिक विशेषण)
- दूसरा रास्ता अधिक सुरक्षित है।
(संख्यावाचक विशेषण - क्रमवाचक)
- काला कुत्ता भौंक रहा है।
(गुणवाचक विशेषण)
- ज्यादा पानी पीना चाहिए। (परिमाणवाचक विशेषण)
- वही पुराना घर अभी भी खड़ा है।
(निश्चयवाचक विशेषण)
- स्वादिष्ट भोजन सभी को पसंद आया।
(गुणवाचक विशेषण)

4. क्रिया

जो कार्य को व्यक्त करे, वह क्रिया कहलाती है।

उदाहरण:

- वह पढ़ता है।
(सकर्मक क्रिया)
- बच्चे खेल रहे हैं।
(अकर्मक क्रिया)
- मैंने पत्र लिखा।
(सकर्मक क्रिया)
- वह हँसी।
(अकर्मक क्रिया)

- हम जाएँगे।
(अकर्मक क्रिया)
- उसने खाना खाया।
(सकर्मक क्रिया)
- पक्षी उड़ते हैं।
(अकर्मक क्रिया)
- मैं सोच रहा हूँ।
(अकर्मक क्रिया)
- उसने दरवाजा खोला। (सकर्मक क्रिया)
- वे नाच रहे थे।
(अकर्मक क्रिया)

5. क्रिया विशेषण

क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रिया विशेषण कहलाता है।

उदाहरण

- वह **जल्दी** दौड़ता है।
(रीतिवाचक क्रिया विशेषण)
- मैं **कल** स्कूल जाऊँगा।
(कालवाचक क्रिया विशेषण)
- बच्चे **बाहर** खेल रहे हैं।
(स्थानवाचक क्रिया विशेषण)
- वह बहुत **सुंदर** गाती है। (परिमाणवाचक क्रिया विशेषण)
- तुम **कैसे** आए?
(प्रश्नवाचक क्रिया विशेषण)
- वह **धीरे** बोलता है।
(रीतिवाचक क्रिया विशेषण)
- हम **अब** घर जाएँगे।
(कालवाचक क्रिया विशेषण)
- किताब **यहाँ** रखी है।
(स्थानवाचक क्रिया विशेषण)
- उसने **कम** खाना खाया। (परिमाणवाचक क्रिया विशेषण)
- वह **ऐसे** नाचता है जैसे कोई देख ही न रहा हो।
(रीतिवाचक क्रिया विशेषण)

6. संयोजक

दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ने वाले शब्द को संयोजक शब्द कहते हैं।

उदाहरण

- मैं किताब **और** पेन लाऊँगा।
(समुच्चयबोधक संयोजक)
- वह पढ़ना चाहता था, **लेकिन** उसे समय नहीं मिला।
(विरोधदर्शक संयोजक)
- मैं स्कूल नहीं गया, **क्योंकि** मैं बीमार था।
(कारणवाचक संयोजक)
- तुम जल्दी करो, **वरना** बस छूट जाएगी।
(विकल्पबोधक संयोजक)
- वह मेहनत करता है, **इसलिए** सफल होता है।
(कारणवाचक संयोजक)
- मैं चाय **या** कॉफी पी सकता हूँ।
(विकल्पबोधक संयोजक)
- वह थक गया था, **फिर** भी उसने काम पूरा किया।
(विरोधदर्शक संयोजक)

- तुम पढ़ाई करो ताकि अच्छे अंक ला सको।
(उद्देश्यवाचक संयोजक)
- ना वह आया और ना उसने फोन किया।
(समुच्चयबोधक संयोजक)
- बारिश हो रही थी, इसलिए हम बाहर नहीं गए।
(कारणवाचक संयोजक)

7. परसर्ग

संज्ञा या सर्वनाम से जुड़ने वाले कारक चिह्नों को परसर्ग कहते हैं।

उदाहरण :

- राम ने खाना खाया।
- मैंने सीता को किताब दी।
- वह पेन से लिखता है।
- कुर्सी कमरे में है।
- यह रमेश का घर है।
- सीता के भाई स्कूल गए।
- यह मेरी बिल्ली की पूँछ है।
- किताब मेज पर रखी है।
- मैंने माँ के लिए खाना बनाया।
- वह दिल्ली से आया।

8. विस्मयादिबोधक

ऐसे शब्द जो आश्र्य, दुख, घृणा, खुशी आदि का भाव प्रकट करे विस्मयादिबोधक शब्द कहलाते हैं।

उदाहरण :

- अरे! तुम इतनी जल्दी कैसे आ गए?
(आश्र्य)
- हाय! मेरा फोन टूट गया। (दुख)
- छी! यह जगह कितनी गंदी है। (घृणा)
- वाह! क्या सुंदर नजारा है। (खुशी/प्रशंसा)
- ओह! मैं यह बात भूल गया। (आश्र्य/खेद)
- उफ! कितनी गर्मी है। (कष्ट/शिकायत)
- बधाई! तुमने परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। (खुशी/शुभकामना)
- हा! उसने मुझे धोखा दिया। (दुख/निराशा)
- हुर्रे! हमारी टीम जीत गई। (खुशी/उत्साह)
- अच्छा! तो यह बात है। (आश्र्य/जानकारी)

अभ्यास प्रश्न

1. "राम स्कूल गया।" — इसमें 'राम' कौन-सा शब्द-भेद है?
- (i) सर्वनाम
 - (ii) क्रिया
 - (iii) संज्ञा
 - (iv) विशेषण
2. "वह अच्छा लड़का है।" — 'अच्छा' शब्द किस शब्द-भेद में आता है?
- (i) संज्ञा
 - (ii) विशेषण
 - (iii) सर्वनाम
 - (iv) क्रिया
3. "मैं खाना खा रहा हूँ।" — 'मैं' कौन-सा शब्द है?
- (i) क्रिया
 - (ii) संज्ञा
 - (iii) सर्वनाम
 - (iv) विशेषण
4. "सूरज चमक रहा है।" — 'चमक' शब्द किस शब्द-भेद में आता है?
- (i) विशेषण
 - (ii) क्रिया
 - (iii) संज्ञा
 - (iv) संयोजक
5. "वाह! क्या बात है!" — 'वाह' किस शब्द-भेद का उदाहरण है?
- (i) विशेषण
 - (ii) अव्यय
 - (iii) विस्मयादिबोधक
 - (iv) संज्ञा

14

कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य की क्रिया से जाना जाए, उसे कारक कहते हैं। वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के बाद जो चिह्न लगाए जाते हैं, उन्हें कारक चिह्न या विभक्ति चिह्न/परसर्ग कहते हैं।

उदाहरण:

- मनोज ने सेब खाया।
- शिक्षक छात्रों को पढ़ा रहे हैं।
- पिता जी बच्चों के लिए फल लाए।
- तोता डाल पर बैठा है।

इन वाक्यों में ने, को, के लिए, पर जैसे शब्द कारक चिह्न हैं जो संज्ञा या सर्वनाम को क्रिया से जोड़ने का काम करते हैं।

कारकों के भेद

हिंदी व्याकरण में कुल आठ प्रकार के कारक होते हैं:

क्रम	कारक का नाम	विभक्ति चिह्न (परसर्ग)	लक्षण / पहचान
1	कर्ता कारक	ने	क्रिया करने वाला
2	कर्म कारक	को	जिस पर क्रिया का फल पड़े
3	करण कारक	से / के द्वारा	जिससे क्रिया हो, साधन
4	संप्रदान कारक	को / के लिए	जिसके लिए कार्य हो या दिया जाए
5	अपादान कारक	से	अलग होने का भाव
6	संबंध कारक	का / की / के	दो संज्ञाओं के बीच संबंध
7	अधिकरण कारक	में / पर	क्रिया का स्थान या समय
8	संबोधन कारक	हे / अरे आदि	पुकारने या संबोधित करने हेतु

1. कर्ता कारक – ने

- ओजस्व ने पाठ पढ़ा।
- पिता जी ने खाना खाया।

3. करण कारक – से / के द्वारा

- कंस कृष्ण के द्वारा मारा गया।

2. कर्म कारक – को

- माँ ने बालक को सुलाया।
- शिक्षक ने छात्रों को पढ़ाया।

- बद्री ने आरी से लकड़ी काटी।

4. संप्रदान कारक – को / के लिए

- आयुष ने रोहन को पुस्तक दी।

5. अपादान कारक – से

- चिड़िया पेड़ से उड़ गई।
- गंगा हिमालय से निकलती है।

7. अधिकरण कारक – में / पर

- बच्चे कक्षा में बैठे हैं।
- तोता डाल पर बैठा है।

- महिला ने भूखे को भोजन दिया।

6. संबंध कारक – का, की, के / रा, री, रे

- यह मेरी किताब है।
- वह नेहा का घर है।

8. संबोधन कारक – (हे! अरे!)

- अरे बबीता! इधर आओ।
- हे ईश्वर! सबकी रक्षा करो।

कर्म कारक और संप्रदान कारक में अंतर

वाक्य	कारक
मैंने नेहा को पुस्तक दी।	संप्रदान
मैं रजत को समझाऊँगा।	कर्म

करण कारक और अपादान कारक में अंतर

वाक्य	कारक
वह कलम से लिखती है।	करण
गंगा हिमालय से निकलती है।	अपादान

अभ्यास

सही विकल्प चुनिए

संज्ञा या सर्वनाम को क्रिया से जोड़ने वाले चिह्न

कहलाते हैं

- अ) संज्ञा
- ब) सर्वनाम
- स) क्रिया
- द) कारक

‘संबोधन कारक’ के रूप में किस चिह्न का प्रयोग

किया जाता है?

- अ) |
- ब) !
- स) ;
- द) ?

कारक के भेद हैं

- अ) चार
- ब) पाँच
- स) सात
- द) आठ

‘का’ के, की चिह्न है?

- अ) संबंध कारक
- ब) अपादान कारक
- स) अधिकरण कारक
- द) संबोधन कारक

15

हिंदी में काल

काल क्रिया का वह गुण है, जो किसी कार्य के समय और अवस्था को व्यक्त करता है। हिंदी में काल तीन मुख्य प्रकार के होते हैं:

1. वर्तमान काल
2. भूतकाल
3. भविष्यत् काल

काल के प्रकार और उनके रूप

1. वर्तमान काल

वर्तमान काल वह काल है, जो कार्य के वर्तमान समय में होने को दर्शाता है। क्रिया के अंत में ता हूँ/ ती हूँ/ ते हैं / रहा हूँ/ रही हूँ/रहे हैं का अप्रयोग होता है।

उदाहरण:

- मैं पढ़ता हूँ।
- वह खेलती है।
- मैं पढ़ रहा हूँ।
- वे खेल रहे हैं।

2. भूतकाल

भूतकाल वह काल है, जो कार्य के अतीत में होने को दर्शाता है। क्रिया के अंत आ/ ई/ था/थे/ थी/ रहा था/ रहे थे/ रही थी का प्रयोग होता है।

उदाहरण:

- मैं पढ़ा।
- वह खेली।
- मैं पढ़ रहा था।
- वे खेल रहे थे।
- मैंने पढ़ लिया था।
- उसने खेल लिया था।

3. भविष्यत् काल

भविष्यत् काल वह काल है, जो कार्य के भविष्य में होने की संभावना को दर्शाता है। क्रिया के अंत गा/ गी/ गे का प्रयोग होता है।

- मैं पढ़ूँगा।
- वह खेलेगी।
- मैं कल स्कूल जाऊँगा।
- शायद वह कल आए।

अभ्यास प्रश्न

निम्नलिखित धातुओं के लिए वर्तमान, भूतकाल और भविष्यत काल में वाक्य बनाएँ:

- खाना
- खेलना
- लिखना

निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान को उचित काल से भरें:

1. मैं कल एक नई किताब _____ । (भविष्यत)
2. वह अभी अपने दोस्त से _____ । (वर्तमान)
3. हम पिछले साल गाँव _____ । (भूतकाल)

निम्नलिखित वाक्यों में काल की पहचान करें और बताएँ कि वे किस प्रकार के हैं:

1. मैंने एक पत्र लिखा ।
2. वे रोज पढ़ते हैं ।
3. शायद वह कल आए ।
4. पाँच वाक्य बनाएँ, जिसमें प्रत्येक काल (वर्तमान, भूत, भविष्यत) का उपयोग हो ।

16

विराम चिह्न

भाषा के शुद्ध और प्रभावशाली प्रयोग के लिए विराम चिह्नों का सही उपयोग अत्यंत आवश्यक होता है। जब हम कुछ बोलते हैं, तो अपने विचारों के बीच में थोड़ी देर रुकते हैं। यह रुकाव ही "विराम" कहलाता है। लिखते समय इन समय अंतराल को दिखाने के लिए कुछ विशेष चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, जिन्हें विराम चिह्न कहा जाता है। हिंदी में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख विराम चिह्न

क्रम	विराम चिह्न का नाम	चिह्न
1	अल्प विराम	,
2	अर्ध विराम	;
3	पूर्ण विराम	।
4	प्रश्नाचक चिह्न	?
5	विस्मयसूचक / संबोधनसूचक चिह्न	!
6	निर्देशक चिह्न (कोलन)	:
7	उद्धरण चिह्न	“ ”
8	योजक चिह्न (डैश, हाइफन)	- / -

1. अल्प विराम (,)

इसका प्रयोग बोलते समय बहुत थोड़े समय के लिए रुकने पर किया जाता है।

- एक जैसे शब्दों की सूची में।
- संबोधन के बाद।
- आन्तित वाक्य के आरंभ या मध्य में।

उदाहरण:

- राम, लक्ष्मण, सीता और हनुमान जंगल गए।
- मित्रों, आज परीक्षा है।
- मेरी सहेली, जो डॉक्टर है, दिल्ली में रहती है।

2. अर्ध विराम (;)

अल्प विराम से अधिक तथा पूर्ण विराम से कम ठहराव के लिए इसका प्रयोग होता है।

उपयोग के स्थान:

- किसी नियम या सिद्धांत बताने के बाद 'जैसे' शब्द से पहले।
- जब एक वाक्य के भीतर दो स्वतंत्र भाग हों, जिनमें अल्प विराम पहले ही प्रयुक्त हो चुका हो।

उदाहरण:

- नियम यह है; जैसे – समय पर विद्यालय आना आवश्यक है।
- राजेश, मोहित, अनिल स्कूल गए; सीमा, कविता घर पर ही रहीं।

3. पूर्ण विराम (!)

जब कोई वाक्य पूरी तरह समाप्त हो जाता है, तब पूर्ण विराम का प्रयोग होता है।

उदाहरण:

- रीना स्कूल जाती है।
- भारत एक महान देश है।
- यह पुस्तक मेरी है।

4. प्रश्नवाचक चिह्न (?)

प्रश्न पूछने वाले वाक्यों के अंत में इस चिह्न का प्रयोग होता है।

उदाहरण:

- तुम्हारा नाम क्या है?
- राम कहाँ गया था?
- वह क्या चाहता है?

यदि वाक्य में कई प्रश्न हों तो अंत में केवल एक ही प्रश्नवाचक चिह्न लगता है।

उदाहरण:

- वह कहाँ गया, क्यों गया और कब आएगा?

5. विस्मयसूचक / संबोधनसूचक चिह्न (!)

यह चिह्न किसी भावना को दर्शाने के लिए प्रयोग होता है – जैसे आश्र्य, दुख, हर्ष, भय, आदि।

उदाहरण:

- अरे! तुम यहाँ कैसे आ गए?
- वाह! क्या सुंदर चित्र बनाया है!
- बचाओ! साँप आ गया है!

अभ्यास

रिक्त स्थान भरें।

- प्रश्नवाचक वाक्य के अंत में _____ चिह्न लगाया जाता है।
- जब बहुत थोड़े समय के लिए रुकते हैं, तब _____ विराम का प्रयोग होता है।
- विस्मय और आश्र्य प्रकट करने के लिए _____ चिह्न प्रयोग में लाते हैं।
- पूरा वाक्य समाप्त होने पर _____ विराम लगता है।
- एक ही वाक्य में जब दो स्वतंत्र खंड हों तो _____ विराम प्रयोग करते हैं।

सही विराम चिह्न लगाइए।

- राम लक्ष्मण और भरत अयोध्या के राजकुमार थे
- अरे यह क्या हो गया
- तुम कहाँ जा रहे हो
- रीता पढ़ती है सीमा खेलती है
- श्याम एक अच्छा लड़का है

निम्न वाक्यों में प्रयुक्त विराम चिह्नों की पहचान कीजिए।

- ओ बच्चो, ध्यान से सुनो!
- उसने कहा, “मैं आज विद्यालय नहीं जाऊँगा।”
- दिल्ली, कोलकाता, मुंबई और चेन्नई महानगर हैं।
- शिक्षक बोले; सभी छात्र समय पर आएँ।
- क्या तुमने होमवर्क पूरा किया?

17

हिंदी वाक्य

वाक्य शब्दों का वह समूह है, जो मिलकर एक पूर्ण विचार व्यक्त करता है।

उदाहरण के लिए:

- राम स्कूल जाता है।
- सीता ने एक सुंदर चित्र बनाया।

वाक्य के भाग

हर वाक्य में मुख्य रूप से दो भाग होते हैं:

1. उद्देश्य: वाक्य का वह हिस्सा जो यह बताता है कि वाक्य किसके बारे में है। इसे कर्ता भी कहते हैं।

उदाहरण: "राम स्कूल जाता है।" में राम उद्देश्य है।

2. विधेय: वाक्य का वह हिस्सा जो उद्देश्य के बारे में कुछ बताता है। इसमें क्रिया और अन्य शब्द शामिल हो सकते हैं।

उदाहरण: "राम स्कूल जाता है।" में स्कूल जाता है विधेय है।

वाक्य के प्रकार

वाक्य को उनके अर्थ और उपयोग के आधार पर निम्नलिखित प्रकारों में बांटा जाता है:

1. विधानवाचक वाक्य

ये वाक्य किसी तथ्य, सूचना या जानकारी को बताते हैं।

उदाहरण:

- सूरज पूरब में उगता है।
- भारत एक विशाल देश है।

2. प्रश्नवाचक वाक्य

ये वाक्य प्रश्न पूछने के लिए उपयोग किए जाते हैं। इनमें प्रायः प्रश्नसूचक शब्द जैसे क्या, कौन, कहाँ, कब आदि होते हैं।

उदाहरण:

- तुम स्कूल कब जाओगे?
- यह पुस्तक किसकी है?

3. आज्ञार्थक वाक्य

ये वाक्य आदेश, अनुरोध या सलाह देने के लिए उपयोग होते हैं।

उदाहरण:

- अपनी किताबें मेज पर रखो।
- कृपया दरवाजा बंद कर दें।

4. विस्मयादिबोधक वाक्य

ये वाक्य आश्चर्य, खुशी, दुख या उत्साह जैसे भावनाओं को व्यक्त करते हैं।

उदाहरण:

- वाह! कितना सुंदर दृश्य है!
- हाय! मुझे बहुत दुख हुआ।

5. इच्छार्थक वाक्य

ये वाक्य इच्छा, कामना या शुभकामना व्यक्त करते हैं।

उदाहरण:

- भगवान् तुम्हें सुखी रखे।
- काश मैं वहाँ होता!

रचना के आधार पर वाक्य के प्रकार

वाक्यों को उनकी संरचना के आधार पर तीन प्रकारों में बांटा जाता है:

1. सरल वाक्य: इसमें केवल एक उद्देश्य और एक विधेय होता है।

उदाहरण:

- मीना ने खाना खाया।

2. संयुक्त वाक्य: इसमें दो या अधिक सरल वाक्य संयोजक शब्दों (और, लेकिन, या) से जुड़े होते हैं।

उदाहरण:

- मैं स्कूल गया और वहाँ अपने दोस्तों से मिला।

3. मिश्र वाक्य: इसमें एक मुख्य वाक्य और एक या अधिक आश्रित वाक्य होते हैं।

उदाहरण:

- जब बारिश हुई, तब हम घर में रहे।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित वाक्यों को उनके प्रकार के आधार पर पहचानें:

1. अरे! कितना सुंदर फूल है!
2. तुम्हारा नाम क्या है?
3. कृपया अपनी किताबें लाओ।
4. सूरज पश्चिम में डूबता है।
5. काश मैं उड़ सकता!

2. निम्नलिखित वाक्यों में उद्देश्य और विधेय छाँटें:

1. राधा ने एक गीत गाया।
 2. बच्चे पार्क में खेल रहे हैं।
3. पाँच सरल, पाँच संयुक्त और पाँच मिश्र वाक्य बनाएँ।

18

‘र’ के विभिन्न

1. ‘र’ का स्वतंत्र रूप

‘र’ हिंदी वर्णमाला का एक व्यंजन है, जिसे स्वतंत्र रूप में लिखा जाता है, जैसे:

- राम, रोटी, रंग

यहाँ ‘र’ अपने मूल रूप में है और स्वर (जैसे अ, आ, इ) के साथ मिलकर शब्द बनाता है।

2. ‘र’ के पदेन रूप में प्रयोग

जब ‘र’ किसी व्यंजन के बाद आता है, तो यह उस व्यंजन के नीचे या बाद में एक विशेष चिह्न (/) एवं () के रूप में लिखा जाता है, जिसे पदेन या र-कार का नीचे वाला रूप कहते हैं। यह व्यंजन के नीचे तिरछी रेखा के साथ होता है।

लिखने का तरीका: पहले व्यंजन लिखा जाता है, फिर उसके नीचे र-कार का चिह्न लगाया जाता है।

उदाहरण:

- क् + र = क्र
- प् + र = प्र

उदाहरण शब्द:

- क्रोध (क् + र + ओ + ध = क्रोध)
- प्रेम (प् + र + ए + म = प्रेम)
- ग्राम (ग् + र + आ + म = ग्राम)

उच्चारण: पदेन में पहले व्यंजन का उच्चारण होता है, फिर ‘र’ का। जैसे, प्रेम में पहले ‘प’ फिर ‘र’।

द्, ट्, ड् एवं ढ् जैसे व्यंजन के साथ यह नीचे लगता है, जैसे:

- द् + र = द्र (उदाहरण: द्रव, द्रष्टि)
- ट् + र = ट्र (उदाहरण: ट्रेन, ट्रक)
- ड् + र = ड्र (उदाहरण: ड्रम)

3. रेफ (ऊपर लगने वाला र)

जब 'र' किसी व्यंजन से पहले आता है, तो यह उस व्यंजन के ऊपर एक विशेष चिह्न के रूप में लिखा जाता है, जिसे रेफ कहते हैं। रेफ (र का हलात रूप) को साथ प्रयोग होने वाले अन्य व्यंजन के ऊपर एक वक्र रेखा के रूप में दर्शाया जाता है।

उदाहरण:

- र + क = कं (जैसे कर्कश में)
- र + व = वं (पं, जैसे पर्वत में)

उच्चारण: रेफ में 'र' का उच्चारण पहले होता है, फिर आने वाले व्यंजन का। जैसे, कर्म में पहले 'क' के बाद 'र' फिर 'म' का उच्चारण होता है।

रेफ और पदेन में अंतर

आधार	रेफ	पदेन
स्थान	'र' पहले, व्यंजन बाद में	'र' बाद में, व्यंजन पहले
चिह्न	ऊपर वक्र रेखा (नीचे तिरछी रेखा
उदाहरण	कर्म (र्म)	प्रेम (प्र), क्रोध (क्र)
उच्चारण	'र' पहले, फिर व्यंजन	व्यंजन पहले, फिर 'र'

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों में रेफ और पदेन की पहचान करें:

1. प्रणाम
2. क्रिया
3. सर्वनाम

2. रेफ और पदेन का उपयोग कर पाँच शब्द बनाएँ।

3. निम्नलिखित शब्दों को रेफ या पदेन में तोड़ें:

1. कर्म
2. प्रिय
3. ग्रह

एक या अनेक वर्षों के मेल से निर्मित स्वतंत्र एवं सार्थक रूप ही शब्द कहलाता है। जैसे - एक वर्ण से निर्मित शब्द-न (नहीं) व (और), अनेक वर्षों से निर्मित शब्द- कुत्ता, शेर, कमल, नयन, प्रासाद, सर्वव्यापी, परमात्मा, बालक, कागज, कलम आदि।

शब्दों का वर्गीकरण

शब्द भाषा की आत्मा हैं। वे न केवल विचारों को व्यक्त करते हैं, बल्कि संस्कृति, इतिहास और सामाजिक मूल्यों को भी संजोए रखते हैं। हिंदी में तत्सम और तद्व शब्द संस्कृत की समृद्ध विरासत को दर्शाते हैं, जबकि देशज और विदेशी शब्द हिंदी की समावेशी प्रकृति को उजागर करते हैं। शब्दों का सही प्रयोग भाषा को समृद्ध और प्रभावी बनाता है।

उत्पत्ति के आधार पर-

- तत्सम शब्द:** ये शब्द संस्कृत से सीधे हिंदी में लिए गए हैं और इनका रूप मूल रूप में ही रहता है। उदाहरण: अग्नि, जल, मित्र।
- तद्व शब्द:** ये शब्द भी संस्कृत से आए हैं, लेकिन समय के साथ इनका रूप और उच्चारण बदल गया है। उदाहरण: दस्तावेज़ में कई तद्व शब्दों के उदाहरण दिए गए हैं, जैसे: आग, पानी, मीत।
- देशज शब्द:** ये शब्द भारतीय उपमहाद्वीप की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में आए हैं। उदाहरण: खटिया, लोटा, पगड़ी, काका, झोला, पक्का।
- विदेशी शब्द:** ये शब्द अन्य भाषाओं जैसे अरबी, फारसी, पुर्तगाली, अंग्रेजी आदि से हिंदी में शामिल हुए हैं। उदाहरण: स्कूल, टेलीविजन, कुर्सी, टिकट, पेंट।
- संकर शब्द:** ये शब्द दो या अधिक भाषाओं के मिश्रण से बने हैं। उदाहरण: रेलगाड़ी, टेलीफोन।

रचना के आधार पर

- रुढ़ शब्द:** ये शब्द अपने मूल अर्थ में प्रयोग होते हैं और इन्हें छोटे हिस्सों में नहीं तोड़ा जा सकता। उदाहरण: घर, पेड़, पानी।
- यौगिक शब्द:** ये शब्द दो या अधिक शब्दों के योग से बनते हैं। उदाहरण: रसोईघर, गंगाजल।

3. योगरूढ़ शब्द: ये शब्द यौगिक होते हैं, लेकिन इनका अर्थ शब्दों के योग से नहीं, बल्कि एक निश्चित अर्थ में रुढ़ हो जाता है।

उदाहरण: पंकज (कीचड़ में उत्पन्न होने वाला, अर्थात् कमल)।

अर्थ के आधार पर

1. लक्षणा शब्द: ये शब्द अपने मूल अर्थ के अतिरिक्त किसी अन्य अर्थ में प्रयोग होते हैं।

उदाहरण: "मुंह" का अर्थ चेहरा होता है, लेकिन "मुंह बंद करो" में इसका अर्थ बोलना बंद करना है।

2. व्यंजना शब्द: ये शब्द अपने अर्थ के साथ-साथ कोई निहित अर्थ भी व्यक्त करते हैं।

उदाहरण: "वह शेर है" में शेर का अर्थ साहसी व्यक्ति है।

प्रयोग के आधार पर

1. संज्ञा: जो शब्द किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु या भाव के नाम को दर्शाते हैं।

उदाहरण: राम, दिल्ली, पुस्तक, प्रेम।

2. सर्वनाम: ये शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग होते हैं।

उदाहरण: मैं, तुम, वह।

3. विशेषण: ये शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं।

उदाहरण: सुंदर, बड़ा, अच्छा।

4. क्रिया: ये शब्द किसी कार्य, स्थिति या भाव को दर्शाते हैं।

उदाहरण: चलना, खाना, सोना।

5. अव्यय: ये शब्द कभी परिवर्तित नहीं होते।

उदाहरण: और, लेकिन, क्योंकि।

दस्तावेज़ में अव्यय के प्रकारों का उल्लेख है,

जैसे:

- समुच्चय बोधक (उदाहरण: और, तथा)
- सम्बन्ध बोधक (उदाहरण: का, के, की)
- विस्मयादिबोधक (उदाहरण: अरे!, ओह!)

विकार के आधार पर शब्द

जो शब्द अपने रूप में परिवर्तन करते हैं और वाक्य में दूसरे शब्दों के साथ संबंध स्थापित करते हैं, उन्हें **विकारी शब्द** कहते हैं। विकारी शब्दों में लिंग, वचन, काल, पुरुष आदि के अनुसार परिवर्तन होता है।

जिन शब्द के रूप में परिवर्तन नहीं होता हैं, उन्हें **अविकारी शब्द** कहते हैं। क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक शब्द अविकारी शब्द होते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. तत्सम और तद्व शब्दों में क्या अंतर है? उदाहरण सहित समझाइए।
2. हिंदी भाषा में विदेशी शब्दों का क्या महत्व है?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द तद्व शब्द का उदाहरण है?

- अ) अग्नि
- ब) आलस्य
- स) विद्या
- द) पुत्र

दस्तावेज़ में उल्लिखित "गृह" का तद्व रूप क्या है?

- अ) घर
- ब) गृह
- स) गहरा
- द) गहना

निम्नलिखित में से कौन-सा अव्यय का प्रकार है?

- अ) संज्ञा
- ब) समुच्चय बोधक
- स) सर्वनाम
- द) विशेषण

"पंकज" शब्द किस प्रकार का शब्द है?

- अ) रूढ़
- ब) यौगिक
- स) योगरूढ़
- द) तत्सम

निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द विदेशी शब्द है?

- अ) खटिया
- ब) स्कूल
- स) गंगाजल
- द) भांजा

शब्द कहते हैं

- अ) वर्गों के समूह को
- ब) वर्गों के सार्थक मेल को
- स) वाक्य में प्रयुक्त शब्दों को
- द) इन सभी को

विकार के आधार पर शब्दों के भेद होते हैं

- अ) दो
- ब) तीन
- स) चार
- द) पाँच

कौन-सा शब्द तद्व नहीं है?

- अ) कुम्हार
- ब) पिंजरा
- स) हाथी
- द) मयूर

तद्व शब्द होते हैं —

- अ) संस्कृत से कुछ बदलकर हिंदी में आने वाले
- ब) हिंदी से बदलकर संस्कृत में आने वाले
- स) विदेशी भाषा से आने वाले
- द) दो भाषाओं से मिलकर बने शब्द

‘मनुष्य’ शब्द किस प्रकार का है?

- अ) तत्सम
- ब) देशज
- स) तद्वाव
- द) आगत

उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के भेद होते हैं

- अ) तीन
- ब) दो
- स) चार
- द) पाँच

निम्न में से कौन-सा रूढ़ शब्द है?

- अ) पाठशाला
- ब) पंकज
- स) पुस्तक
- द) पुस्तकालय

यौगिक शब्दों की विशेषता है

- अ) एक दूसरे पर निर्भर होते हैं
- ब) यौगिक और रूढ़ दोनों होते हैं
- स) रूढ़ होते हैं
- द) दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बनते हैं

रिक्त स्थान भरें

1. जो शब्द दूसरी भाषा के हो, उन्हें _____ शब्द कहते हैं।
2. तत्सम शब्द _____ भाषा से बिना परिवर्तन के लिए गए शब्द होते हैं।
3. क्रियाविशेषण एक _____ शब्द होता है।
4. “पुस्तकालय” एक _____ शब्द है।
5. “नीलकंठ” एक _____ शब्द है।

सही जोड़ी मिलाइए

A	B
1. तत्सम शब्द	• रेडियो, स्टेशन
2. तद्वाव शब्द	• क्रियाविशेषण
3. विदेशी शब्द	• दुग्ध, कवि
4. अविकारी शब्द	• गाँव, साँप

20

उपसर्ग और प्रत्यय

उपसर्ग-

उपसर्ग वे शब्दांश या अक्षर होते हैं, जो किसी शब्द के आगे जोड़े जाते हैं ताकि उसका अर्थ बदला जाए या नया अर्थ प्राप्त हो। उपसर्ग मूल शब्द का हिस्सा नहीं होता, लेकिन इसके जुड़ने से शब्द का अर्थ बदल जाता है।

उदाहरण:

- सु + जन = सुजन (अच्छा व्यक्ति)
- अ + ज्ञान = अज्ञान (ज्ञान का अभाव)
- परा + जय = पराजय (जिसकी जय न हो अर्थात हारा हुआ)
- वि + देश = विदेश (बाहर का देश)
- बे + कार = बेकार (बिना काम का)
- ना + पसंद = नापसंद (पसंद न करना)

प्रत्यय-

प्रत्यय वे शब्दांश या अक्षर होते हैं, जो किसी शब्द के अंत में जोड़े जाते हैं ताकि उसका अर्थ या रूप बदला जाए। प्रत्यय के जुड़ने से नए शब्द बनते हैं, जो प्रायः भिन्न व्याकरणिक श्रेणी के हो सकते हैं।

उदाहरण:

- सुंदर + ता = सुंदरता
- लड़का + पन = लड़कपन
- मानव + ता = मानवता
- बच्चा + पन = बचपन

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग और मूल शब्द

अलग करें:

- असत्य
- सुसंस्कार
- परिपक्व

2. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय और मूल शब्द

अलग करें:

- बचपन
- दुकानवाला
- अच्छाई

3.निम्नलिखित उपसर्गों और प्रत्ययों का उपयोग करके नए शब्द बनाएँ:

- अ) उपसर्ग: सु-, प्र-, बे-
- ब) प्रत्यय: -पन, -वाला, -ता

4.दिए गए वाक्यों में उपसर्ग और प्रत्यय वाले शब्द छाँटें:

- अ) राम ने सुंदर लिखाई की ।
- ब) बचपन में सभी खेलते हैं ।

‘संधि’ का शाब्दिक अर्थ है- मेल या जोड़, जब दो वर्ण मिलकर एक नया रूप बनाते हैं, तो इस प्रक्रिया को संधि कहते हैं।

- उदाहरण-

राम + ईश्वर = रामेश्वर

यहाँ ‘राम’ शब्द ‘ईश्वर’ से जुड़कर एक नया शब्द बना- रामेश्वर।

संधि के प्रकार

हिंदी में संधि तीन प्रकार की होती है:

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

स्वर संधि-

जब दो स्वर (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ....) मिलते हैं और उनके मिलने से शब्द का रूप बदलता है, तो उसे स्वर संधि कहते हैं।

स्वर संधि के पाँच प्रकार हैं :

1. दीर्घ संधि-

यदि हस्त या दीर्घ अ, इ, उ तथा 'ऋ' स्वरों के पश्चात् हस्त या दीर्घ अ, इ, उ या ऋ स्वर आएँ तो दोनों मिलकर क्रमशः आ, ई, ऊ तथा ऋ हो जाते हैं।

- अ/आ + आ/अ = आ
- इ/ई + ई/इ = ई
- उ/ऊ + ऊ/उ = ऊ
- ऋ/ऋ + ऋ/ऋ = ऋ

उदाहरण-

- पुस्तक + आलय = पुस्तकालय
- देव + आशीष = देवाशीष
- दैत्य + अरि = दैत्यारि
- विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
- कपि + ईश = कपीश
- नदी + ईश = नदीश
- लक्ष्मी + ईश्वर = लक्ष्मीश्वरः
- सु + उक्ति = सूक्तिः
- भानु + उदय = भानूदय

2. गुण संधि-

यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' आए दोनों के स्थान पर 'ए' हो जाता है। इसी तरह यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'उ' या 'ऊ' आए तो दोनों के स्थान पर 'ओ' एकादेश हो जाते हैं। इसी तरह 'अ' या 'आ' के बाद यदि 'ऋ' आए तो दोनों के स्थान पर 'अर्' एकादेश हो जाता है।

उदाहरण-

- अ/आ + इ/ई = 'ए'
- उप + इंद्र = उपेंद्र
- देव + इंद्र = देवेंद्र
- गण + ईश = गणेश
- महा + ईश = महेश
- नर + ईश = नरेश
- सुर + ईश = सुरेश
- सूर्य + उदय = सूर्योदय
- नर + उत्तम = नरोत्तम
- हित + उपदेश = हितोपदेश
- महा + उत्सव = महोत्सव
- अ/आ + ऋ/ऋ = अर्
- देव + ऋषि = देवर्षि

3. वृद्धि संधि-

यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आए तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' हो जाता है। इसी तरह 'अ' या 'आ' के बाद 'ओ' या 'औ' आए तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है।

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

उदाहरण-

- तथा + एव = तथैव
- सदा + एव = सदैव
- अ/आ + ओ/औ = औ
- जल + ओघ = जलौघ

4. यण संधि-

जब इ, ई, उ, ऊ, ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आता है (अर्थात् वही स्वर न हो), तो इनका रूप क्रमशः य्, व्, र् हो जाता है।

उदाहरण-

- यदि + अपि = यद्यपि
- इति + आदि = इत्यादि
- अति + आचार = अत्याचार
- सु + आगत = स्वागत
- अनु + अय = अन्वय
- अनु + एषण = अन्वेषण

5. अयादि संधि

जब ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई अन्य स्वर आता है, तो वे अय्, आय्, अव्, आव् में बदल जाते हैं।

संधि	परिणाम	उदाहरण
ए + अ	अय	ने + अन = नयन
ऐ + अ	आय	गै + अक = गायक
ओ + अ	अव	पो + अन = पवन
औ + अ	आव	पौ + अन = पावन

व्यंजन संधि-

जब व्यंजन, व्यंजन से या व्यंजन स्वर से मिलते हैं तब शब्द में परिवर्तन होता है, तो उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

उदाहरण-

- सत् + जन = सज्जन
- जगत् + ईश = जगदीश
- सम् + पूर्ण = संपूर्ण

विसर्ग संधि-

जब विसर्ग (ः) के बाद कोई स्वर या व्यंजन आता है, तो उसका रूप बदल जाता है, इसे विसर्ग संधि कहते हैं।

उदाहरण-

- मनः + पूर्ण = मनोपूर्ण
- दुः + कर्म = दुष्कर्म
- निः + छल = निश्छल

अभ्यास प्रश्न

सही संधि शब्द चुनिए:

1. सत्य + आग्रह =

- (क) सत्याग्रह
- (ख) सत्य्रह
- (ग) सत्कार
- (घ) सत्यग्रह

2. वीर + उचित =

- (क) वीरुचित
- (ख) वीरोचित
- (ग) वीरचित
- (घ) वीरुचित

3. जल + ऊर्मि =

- (क) जलुर्मि
- (ख) जलौर्मि
- (ग) जलोर्मि
- (घ) जलूर्मि

सही संधि विग्रह बताइए:

1. विद्यालय =

2. महेंद्र =

3. यथार्थ =

4. सदैव =

5. स्वागत =

रिक्त स्थान भरें:

1. नर + ईश = _____

2. महा + आत्मा = _____

3. सु + उक्त = _____

4. यदि + अपि = _____

5. पो + अन = _____

जब दो या दो से अधिक शब्द मिलकर एक नया शब्द बनाते हैं तब उसे **समास** कहते हैं।

उदाहरण:

- रसोई के लिए घर = रसोईघर
- विद्या के लिए आलय (स्थान) = विद्यालय

समस्त पद – समास बनने के बाद जो नया शब्द बनता है, उसे **समस्त पद** या **सामासिक पद** कहते हैं।

समास-विग्रह – समस्त पद को फिर से अपने मूल रूप में लाने की प्रक्रिया को **समास-विग्रह** कहते हैं।

समस्त पद	समास विग्रह
विद्यालय	विद्या के लिए आलय
विश्रामगृह	विश्राम के लिए गृह

समास के चार मुख्य प्रकार:

- अव्ययीभाव समास
- तत्पुरुष समास
- द्वंद्व समास
- बहुब्रीहि समास

1. अव्ययीभाव समास

जिस समास में पहला शब्द प्रधान हो और समस्त पद अव्यय (जिसमें कोई परिवर्तन न हो) हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

समस्त पद	समास विग्रह	पहला शब्द	दूसरा शब्द
आजन्म	जन्म भर	आ	जन्म
प्रतिदिन	हर दिन	प्रति	दिन

2. तत्पुरुष समास

जिस समास में दूसरा शब्द प्रधान हो और कारक चिह्न का लोप हो जाए, वह तत्पुरुष समास कहलाता है।

देशभक्ति	देश के लिए भक्ति
हस्तलिखित	हस्त (हाथ) से लिखित
गगनचुंबी	गगन को चूमने वाला
रोगमुक्त	रोग से मुक्त
राजकुमार	राजा का कुमार
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश

तत्पुरुष समास के दो प्रमुख उपभेदः

(i) कर्मधारय समास

पहला शब्द विशेषण, दूसरा शब्द विशेष्य होता है।

पीतांबर = पीत (पीला) अंबर

(ii) द्विगु समास

पहला शब्द संख्यावाचक विशेषण होता है, और समस्त पद समूह का बोध कराता है।

- नवरत्न = नौ रत्नों का समूह
- चौराहा = चार राहों का समूह

3. द्वंद्व समास

जिस समास में दोनों शब्द समान रूप से प्रधान हों, और उनके बीच के 'और' का लोप हो जाए, उसे द्वंद्व समास कहते हैं।

समस्त पद	समास विग्रह
दाल-भात	दाल और भात
राम-लक्ष्मण	राम और लक्ष्मण

4. बहुब्रीहि समास

जिस समास में कोई भी शब्द प्रधान नहीं होता, और दोनों मिलकर किसी तीसरे का बोध कराते हैं, वह बहुब्रीहि समास कहलाता है।

समस्त पद	समास विग्रह	संकेत
पीतांबर	पीत अंबर है जिसका	श्रीकृष्ण
नीलकंठ	नीला कंठ है जिसका	भगवान शिव
चक्रपाणि	चक्र है हाथ में जिसके	भगवान विष्णु

अभ्यास प्रश्न

1. जिसमें पहला शब्द संख्या होता है

- अ) द्विगु समास
- ब) द्वंद्व समास
- स) तत्पुरुष समास
- द) कर्मधारय समास

2. जिसमें विशेषण और विशेष्य साथ होते हैं

- अ) अव्ययीभाव समास
- ब) बहुब्रीहि समास
- स) कर्मधारय समास
- द) द्विगु समास

3. जिसमें पहला शब्द प्रधान होता है

- अ) कर्मधारय समास

- ब) द्विगु समास
स) अव्ययीभाव समास
द) तत्पुरुष समास

4. समास के कुल मुख्य भेद होते हैं

- अ) दो

5. तत्पुरुष समास के उपभेद हैं

- अ) चार
ब) पाँच
स) छह
द) सात

7. चक्र है हाथ में जिसके, यह समास है —

- अ) बहुब्रीहि
ब) कर्मधार्य
स) अव्ययीभाव
द) तत्पुरुष

- ब) तीन
स) चार
द) पाँच

6. 'नौ रात्रियों का समूह' समास है —

- अ) द्वंद्व समास
ब) अव्ययीभाव समास
स) द्विगु समास
द) कर्मधार्य समास

8. 'नीलांबर' शब्द का समास है —

- अ) तत्पुरुष
ब) कर्मधार्य
स) अव्ययीभाव
द) बहुब्रीहि

1. समास की परिभाषा लिखिए और उसके चार भेदों के नाम बताइए।
2. तत्पुरुष समास के किसी तीन उपभेदों का उदाहरण सहित विवरण दीजिए।
3. बहुब्रीहि और कर्मधार्य समास में अंतर स्पष्ट कीजिए।
4. द्विगु समास की विशेषताएँ क्या हैं? उदाहरण दीजिए।

5. निम्नलिखित समस्त पदों का समास विग्रह कीजिए:

- राजपुत्र
- मातृभक्ति
- रसोईघर
- चतुर्भुज
- जलपान

23

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

जब एक शब्द किसी लंबे वाक्यांश या कई शब्दों के अर्थ को व्यक्त करता है, तो उसे अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहते हैं। ये शब्द हिंदी भाषा को समृद्ध और संक्षिप्त बनाते हैं, जिससे लेखन और बोलचाल में प्रभावशीलता बढ़ती है। उदाहरण के लिए, "चार रास्तों का संगम स्थल" के स्थान पर केवल "चौराहा" कहना भाषा को सरल और आकर्षक बनाता है।

नीचे कुछ सामान्य उदाहरण दिए गए हैं, जो अनेक शब्दों या वाक्यांशों के लिए एक शब्द को दर्शाते हैं। ये उदाहरण रोजमरा के उपयोग और विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त हैं।

क्र	वाक्यांश/अनेक शब्द	एक शब्द
1.	चार रास्तों का संगम स्थल	चौराहा
2.	मिट्टी के बर्तन बनाने वाला	कुम्हार
3.	पर्वत पर रहने वाला	पर्वतीय
4.	जिसमें बल न हो	निर्बल
5.	जिसका दोष हो	दोषी
6.	जो आँखों के सामने हो	प्रत्यक्ष
7.	जो बहुत बोलता हो	वाचाल
8.	जो कम बोलता हो	अल्पभाषी
9.	जो बोलता न हो	मूँक
10.	जो मधुर बोलता हो	मृदुभाषी
11.	जिसमें बल हो	सबल
12.	जिसमें कम बल हो	दुर्बल
13.	जिसका दोष न हो	निर्दोष
14.	जानवरों को चराने वाला	चरवाहा
15.	जानने की इच्छा रखने वाला	जिज्ञासु
16.	जिसके मातापिता हों	सनाथ
17.	जिसके मातापिता न हों	अनाथ
18.	जिसमें शर्म न हो	बेशर्म
19.	काम से जी चुराने वाला	कामचोर

20.	माँ स खाने वाला	माँ साहारी
21.	सप्ताह में एक बार होने वाला	साप्ताहिक
22.	दिन में एक बार होने वाला	दैनिक
23.	महीने में एक बार होने वाला	मासिक
24.	वर्ष में एक बार होने वाला	वार्षिक
25.	काम करने वाला	कर्मठ
26.	गाँव में रहने वाला	ग्रामीण
27.	किए उपकार को मानने वाला	कृतज्ञ
28.	किए उपकार को न मानने वाला	कृतघ्न
29.	जो देखने योग्य हो	दर्शनीय
30.	जो पढ़ने योग्य हो	पठनीय
31.	जिसमें रस न हो	नीरस
32.	शहर में रहने वाला	शहरी
33.	जो गाना गाती हो	गायिका
34.	विज्ञान से संबंध रखने वाला	वैज्ञानिक
35.	इतिहास से संबंध रखने वाला	ऐतिहासिक
36.	समाजसेवा करने वाला	समाजसेवक
37.	जो पुरुष कविता रचता है	कवि
38.	जो स्त्री कविता रचती है	कवयित्री
39.	जो गाना गाता हो	गायक
40.	शरण में आया हुआ	शरणागत
41.	अत्याचार करने वाला	अत्याचारी
42.	जंगल में रहने वाला	जंगली
43.	जल में रहने वाला	जलचर
44.	भाषण देने वाला	वक्ता
45.	भाषण सुनने वाला	श्रोता
46.	जो कभी न मरे	अमर
47.	जो कभी बूढ़ा न हो	अजर
48.	जहाँ जाना कठिन हो	दुर्गम
49.	जिसे पाना कठिन हो	दुर्लभ

50.	जो आसानी से प्राप्त हो सके	सुलभ
51.	शिक्षा देने वाला	शिक्षक
52.	शिक्षा पाने वाला	शिष्य
53.	संसद का सदस्य	सांसद
54.	जिसके नीचे रेखा हो	रेखांकित
55.	ईश्वर में आस्था रखने वाला	आस्तिक
56.	ईश्वर पर विश्वास न रखने वाला	नास्तिक

वाक्य में प्रयोगयह स्थान दर्शनीय है।

- वह व्यक्ति कामचोर है।
- जिज्ञासु बच्चे ने शिक्षक से कई प्रश्न पूछे।
- वह वाचाल है और घंटों बात कर सकता है।

अभ्यास प्रश्न

निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखें:

- जो बहुत बोलता हो
- जिसके माता-पिता न हों
- जो गाना गाती हो
- जिसमें रस न हो
- जो कभी न मरे

निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान को उचित "एक शब्द" से भरें:

- वह हमेशा दूसरों की मदद करता है, वह एक _____ व्यक्ति है।
- यह जगह इतनी सुंदर है कि _____ है।
- वह _____ है और कभी झूठ नहीं बोलता।

दिए गए "एक शब्द" का उपयोग करके वाक्य बनाएँ:

- कवयित्री
- सासाहिक
- जलचर
- शिक्षक
- मूक

24

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

मुहावरे और लोकोक्तियाँ हिंदी भाषा के महत्वपूर्ण अंग हैं, जो भाषा को रोचक, प्रभावशाली और समृद्ध बनाते हैं। ये शब्द-समूह सामान्य अर्थ से भिन्न, विशेष अर्थ व्यक्त करते हैं और रोजमरा के जीवन, संस्कृति और अनुभवों को दर्शाते हैं।

मुहावरे -

मुहावरे शब्दों का वह समूह है, जो अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर विशेष या विशिष्ट अर्थ व्यक्त करते हैं। ये भाषा में लाक्षणिक अर्थ जोड़ते हैं और किसी स्थिति, भावना या कार्य को प्रभावी ढंग से व्यक्त करते हैं।

मुहावरे

अंधेरे में तीर चलाना
आँखों में धूल झोंकना

अर्थ

बिना सोचे-समझे काम करना।
किसी को धोखा देना।

लोकोक्तियाँ -

लोकोक्तियाँ वे कथन हैं, जो लोकानुभव, नैतिकता या जीवन के किसी सत्य को संक्षेप में व्यक्त करते हैं। ये सामान्यतः पूर्ण वाक्य के रूप में होती हैं और समाज में प्रचलित ज्ञान या सलाह को दर्शाती हैं।

लोकोक्ति

पाप का घड़ा जल्दी भरता है:
जैसी करनी वैसी भरनी

अर्थ

पापी का अंत जल्दी होता है।
जैसा कर्म करोगे, वैसा फल मिलेगा।

1.	मुँह में पानी आना: लालच पैदा होना।	वाक्य: स्वादिष्ट मिठाई देखकर मेरे मुँह में पानी आ गया।
2.	अकल का दुश्मन: मूर्ख व्यक्ति।	वाक्य: वह अपनी गलतियों से नहीं सीखता, सचमुच अकल का दुश्मन है।
3.	अंधे की लाठी: एकमात्र सहारा।	वाक्य: बुढ़ापे में उसका बेटा उसकी अंधे की लाठी है।
4.	आँखों में धूल झोंकना: धोखा देना।	वाक्य: उसने सस्ता सामान बेचने का वादा करके मेरी आँखों में धूल झोंकी।
5.	दुविधा में रहना: संदेह या असमंजस में होना।	वाक्य: नौकरी चुनने के लिए वह दुविधा में रहता है।
6.	आँसुओं में डूबना: बहुत दुखी होना।	वाक्य: अपने दोस्त की मृत्यु सुनकर वह आँसुओं में डूब गया।

7.	अंधा बांटे रेवड़ी; बिना सोचे-समझे कुछ बांटना	वाक्य: उसने अंधा बांटे रेवड़ी की तरह सारा पैसा दान कर दिया।
8.	आस्तीन का साँपः विश्वासघाती व्यक्ति।	वाक्य: वह उसका दोस्त बनकर आस्तीन का साँप निकला।

नीचे कुछ लोकोक्तियाँ और उनके अर्थ दिए गए हैं:

- पाप का घड़ा जल्दी भरता है: पाप करने वाले का अंत जल्दी होता है।
वाक्य: उसने कई गलत काम किए, लेकिन पाप का घड़ा जल्दी भरता है, और उसे सजा मिल गई।
- जैसी करनी वैसी भरनी: जैसा कर्म करोगे, वैसा फल मिलेगा।
वाक्य: उसने हमेशा दूसरों की मदद की, क्योंकि वह मानता है कि जैसी करनी वैसी भरनी।

अभ्यास प्रश्न

निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताएँ और प्रत्येक का एक-एक वाक्य बनाएँ:

1. मुँह में पानी आना
2. अकल का दुश्मन
3. आँखों में धूल झोकना
4. अंधे की लाठी

निम्नलिखित लोकोक्तियों का अर्थ बताएँ और प्रत्येक का एक-एक वाक्य बनाएँ:

1. जैसी करनी वैसी भरनी
2. पाप का घड़ा जल्दी भरता है
3. पूत के पाँव पालने में दिख जाते हैं

निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान को उचित मुहावरे या लोकोक्ति से भरें:

1. उसने मुझे धोखा देकर _____ किया।
2. उसकी मेहनत का फल मिला, क्योंकि _____।

25

हिंदी में पत्र लेखन

आवेदन पत्र

जब हम किसी अधिकारी, संस्था या शिक्षक से किसी कार्य की अनुमति, छूट या निवेदन करना चाहते हैं, तो हम आदरपूर्वक एक औपचारिक पत्र लिखते हैं, जिसे आवेदन पत्र कहते हैं।

आवेदन पत्र के मुख्य भाग :

- प्रेषक का नाम और पता : पत्र के ऊपर बाईं ओर अपना नाम और पता लिखें
- तारीख
- जिसे पत्र लिखा जा रहा है उसका पद और पता
- विषय: जिससे पता चले पत्र किस बारे में है
- संबोधन : "महोदय/महोदया" से पत्र शुरू करें
- मुख्य पत्र
- शुभकामना/निवेदनात्मक पंक्ति
- आपका नाम, कक्षा, रोल नंबर आदि
- हस्ताक्षर

उदाहरण :

सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय / महोदया,
राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,
भोपाल (म. प्र.).

दिनांक: 27 मई 2025

विषय: तीन दिनों के अवकाश हेतु आवेदन।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मेरा नाम रोहित कुमार है, मैं कक्षा 6 का छात्र हूँ। मुझे कुछ व्यक्तिगत कारणों से दिनांक 28 मई से 30 मई 2025 तक विद्यालय से अवकाश चाहिए।

मैं आशा करता हूँ कि आप मेरी प्रार्थना स्वीकार कर मुझे अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।

आपका आज्ञाकारी छात्र,

नाम: रोहित कुमार

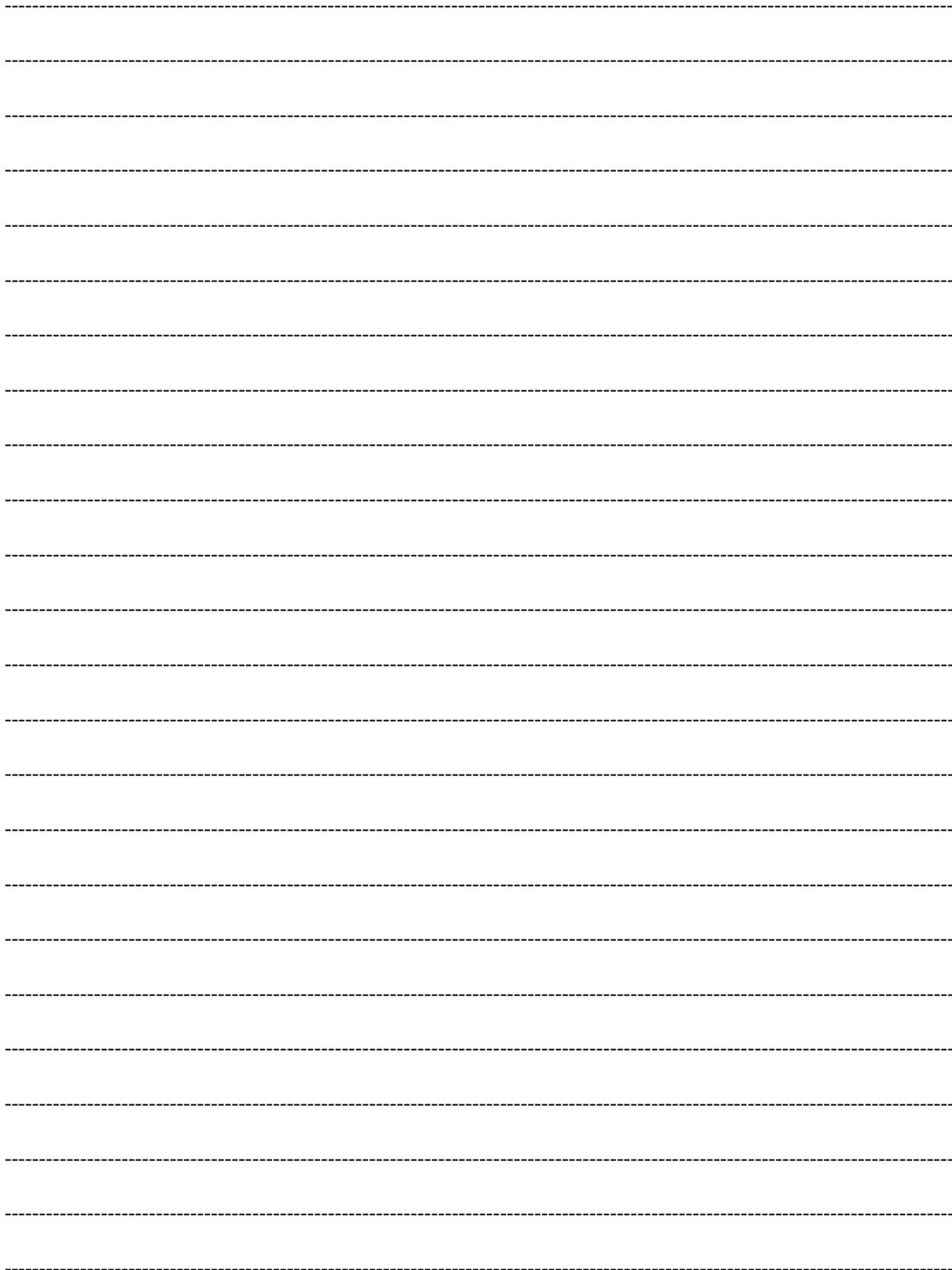
कक्षा: 6 'अ'

रोल नंबर: 18

हस्ताक्षर

अभ्यास प्रश्न :

प्रश्न: नीचे दिए गए विषय पर एक आवेदन पत्र लिखिए –
“बीमार होने के कारण एक सप्ताह का अवकाश माँगते हुए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।”





CHHATTISGARH | MADHYA PRADESH | JHARKHAND | BIHAR



ई-7/22 एस.बी.आई., अरेरा कॉलोनी,
भोपाल 462016 (म.प्र.), भारत
टेलीफोन: 0755-4851056
ईमेल: aisectpublications@aisect.org

